2 राजा

अहज्याह के लिये सन्देश

1 अहाब के मरने के बाद मोआब इस्राएल के शासन
से स्वतन्त्र हो गया। 2एक दिन अहज्याह शोमरोन में
अपने घर की छत पर था। अहज्याह अपने घर की छत
के लकड़ी के छज्जे से गिर गया। वह बुरी तरह घायल
हो गया। अहज्याह ने सन्देशवाहकों को बुलाया और
उनसे कहा, "एक्रोन के देवता बालजबूब के याजकों के
पास जाओ। उनसे पूछो कि क्या मैं अपनी चोटों से
स्वस्थ हो सकूँगा।"

3किन्तु यहोवा के दूत ने तिशबी एलिय्याह से कहा,
"राजा अहज्याह ने शोमरोन से कुछ सन्देशवाहक भेजे
हैं। जाओ और इन लोगों से मिलो। उनसे यह कहो,
'इस्राएल में परमेश्वर है! तो भी तुम लोग एक्रोन के
देवता बालजबूब से प्रश्न करने क्यों जा रहे हो? 4राजा
अहज्याह से ये बातें कहो: तुमने बालजबूब से प्रश्न
करने के लिये सन्देशवाहक भेजे। क्योंकि तुमने यह
किया, इस कारण यहोवा कहता है: तुम अपने बिस्तर
से उठ नहीं पाओगे। तुम मरोगे!'" तब एलिय्याह चल
पड़ा और उसने अहज्याह के सेवकों से यही शब्द
कहे।

5सन्देशवाहक अहज्याह के पास लौट आए।
अहज्याह ने सन्देशवाहकों से पूछा, "तुम लोग इतने
शीघ्र क्योंलौटे?"

6सन्देशवाहकों ने अहज्याह से कहा, "एक व्यक्ति
हमसे मिलने आया। उसने हम लोगों से उस राजा के
पास वापस जाने को कहा जिसने हमें भेजा था और
उससे यहोवा ने जो कहा, वह कहने को कहा, 'इस्राएल
में एक परमेश्वर है! तो तुमने एक्रोन के देवता बालजबूब
से प्रश्न करने के लिये सन्देशवाहकों को क्यों भेजा।
क्योंकि तुमने यह किया है इस कारण तुम अपने बिस्तर
से नहीं उठोगे। तुम मरोगे!'"

7अहज्याह ने सन्देशवाहकों से पूछा, "जो व्यक्ति तुमसे
मिला और जिसने तुमसे ऐसा कहा वह कैसा दिखाई
पड़ता था?"

8सन्देशवाहकों ने अहज्याह से कहा, "वह व्यक्ति एक
रोयेंदार अंगरखा पहने था और अपनी कमर में एक
चमड़े की पेटी बांधे था।"

तब अहज्याह ने कहा, "यह तिशबी एलिय्याह है!"

अहज्याह द्वारा भेजे गए सेनापतियों को आग नष्ट करती है

9अहज्याह ने एक सेनापति और पचास पुरुषों को
एलिय्याह के पास भेजा। सेनापति एलिय्याह के पास
गया। उस समय एलिय्याह एक पहाड़ी की चोटी पर बैठा
था। सेनापति ने एलिय्याह से कहा, "परमेश्वर के जन
राजा का आदेश है, 'नीचे आओ।'"

10एलिय्याह ने पचास सैनिकों के सेनापति को उत्तर
दिया, "यदि मैं परमेश्वर का जन हूँ तो स्वर्ग से आग
गिर पड़े और तुमको एवं पचास सैनिकों को नष्ट कर
दे!"

अत: स्वर्ग से आग गिर पड़ी और उसने सेनापति एवं
उसके पचास व्यक्तियों को नष्ट कर दिया।

11अहज्याह ने अन्य सेनापति और पचास सैनिकों को
भेजा। सेनापति ने एलिय्याह से कहा, "परमेश्वर के
जन, राजा का आदेश है 'शीघ्र नीचे आओ!'"

12एलिय्याह ने सेनापति और उसके पचास सैनिकों
से कहा, "यदि मैं परमेश्वर का जन हूँ तो स्वर्ग से
आग गिर पड़े और वह तुमको और तुम्हारे पचास
सैनिकों को नष्ट कर दे!" परमेश्वर की आग स्वर्ग से
गिर पड़ी और सेनापति एवं पचास सैनिकों को नष्ट
कर दिया।

13अहज्याह ने तीसरे सेनापति को पचास सैनिकों के
साथ भेजा। पचास सैनिकों का सेनापति एलिय्याह के
पास आया। सेनापति ने अपने घुटनों के बल झुककर
उसको प्रणाम किया। सेनापति ने उससे यह कहते हुए
प्रार्थना की, "परमेश्वर के जन मैं आपसे प्रार्थना करता
हूँ, कृपया मेरे जीवन और अपने इन पचास सेवकों के
जीवन को अपनी दृष्टि में मूल्यवान मानें! 14स्वर्ग से
आग गिर पड़ी और प्रथम दो सेनापतियों और उनके
पचास सैनिकों को उसने नष्ट कर दिया। किन्तु अब
कृपा करें और हमें जीवित रहने दें!"

15यहोवा के दूत ने एलिय्याह से कहा, "सेनापति के
साथ जाओ। उससे डरो नहीं।"

अत: एलिय्याह सेनापति के साथ राजा अहज्याह को
देखने गया। 16एलिय्याह ने अहज्याह से कहा, "इस्राएल
में परमेश्वर है ही, तो भी तुमने सन्देशवाहकों को
एक्रोन के देवता बालजबूब से प्रश्न करने के लिये क्यों

भेजा? क्योंकि तुमने यह किया है, इस कारण तुम अपने बिस्तर से नहीं उठोगे। तुम मरोगे!"

यहोराम, अहज्याह का स्थान लेता है

17अहज्याह वैसे ही मरा जैसा यहोवा ने एलिय्याह के द्वारा कहा था। अहज्याह का कोई पुत्र नहीं था। अत: अहज्याह के बाद यहोराम नया राजा हुआ। यहोराम ने यहूदा के राजा यहोशापात के पुत्र यहोराम के राज्यकाल के दूसरे वर्ष शासन करना आरम्भ किया।

18अहज्याह ने जो अन्य कार्य किये वे "इस्राएल के राजाओं के इतिहास" की पुस्तक में लिखे गये हैं।

एलिय्याह को अपने पास लेने की यहोवा की योजना

2 यह लगभग वह समय था जब यहोवा ने एक तूफान के द्वारा एलिय्याह को स्वर्ग में बुला लिया। एलिय्याह एलीशा के साथ गिलगाल गया।

2एलिय्याह ने एलीशा से कहा, "कृपया यहीं रुको, क्योंकि यहोवा ने मुझे बेतेल जाने को कहा है।"

किन्तु एलीशा ने कहा, "जैसा कि यहोवा की सत्ता शाश्वत है और आप जीवित हैं, इसको साक्षी कर मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैं आपका साथ नहीं छोड़ूँगा।" इसलिये दोनों लोग बेतेल तक गये।

3बेतेल के नबियों का समूह एलीशा के पास आया और उसने एलीशा से कहा, "क्या तुम जानते हो कि आज तुम्हारे स्वामी को यहोवा तुमसे अलग करके ले जाएगा?"

एलीशा ने कहा, "हाँ, मैं यह जानता हूँ। इस विषय में बातें न करो।"

4एलिय्याह ने एलीशा से कहा, "कृपया यहीं ठहरो क्योंकि यहोवा ने मुझे यरीहो जाने को कहा है।"

किन्तु एलीशा ने कहा, "जैसा कि यहोवा की सत्ता शाश्वत है और आप जीवित हैं, इसको साक्षी करके मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैं आपका साथ नहीं छोड़ूँगा!" इसलिये दोनों लोग यरीहो गए।

5यरीहो के नबियों का समूह एलीशा के पास आया और उन्होंने उससे कहा, "क्या तुमको मालूम है कि यहोवा आज तुम्हारे स्वामी को तुमसे दूर ले जाएगा।"

एलीशा ने कहा, "हाँ, मैं इसे जानता हूँ। इस विषय में बातें न करो।"

6एलिय्याह ने एलीशा से कहा, "कृपया यहीं ठहरो क्योंकि यहोवा ने मुझे यरदन नदी तक जाने को कहा है।"

एलीशा ने उत्तर दिया, "जैसा कि यहोवा की सत्ता शाश्वत है और आप जीवित हैं, इसको साक्षी करके प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैं आपका साथ नहीं छोड़ूँगा!" अत: दोनों व्यक्ति चलते चले गए।

7नबियों के समूह में से पचास व्यक्तियों ने उनका अनुसरण किया। एलिय्याह और एलीशा यरदन नदी पर रुक गए। पचास व्यक्ति एलिय्याह और एलीशा से बहुत दूर खड़े रहे। 8एलिय्याह ने अपना अंगरखा उतारा, उसे तह किया और उससे पानी पर चोट की। पानी दायीं और बांयी ओर को फट गया। एलिय्याह और एलीशा ने सूखी भूमि पर चलकर नदी को पार किया।

9जब उन्होंने नदी को पार कर लिया तब एलिय्याह ने एलीशा से कहा, "इससे पहले कि परमेश्वर मुझे तुमसे दूर ले जाए, तुम क्या चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिए करूँ।"

एलीशा ने कहा, "मैं आपके आत्मा का दुगना अपने ऊपर चाहता हूँ।"

10एलिय्याह ने कहा, "तुमने कठिन चीज माँगी है। यदि तुम मुझे उस समय देखोगे जब मुझे ले जाया जाएगा तो वही होगा। किन्तु यदि तुम मुझे नहीं देख पाओगे तो वह नहीं होगा।"

परमेश्वर एलिय्याह को स्वर्ग में ले जाता है

11एलिय्याह और एलीशा एक साथ बातें करते हुए टहल रहे थे। अचानक कुछ घोड़े और एक रथ आया और उन्होंने एलिय्याह को एलीशा से अलग कर दिया। घोड़े और रथ आग के समान थे। तब एलिय्याह एक बवंडर में स्वर्ग को चला गया।

12एलीशा ने इसे देखा और जोर से पुकारा, "मेरे पिता! मेरे पिता! इस्राएल के रथ और उसके अश्वारोही सैनिक! *

एलीशा ने एलिय्याह को फिर कभी नहीं देखा। एलीशा ने अपने वस्त्रों को मुट्ठी में भरा, और अपना शोक प्रकट करने के लिये, उन्हें फाड़ डाला। 13एलिय्याह का अंगरखा भूमि पर गिर पड़ा था अत: एलीशा ने उसे उठा लिया। एलीशा ने पानी पर चोट की और कहा, "एलिय्याह का परमेश्वर यहोवा, कहाँ है?"

14जैसे ही एलीशा ने पानी पर चोट की, पानी दांयी और बांयी ओर को फट गया और एलीशा ने नदी पारकी।

नबी एलिय्याह की माँग करते हैं

15जब यरीहो के नबियों के समूह ने एलीशा को देखा, उन्होंने कहा, "एलिय्याह की आत्मा अब एलीशा पर है।" वे एलीशा से मिलने आए। वे एलीशा के सामने नीचे भूमि तक प्रणाम करने झुके। 16उन्होंने उससे कहा, "देखो, हम अच्छे खासे पचास व्यक्ति हैं। कृपया इनको जाने दो और अपने स्वामी की खोज करने दो। सम्भव है यहोवा की शक्ति ने एलिय्याह को ऊपर ले

इस्राएल के ... सैनिक इसका अर्थ संभवत: "परमेश्वर और उसकी स्वर्गीय सेना (स्वर्गदूत) हैं।"

लिया हो और उसे किसी पर्वत या घाटी में गिरा दिया हो!"

किन्तु एलीशा ने उत्तर दिया, "नहीं, एलिय्याह की खोज के लिये आदमियों को मत भेजो।"

17नबियों के समूह ने एलीशा से इतनी अधिक प्रार्थना की, कि वह उलझन में पड़ गया। तब एलीशा ने कहा, "ठीक है, एलिय्याह की खोज में आदमियों को भेज दो।"

नबियों के समूह ने पचास आदमियों को एलिय्याह की खोज के लिये भेजा। उन्होंने तीन दिन तक खोज की किन्तु वे एलिय्याह को न पा सके। 18अत: वे लोग यरीहो गए जहाँ एलीशा ठहरा था। उन्होंने उससे कहा कि वे एलिय्याह को नहीं पा सके। एलीशा ने उनसे कहा, "मैंने तुम्हें जाने को मना किया था।"

एलीशा पानी को शुद्ध करता है

19नगर के निवासियों ने एलीशा से कहा, "महोदय, आप अनुभव कर सकते हैं कि यह नगर सुन्दर स्थान में हैं। किन्तु यहाँ पानी बुरा है। यही कारण है कि भूमि में फसल की उपज नहीं होती।"

20एलीशा ने कहा, "मेरे पास एक नया कटोरा लाओ और उसमें नमक रखो।"

लोग कटोरे को एलीशा के पास ले आए। 21तब एलीशा उस स्थान पर गया जहाँ पानी भूमि से निकल रहा था। एलीशा ने नमक को पानी में फेंक दिया। उसने कहा, "यहोवा कहता है, 'मैं इस पानी को शुद्ध करता हूँ। अब, मैं इस पानी से किसी को मरने न दूँगा, और न ही भूमि को अच्छी फसल देने से रोकूँगा।'"

22पानी शुद्ध हो गया और पानी अब तक भी शुद्ध है। यह वैसा ही हुआ जैसा एलीशा ने कहा था।

कुछ लड़के एलीशा का मजाक उड़ाते हैं

23उस नगर से एलीशा बेतेल गया। एलीशा नगर की ओर पहाड़ी पर चल रहा था जब कुछ लड़के नगर से नीचे आ रहे थे। वह एलीशा का मजाक उड़ाने लगे और उन्होंने कहा, "हे गन्जे, तू ऊपर चढ़ जा! हे गन्जे तू ऊपर चढ़ जा!"

24एलीशा ने मुड़ कर उन्हें देखा। उसने यहोवा से बिनती की कि उन के साथ बुरा हो। उसी समय जंगल से दो रीछों ने आ कर उन लड़कों पर हमला किया, वहाँ बयालीस लड़के रीछों द्वारा फाड़ दिये गये।

25वहाँ से एलीशा बेतेल होता हुआ कर्म्मेल पर्वत पर गया, उस के बाद वह शोमरोन पहुँचा।

यहोराम इस्राएल का राजा बना

3 अहाब का पुत्र यहोराम इस्राएल में शोमरोन का राजा बना। यहोशापात के अट्ठारहवें वर्ष में यहोराम ने राज्य करना आरम्भ किया। यहोराम बारह वर्ष तक यहूदा का राजा रहा। 2यहोराम ने वह सब किया जो यहोवा की दृष्टि में बुरा है। परन्तु यहोराम अपने माता पिता की तरह न था क्योंकि उस ने उस स्तम्भ को दूर कर दिया जो उसके पिता ने बाल की पूजा के लिये बनवाई थी। 3परन्तु वह नबात के पुत्र यारोबाम के ऐसे पापों को, जैसे उस ने इस्राएल से भी कराये, करता रहा और उन से न फिरा।

मोआब इस्राएल से अलग होता है

4मेशा मोआब का राजा था। उसके पास बहुत बकरियाँ थी। मेशा ने एक लाख मेमनें और एक लाख भेढ़ों का ऊन इस्राएल के राजा को भेंट किया। 5किन्तु जब अहाब मरा तब मोआब इस्राएल के राजा के शासन से स्वतन्त्र हो गया।

6तब राजा यहोराम शोमरोन के बाहर निकला और उसने इस्राएल के सभी पुरुषों को इकट्ठा किया। 7यहोराम ने यहूदा के राजा यहोशापात के पास सन्देशवाहक भेजे। यहोराम ने कहा, "मोआब का राजा मेरे शासन से स्वतन्त्र हो गया है। क्या तुम मोआब के विरुद्ध युद्ध करने मेरे साथ चलोगे?"

यहोशापात ने कहा, "हाँ, मैं तुम्हारे साथ चलूँगा। हम दोनों एक सेना की तरह मिल जायेंगे। मेरे लोग तुम्हारे लोगों जैसे होंगे। मेरे घोड़े तुम्हारे घोड़ों जैसे होंगे।"

एलीशा से तीन राजा सलाह माँगते हैं

8यहोशापात ने यहोराम से पूछा, "हमें किस रास्ते से चलना चाहिए?"

यहोराम ने उत्तर दिया, "हमें एदोम की मरुभूमि से होकर जाना चाहिए।"

9इसलिये इस्राएल का राजा यहूदा और एदोम के राजाओं के साथ गया। वे लगभग सात दिन तक चारों ओर घूमते रहे। सेना व उनके पशुओं के लिये पर्याप्त पानी नहीं था। 10अन्त में इस्राएल के राजा (यहोराम) ने कहा, "ओह, यहोवा ने सत्य ही हम तीनों राजाओं को एक साथ इसलिये बुलाया कि मोआबी हम लोगों को पराजित करें!"

11किन्तु यहोशापात ने कहा, "निश्चय ही यहोवा के नबियों में से एक यहाँ है। हम लोग नबी से पूछे कि यहोवा हमें क्या करने के लिये कहता है।"

इस्राएल के राजा के सेवकों में से एक ने कहा, "शापात का पुत्र एलीशा यहाँ है। एलीशा, एलिय्याह का सेवक* था।"

12यहोशापात ने कहा, "यहोवा की वाणी एलीशा के पास है।"

एलिय्याह का सेवक शाब्दिक, "एलीशा, एलिय्याह का हाथ धुलाता था।"

अत: इस्राएल का राजा (यहोराम), यहोशापात और
एदोम के राजा एलीशा से मिलने गए।
13एलीशा ने इस्राएल के राजा (यहोराम) से कहा,
“तुम मुझ से क्या चाहते हो? अपने पिता और अपनी
माता के नबियों के पास जाओ।”
इस्राएल के राजा ने एलीशा से कहा, “नहीं, हम लोग
तुमसे मिलने आए हैं, क्योंकि यहोवा ने हम तीन राजाओं
को इसलिये एक साथ यहाँ बुलाया है कि मोआबी हम
लोगों को हराए। हम तुम्हारी सहायता चाहते हैं।”
14एलीशा ने कहा, “मैं यहूदा के राजा यहोशापात का
सम्मान करता हूँ और मैं सर्वशक्तिमान यहोवा की सेवा
करता हूँ। उसकी सत्ता निश्चय ही शाश्वत है, मैं यहाँ
केवल राजा यहोशापात के कारण आया हूँ। अत: मै
सत्य कहता हूँ: मैं न तो तुम पर दृष्टि डालता और न
तुम्हारी परवाह करता, यदि यहूदा का राजा यहोशापात
यहाँ न होता।” **15**किन्तु अब एक ऐसे व्यक्ति को मेरे
पास लाओ जो वीणा बजाता हो।”
जब उस व्यक्ति ने वीणा बजाई तो यहोवा की शक्ति
एलीशा पर उतरी। **16**तब एलीशा ने कहा, “यहोवा यह
कहता है: घाटी में गड्ढे खोदो। **17**यहोवा यही कहता है:
तुम हवा का अनुभव नहीं करोगे, तुम वर्षा भी नहीं
देखोगे। किन्तु वह घाटी जल से भर जायेगी। तुम, तुम्हारी
गायें तथा अन्य जानवरों को पानी पीने को मिलेगा।
18यहोवा के लिये यह करना सरल है। वह तुम्हें मोआबियों
को भी पराजित करने देगा। **19**तुम हर एक सुदृढ़ नगर
और हर एक अच्छे नगर पर आक्रमण करोगे। तुम हर
एक अच्छे पेड़ को काट डालोगे। तुम सभी पानी के
सोतों को रोक दोगे। तुम हरे खेत, उन पत्थरों से नष्ट
करोगे जिन्हें तुम उन पर फेंकोगे।”
20सवेरे प्रात:कालीन बलि के समय, एदोम से सड़क
पर होकर पानी बहने लगा और घाटी भर गई।
21मोआब के लोगों ने सुना कि राजा लोग उनके
विरुद्ध लड़ने आए हैं। इसलिये मोआब के लोगों ने
कवच धारण करने के उम्र के सभी पुरुषों को इकट्ठा
किया। उन लोगों ने युद्ध के लिये तैयार होकर सीमा पर
प्रतीक्षा की। **22**मोआब के लोग भी बहुत सवेरे उठे।
उगता हुआ सूरज घाटी में जल पर चमक रहा था और
मोआब के लोगों को वह खून की तरह दिखायी दे रहा
था। **23**मोआब के लोगों ने कहा, “खून को ध्यान से
देखो! राजाओं ने अवश्य ही एक दूसरे के विरुद्ध युद्ध
किया होगा। उन्होंने एक दूसरे को अवश्य नष्ट कर
दिया होगा। हम चलें और उनके शवों से कीमती चीज़ें
ले लें।”
24मोआबी लोग इस्राएली डेरे तक आए। किन्तु इस्राएली
बाहर निकले और उन्होंने मोआबी सेना पर आक्रमण
कर दिया। मोआबी लोग इस्राएलियों के सामने से भाग
खड़े हुए। इस्राएली मोआबियों से युद्ध करने उनके प्रदेश
में घुस आए। **25**इस्राएलियों ने नगरों को पराजित किया।
उन्होंने मोआब के हर एक अच्छे खेत में अपने पत्थर
फेंके।* उन्होंने सभी पानी के सोतों को रोक दिया
और उन्होंने सभी अच्छे पेड़ों को काट डाला। इस्राएली
लगातार कीर्हरेशेत तक लड़ते गए। सैनिकों ने कीर्हरेशेत
का भी घेरा डाला और उस पर भी आक्रमण किया!
26मोआब के राजा ने देखा कि युद्ध उसके लिये
अत्याधिक प्रबल है। इसलिये उसने तलवारधारी सात
सौ पुरुषों को एदोम के राजा का वध करने के लिये
सीधे सेना भेद के लिये भेज दिया। किन्तु वे एदोम के
राजा तक सेना भेद नहीं कर पाए। **27**तब मोआब के
राजा ने अपने ज्येष्ठ पुत्र को लिया जो उसके बाद राजा
होता। नगर के चारों ओर की दीवार पर मोआब के
राजा ने अपने पुत्र की भेंट होमबलि के रूप में दी।
इससे इस्राएल के लोग बहुत घबराये। इसलिये इस्राएल
के लोगों ने मोआब के राजा को छोड़ा और अपने देश
को लौट गए।

एक नबी की विधवा एलीशा से सहायता माँगती है

4 नबियों के समूह में से एक व्यक्ति की पत्नी थी।
यह व्यक्ति मर गया। उसकी पत्नी ने एलीशा के
सामने अपना दुखड़ा रोया, “मेरा पति तुम्हारे सेवक के
समान था। अब मेरा पति मर गया है। तुम जानते हो कि
वह यहोवा का सम्मान करता था। किन्तु उस पर एक
व्यक्ति का कर्ज था और अब वह व्यक्ति मेरे दो लड़कों
को अपना दास बनाने के लिये लेने आ रहा है।”
2एलीशा ने पूछा, “मैं तुम्हारी सहायता कैसे कर सकता
हूँ? मुझे बताओ कि तुम्हारे घर में क्या है?”
उस स्त्री ने कहा, “मेरे घर में कुछ नहीं। मेरे पास
केवल जैतून के तेल का एक घड़ा है।”
3तब एलीशा ने कहा, “जाओ और अपने सब पड़ोसियों
से कटोरे उधार लो। वे खाली होने चाहिये। बहुत से
कटोरे उधार लो। तब अपने घर जाओ और दरवाजे
बन्द कर लो। केवल तुम और तुम्हारे पुत्र घर में रहेंगे।
तब इन सब कटोरों में तेल डालो और उन कटोरों को
भरो और एक अलग स्थान पर रखो।”
5अत: वह स्त्री एलीशा के यहाँ से चली गई, अपने
घर पहुँची और दरवाजे बन्द कर लिए। केवल वह और
उसके पुत्र घर में थे। उसके पुत्र कटोरे उसके पास लाए
और उसने तेल डाला। **6**उसने बहुत से कटोरे भरे।
अन्त में उसने अपने पुत्र से कहा, “मेरे पास दूसरा
कटोरा लाओ।”
किन्तु सभी प्याले भर चुके थे। पुत्रों में से एक ने उस
स्त्री से कहा, “अब कोई कटोरा नहीं रह गया है।” उस
समय घड़े का तेल खत्म हो चुका था।

अपने पत्थर फेंके संभवत: ये वे पत्थर थे जिन्हें युद्ध में सैनिक अपनी गुलेलों से फेकतें थे।

7तब वह स्त्री आई और उसने परमेश्वर के जन
(एलीशा) से यह घटना बताई! एलीशा ने उससे कहा,
"जाओ, तेल को बेच दो और अपना कर्ज लौटा दो। जब
तुम तेल को बेच चुकोगी और अपना कर्ज लौटा चुकोगी
तब तुम्हारा और तुम्हारे पुत्रों का गुजारा बची रकम से
होगा।"

शूनेम में एक स्त्री एलीशा को कमरा देती है

8एक दिन एलीशा शूनेम को गया। शूनेम में एक
महत्वपूर्ण स्त्री रहती थी। इस स्त्री ने एलीशा से कहा कि
वह ठहरे और उसके घर भोजन करे। इसलिये जब भी
एलीशा उस स्थान से होकर जाता था तब भोजन करने
के लिये वहाँ रूकता था।

9उस स्त्री ने अपने पति से कहा, "देखो मैं समझती हूँ
कि एलीशा परमेश्वर का जन है। वह सदा हमारे घर
होकर जाता है। 10कृपया हम लोग एक कमरा एलीशा
के लिये छत पर बनाएं। इस कमरे में हम एक बिछौना
लगा दें। उसमें हम लोग एक मेज, एक कुर्सी और एक
दीपाधार रख दें। तब जब वह हमारे यहाँ आए तो वह
इस कमरे को अपने रहने के लिये रख सकता है।"

11एक दिन एलीशा उस स्त्री के घर आया। वह उस
कमरे में गया और वहाँ आराम किया। 12एलीशा ने
अपने सेवक गेहजी से कहा, "शूनेमिन स्त्री को
बुलाओ।"

सेवक ने शूनेमिन स्त्री को बुलाया और वह उसके
सामने आ खड़ी हुई। 13एलीशा ने अपने सेवक से
कहा–अब इस स्त्री से कहो, "देखो हम लोगों की देखभाल
के लिये तुमने यथासम्भव अच्छा किया है। हम लोग
तुम्हारे लिये क्या करें? क्या तुम चाहती हो कि हम लोग
तुम्हारे लिये राजा या सेना के सेनापति से बात करें?"

उस स्त्री ने उत्तर दिया, "मैं यहाँ बहुत अच्छी तरह
अपने लोगों में रह रही हूँ।"

14एलीशा ने गेहजी से कहा, "हम उसके लिए क्या
कर सकते हैं?"

गेहजी ने कहा, "मैं जानता हूँ कि उसका पुत्र नहीं है
और उसका पति बूढ़ा है।"

15तब एलीशा ने कहा, "उसे बुलाओ।"

अत: गेहजी ने उस स्त्री को बुलाया। वह आई और
उसके दरवाजे के पास खड़ी हो गई। 16एलीशा ने स्त्री से
कहा, "अगले बसन्त में इस समय तुम अपने पुत्र को
गले से लगा रही होगी।"

उस स्त्री ने कहा, "नहीं महोदय! परमेश्वर के जन,
मुझसे झूठ न बोलो।"

शूनेम की स्त्री को पुत्र होता है

17किन्तु वह स्त्री गर्भवती हुई। उसने अगले बसन्त में
एक पुत्र को जन्म दिया, जैसा एलीशा ने कहा था।

18लड़का बड़ा हुआ। एक दिन वह लड़का खेतों में
अपने पिता और फसल काटते हुए पुरुषों को देखने
गया। 19लड़के ने अपने पिता से कहा, "ओह, मेरा सिर!
मेरा सिर फटा जा रहा है!"

पिता ने अपने सेवक से कहा, "इसे इसकी माँ के
पास ले जाओ!"

20सेवक उस लड़के को उसकी माँ के पास ले गया।
लड़का दोपहर तक अपनी माँ की गोद में बैठा। तब वह
मर गया।

माँ एलीशा से मिलने जाती है

21उस स्त्री ने लड़के को परमेश्वर के जन (एलीशा)
के बिछौने पर लिटा दिया। तब उसने दरवाजा बन्द
किया और बाहर चली गई। 22उसने अपने पति को
बुलाया और कहा, "कृपया मेरे पास सेवकों में से एक
तथा गधों में से एक को भेजें। तब मैं परमेश्वर के जन
(एलीशा) से मिलने शीघ्रता से जाऊँगी और लौट आऊँगी।"

23उस स्त्री के पति ने कहा, "तुम आज परमेश्वर के
जन (एलीशा) के पास क्यों जाना चाहती हो? यह नवचन्द्र
या सब्त का दिन नहीं है।"

उसने कहा, "परेशान मत होओ। सब कुछ ठीक
होगा।"

24तब उसने एक गधे पर काठी रखी और अपने
सेवक से कहा, "आओ चलें और शीघ्रता करें। धीरे
तभी चलो जब मैं कहूँ।"

25वह स्त्री परमेश्वर के जन (एलीशा) से मिलने
कर्म्मेल पर्वत पर गई। परमेश्वर के जन (एलीशा) ने
शूनेमिन स्त्री को दूर से आते देखा। एलीशा ने अपने
सेवक गेहजी से कहा, "देखो, वह शूनेमिन स्त्री है!
26कृपया अब दौड़ कर उससे मिलो। उससे पूछो, 'क्या
बुरा घटित हुआ है? क्या तुम कुशल से हो? क्या तुम्हारा
पति कुशल से है? क्या बच्चा ठीक है?'"

गेहजी ने उस शूनेमिन स्त्री से यही पूछा। उसने उत्तर
दिया, "सब कुशल है।"

27किन्तु शूनेमिन स्त्री पर्वत पर चढ़कर परमेश्वर
के जन (एलीशा) के पास पहुँची। वह प्रणाम करने
झुकी और उसने एलीशा के पाँव पकड़ लिए। गेहजी
शूनेमिन स्त्री को दूर खींच लेने के लिए निकट आया।
किन्तु परमेश्वर के जन (एलीशा) ने गेहजी से कहा,
"उसे अकेला छोड़ दो! वह बहुत परेशान है और यहोवा
ने इसके बारे में मुझसे नहीं कहा। यहोवा ने यह खबर
मुझसे छिपाई।"

28तब शूनेमिन स्त्री ने कहा, "महोदय, मैंने आपसे
पुत्र नहीं माँगा था। मैंने आपसे कहा था, 'आप मुझे मूर्ख
न बनाएं।'"

29तब एलीशा ने गेहजी से कहा, "जाने के लिये तैयार
हो जाओ। मेरी टहलने की छड़ी ले लो और जाओ।

किसी से बात करने के लिए न रुको। यदि तुम किसी व्यक्ति से मिलो तो उसे नमस्कार भी न कहो। यदि कोई व्यक्ति नमस्कार करे तो तुम उसका उत्तर भी न दो। मेरी टहलने की छड़ी को बच्चे के चेहरे पर रखो।"

30किन्तु बच्चे की माँ ने कहा, "जैसा कि यहोवा शाश्वत है और आप जीवित हैं मैं इसको साक्षी कर प्रतिज्ञा करती हूँ कि मैं आपके बिना यहाँ से नहीं जाऊँगी।"

अत: एलीशा उठा और शूनेमिन स्त्री के साथ चल पड़ा।

31गेहजी शूनेमिन स्त्री के घर, एलीशा और शूनेमिन से पहले पहुँचा। गेहजी ने टहलने की छड़ी को बच्चे के चेहरे पर रखा। किन्तु बच्चे ने न कोई बात की और न ही कोई ऐसा संकेत दिया जिससे यह लगे कि उसने कुछ सुना है। तब गेहजी एलीशा से मिलने लौटा। गेहजी ने एलीशा से कहा, "बच्चा नहीं जागा!"

शूनेमिन स्त्री का पुत्र पुनःजीवित होता है

32एलीशा घर मे आया और बच्चा अपने बिछौने पर मरा पड़ा था। 33एलीशा कमरे में आया और उसने दरवाजा बन्द कर लिया। अब एलीशा और वह बच्चा कमरे में अकेले थे। तब एलीशा ने यहोवा से प्रार्थना की। 34एलीशा बिछौने पर गया और बच्चे पर लेटा। एलीशा ने अपना मुख बच्चे के मुख पर रखा। एलीशा ने अपनी आँखे बच्चे की आँखों पर रखी। एलीशा ने अपने हाथों को बच्चे के हाथों पर रखा। एलीशा ने अपने को बच्चे के ऊपर फैलाया। तब बच्चे का शरीर गर्म हो गया।

35एलीशा कमरे के बाहर आया और घर में चारों ओर घूमा। तब वह कमरे में लौटा और बच्चे के ऊपर लेट गया। तब बच्चा सात बार छींका और उसने आँखें खोलीं।

36एलीशा ने गेहजी को बुलाया और कहा, "शूनेमिन स्त्री को बुलाओ!"

गेहजी ने शूनेमिन स्त्री को बुलाया और वह एलीशा के पास आई। एलीशा ने कहा, "अपने पुत्र को उठा लो।"

37तब शूनेमिन स्त्री कमरे में गई और एलीशा के चरणों पर झुकी। तब उसने अपने पुत्र को उठाया और वह बाहर गई।

एलीशा और जहरीला शोरवा

38एलीशा फिर गिलगाल आ गया। उस समय देश में भुखमरी का समय था। नबियों का समूह एलीशा के सामने बैठा था। एलीशा ने अपने सेवक से कहा, "बड़े बर्तन को आग पर रखो और नबियों के समूह के लिए कुछ शोरवा बनाओ।

39एक व्यक्ति खेतों में साग सब्जी इकट्ठा करने गया। उसे एक जंगली बेल मिली। उसने कुछ जंगली लौकियाँ इस बेल से तोड़ी और उनसे अपने लबादे की जेब को भर लिया। तब वह आया और उसने जंगली लौकियों को बर्तन में डाल दिया। किन्तु नबियों का समूह नहीं जानता था कि वे कैसी लौकियाँ हैं?

40तब उन्होंने कुछ शोरवा व्यक्तियों को खाने के लिये दिया। किन्तु जब उन्होंने शोरवे को खाना आरम्भ किया, तो उन्होंने एलीशा से चिल्लाकर कहा, "परमेश्वर के जन (नबी)! बर्तन में जहर है!" वे उस बर्तन से कुछ नहीं खा सके क्योंकि भोजन खाना खतरे से रहित नहीं था।

41किन्तु एलीशा ने कहा, "कुछ आटा लाओ।" वे एलीशा के पास आटा ले आए और उसने उसे बर्तन में डाल दिया। तब एलीशा ने कहा, "शोरवे को लोगों के लिये डालो जिससे वे खा सकें।"

तब शोरवे में कोई दोष नहीं था!

एलीशा नबियों के समूह को भोजन कराता है

42एक व्यक्ति बालशालीशा से आया और पहली फसल से परमेश्वर के जन (एलीशा) के लिये रोटी लाया। यह व्यक्ति बीस जौ की रोटियाँ और नया अन्न अपनी बोरी में लाया। तब एलीशा ने कहा, "यह भोजन लोगों को दो, जिसे वे खा सकें।"

43एलीशा के सेवक ने कहा, "आपने क्या कहा? यहाँ तो सौ व्यक्ति हैं। उन सभी व्यक्तियों को यह भोजन मैं कैसे दे सकता हूँ?"

किन्तु एलीशा ने कहा, "लोगों को खाने के लिए भोजन दो। यहोवा कहता है, 'वे भोजन कर लेंगे और भोजन बच भी जायेगा।'"

44तब एलीशा के सेवक ने नबियों के समूह के सामने भोजन परोसा। नबियों के समूह के खाने के लिये भोजन पर्याप्त हुआ और उनके पास भोजन बचा भी रहा। यह वैसा ही हुआ जैसा यहोवा ने कहा था।

नामान की समस्या

5 नामान अराम के राजा की सेना का सेनापति था। नामान अपने राजा के लिए अत्याधिक महत्वपूर्ण था। नामान इसलिये अत्याधिक महत्वपूर्ण था क्योंकि यहोवा ने उसका उपयोग अराम को विजय दिलाने के लिए किया था। नामान एक महान और शक्तिशाली व्यक्ति था, किन्तु वह विकट चर्मरोग से पीड़ित था।

2अरामी सेना ने कई सेना की टुकड़ियों को इस्राएल में लड़ने भेजा। सैनिकों ने बहुत से लोगों को अपना दास बना लिया। एक बार उन्होंने एक छोटी लड़की को इस्राएल देश से लिया। यह छोटी लड़की नामान की पत्नी की सेविका हो गई। 3इस लड़की ने नामान की

पत्नी से कहा, "मैं चाहती हूँ कि मेरे स्वामी (नामान)
उस नबी (एलीशा) से मिलें जो शोमरोन में रहता है। वह
नबी नामान के विकट चर्मरोग को ठीक कर सकता
है।"

4नामान अपने स्वामी (अराम के राजा) के पास
गया। नामान ने अराम के राजा को वह बात बताई जो
इस्राएली लड़की ने कही थी।

5तब अराम के राजा ने कहा, "अभी जाओ और मैं
एक पत्र इस्राएल के राजा के नाम भेजूँगा।"

अत: नामान इस्राएल गया। नामान अपने साथ कुछ
भेंट ले गया। नामान साढ़े सात सौ पौंड चाँदी, छ: हजार
स्वर्ण मुद्राएं, और दस बार बदलने के वस्त्र ले गया।
6नामान इस्राएल के राजा के लिये अराम के राजा का
पत्र भी ले गया। पत्र में यह लिखा था..."यह पत्र यह
जानकारी देने के लिये है कि मैं अपने सेवक नामान
को तुम्हारे यहाँ भेज रहा हूँ। उसके विकट चर्मरोग को
ठीक करो।"

7जब इस्राएल का राजा उस पत्र को पढ़ चुका तो
उसने अपनी चिन्ता और परेशानी को प्रकट करने
के लिये अपने वस्त्र फाड़ डाले। इस्राएल के राजा ने
कहा, "क्या मैं परमेश्वर हूँ? नहीं! जीवन और मृत्यु पर
मेरा कोई अधिकार नहीं। तब अराम के राजा ने मेरे
पास विकट चर्मरोग के रोगी को स्वस्थ करने के लिये
क्यों भेजा? इसे जरा सोचों और तुम देखोगे कि यह
एक चाल है। अराम का राजा युद्ध आरम्भ करना
चाहता है।"

8परमेश्वर के जन (एलीशा) ने सुना कि इस्राएल का
राजा परेशान है और उसने अपने वस्त्र फाड़ डाले हैं।
एलीशा ने अपना सन्देश राजा के पास भेजा: "तुमने
अपने वस्त्र क्यों फाड़े? नामान को मेरे पास आने दो।
तब वह समझेगा कि इस्राएल में कोई नबी भी है।"

9अत: नामान अपने घोड़ों और रथों के साथ एलीशा
के घर आया और द्वार के बाहर खड़ा रहा। 10एलीशा
ने एक सन्देशवाहक को नामान के पास भेजा।
सन्देशवाहक ने कहा, "जाओ, और यरदन नदी में सात
बार नहाओ। तब तुम्हारा चर्मरोग स्वस्थ हो जाएगा और
तुम पवित्र तथा शुद्ध हो जाओगे।"

11नामान क्रोधित हुआ और वहाँ से चल पड़ा। उसने
कहा, "मैंने समझा था कि कम से कम एलीशा बाहर
आएगा, मेरे सामने खड़ा होगा और यहोवा, अपने
परमेश्वर के नाम कुछ कहेगा। मैं समझ रहा था कि
वह मेरे शरीर पर अपना हाथ फेरेगा और कुष्ठ को
ठीक कर देगा। 12दमिश्क की नदियाँ अबाना और
पर्पर इस्राएल के सभी जलाशयों से अच्छी हैं! मैं दमिश्क
की उन नदियों में क्यों नहीं नहाऊँ और पवित्र हो
जाऊँ?" इसलिये नामान वापस चला गया। वह क्रोधित
था।

13किन्तु नामान के सेवक उसके पास गए और उससे
बातें कीं। उन्होंने कहा, "पिता* यदि नबी ने आपसे
कोई महान काम करने को कहा होता तो आप उसे
जरुर करते। अत: आपको उसकी आज्ञा का पालन
करना चाहिये यदि वह कुछ सरल काम करने को भी
कहता है और उसने कहा, 'नहाओ और तुम पवित्र
और शुद्ध हो जाओगे।'"

14इसलिये नामान ने वह काम किया जो परमेश्वर
के जन (एलीशा) ने कहा, नामान नीचे उतरा और
उसने सात बार यरदन नदी में स्नान किया और नामान
पवित्र और शुद्ध हो गया। नामान की त्वचा बच्चे की
त्वचा की तरह कोमल हो गई।

15नामान और उसका सारा समूह परमेश्वर के जन
(एलीशा) के पास आया। वह एलीशा के सामने खड़ा
हुआ और उससे कहा, "देखिये, अब मैं समझता हूँ कि
इस्राएल के अतिरिक्त पृथ्वी पर कहीं परमेश्वर नहीं है!
अब कृपया मेरी भेंट स्वीकार करें!"

16किन्तु एलीशा ने कहा, "मैं यहोवा की सेवा करता
हूँ। यहोवा की सत्ता शाश्वत है, उसकी साक्षी मान कर
मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैं कोई भेंट नहीं लूँगा।"

नामान ने बहुत प्रयत्न किया कि एलीशा भेंट ले
किन्तु एलीशा ने इन्कार कर दिया। 17तब नामान ने
कहा, "यदि आप इस भेंट को स्वीकार नहीं करते तो
कम से कम आप मेरे लिये इतना करें। मुझे इस्राएल
की इतनी पर्याप्त धूलि लेने दें जिससे मेरे दो खच्चरों पर
रखे टोकरे भर जाये। क्यों? क्योंकि मैं फिर कभी
होमबलि या बलि किसी अन्य देवता को नहीं चढ़ाऊँगा।
मैं केवल यहोवा को ही बलि भेंट करूँगा। 18और अब
मैं प्रार्थना करता हूँ कि यहोवा मुझे इस बात के लिये
क्षमा करेगा कि भविष्य में मेरा स्वामी (अराम का
राजा) असत्य देवता की पूजा करने के लिये, रिम्मोन
के मन्दिर में जाएगा। राजा सहारे के लिये मुझ पर
झुकना चाहेगा, अत: मुझे रिम्मोन के मन्दिर में झुकना
पड़ेगा। अब मैं यहोवा से प्रार्थना करता हूँ कि वह मुझे
क्षमा करे जब वैसा हो।"

19तब एलीशा ने नामान से कहा, "शान्तिपूर्वक जाओ।"

अत: नामान ने एलीशा को छोड़ा और कुछ दूर गया।
20किन्तु परमेश्वर के जन एलीशा का सेवक गेहजी
बोला, "देखिये, मेरे स्वामी (एलीशा) ने अरामी नामान
को, उसकी लाई हुई भेंट को स्वीकार किये बिना ही
जाने दिया है। यहोवा शाश्वत है, इसको साक्षी मान कर
मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि नामान के पीछे दौड़ूँगा और
उससे कुछ लाऊँगा!" 21अत: गेहजी नामान की ओर
दौड़ा।

पिता दास प्राय: अपने स्वामियों को पिता कहते थे और स्वामी अपने दासों को 'बच्चे' कहते थे।

नामान ने अपने पीछे किसी को दौड़कर आते देखा। वह गेहजी से मिलने को अपने रथ से उतर पड़ा। नामान ने पूछा, "सब कुशल तो है?"

22गेहजी ने कहा, "हाँ, सब कुशल है। मेरे स्वामी एलीशा ने मुझे भेजा है। उसने कहा, 'देखो, एप्रैम के पहाड़ी प्रदेश के नबियों के समूह से दो युवक नबी मेरे पास आये हैं। कृपया उन्हें पच्हत्तर पौंड चाँदी और दो बार बदलने के वस्त्र दे दो।'"

23नामान ने कहा, "कृपया डेढ़ सौ पौंड ले लो!" नामान ने गेहजी को चाँदी लेने के लिये मनाया। नामान ने डेढ़ सौ पौंड चाँदी को दो बोरियों में रखा और दो बार बदलने के वस्त्र लिये। तब नामान ने इन चीज़ों को अपने सेवकों में से दो को दिया। सेवक उन चीज़ों को गेहजी के लिये लेकर आए। 24जब गेहजी पहाड़ी तक आया तो उसने उन चीज़ों को सेवकों से ले लिया। गेहजी ने सेवकों को लौटा दिया और वे लौट गए। तब गेहजी ने उन चीज़ों को घर में छिपा दिया।

25गेहजी आया और अपने स्वामी एलीशा के सामने खड़ा हुआ। एलीशा ने गेहजी से पूछा, "गेहजी, तुम कहाँ गए थे?"

गेहजी ने कहा, "मैं कहीं भी नहीं गया था।"

26एलीशा ने गेहजी से कहा, "यह सच नहीं है! मेरा हृदय तुम्हारे साथ था जब नामान अपने रथ से तुमसे मिलने को मुड़ा। यह समय पैसा, कपड़े, जैतून, अंगूर, भेड़, गायें या सेवक-सेविकायें लेने का नहीं है। 27 अब तुम्हें और तुम्हारे बच्चों को नामान की बीमारी लग जाएगी। तुम्हें सदैव विकट चर्मरोग रहेगा!"

जब गेहजी एलीशा से विदा हुआ तो गेहजी की त्वचा बर्फ की तरह सफेद हो गई थी। गेहजी को कुष्ठ हो गया था।

एलीशा और लौह फलक

6 नबियों के समूह ने एलीशा से कहा, "हम लोग वहाँ उस स्थान पर रह रहे हैं। किन्तु वह हम लोगों के लिये बहुत छोटा है। 2 हम लोग यरदन नदी को चलें और कुछ लकड़ियाँ काटें। हम में से प्रत्येक एक लट्ठा लेगा और हम लोग अपने लिये रहने का एक स्थान वहाँ बनायें।"

एलीशा ने कहा, "बहुत अच्छा, जाओ और करो।"

उनमें से एक व्यक्ति ने कहा, "कृपया हमारे साथ चलें।"

एलीशा ने कहा, "बहुत अच्छा, मैं तुम्हारे साथ चलूँगा।"

4अत: एलीशा नबियों के समूह के साथ गया। जब वे यरदन नदी पर पहुँचे तो उन्होंने कुछ पेड़ काटने आरम्भ किये। 5किन्तु जब एक व्यक्ति एक पेड़ को काट रहा था तो कुल्हाड़ी का लौह फलक कुल्हाड़ी से निकल गया और पानी में गिर पड़ा। तब वह व्यक्ति चिल्लाया, "हे स्वामी! मैंने वह कुल्हाड़ी उधार ली थी!"

6परमेश्वर के जन (एलीशा) ने कहा, "वह कहाँ गिरी?"

उस व्यक्ति ने एलीशा को वह स्थान दिखाया जहाँ लौह फलक गिरा था। तब एलीशा ने एक डंडी काटी और उस डंडी को पानी में फेंक दिया। उस डंडी ने लौह फलक को तैरा दिया। 7एलीशा ने कहा, "लौह फलक को पकड़ लो।" तब वह व्यक्ति आगे बढ़ा और उसने लौह फलक को ले लिया।

अराम का राजा इस्राएल के राजा को फँसाने का प्रयत्न करता है

8अराम का राजा इस्राएल के विरुद्ध युद्ध कर रहा था। उसने सेना के अधिकारियों के साथ परिषद बैठक बुलाई। उसने आदेश दिया, "इस स्थान पर छिप जाओ और इस्राएलियों पर तब आक्रमण करो जब यहाँ से होकर निकलें।"

9किन्तु परमेश्वर के जन (एलीशा) ने इस्राएल के राजा को एक संदेश भेजा। एलीशा ने कहा, "सावधान रहो! उस स्थान से होकर मत जाओ। वहाँ अरामी सैनिक छिपे हैं!"

10 इस्राएल के राजा ने उस स्थान पर जिसके विषय में परमेश्वर के जन (एलीशा) ने चेतावनी दी थी, अपने व्यक्तियों को संदेश भेजा और इस्राएल के राजा ने बहुत से पुरुषों को बचा लिया।*

11अराम का राजा इससे बहुत घबराया। अराम के राजा ने अपने सैनिक अधिकारियों को बुलाया, और उनसे पूछा, "मुझे बताओ कि इस्राएल के राजा के लिये जासूसी कौन कर रहा है।"

12अराम के राजा के सैनिक अधिकारियों में से एक ने कहा, "मेरे प्रभु और राजा, हम में से कोई भी जासूस नहीं है! एलीशा, इस्राएल का नबी इस्राएल के राजा को अनेक गुप्त सूचनाएं दे सकता है, यहाँ तक कि आप जो अपने बिस्तर में कहेंगे, उसकी भी!"

13अराम के राजा ने कहा, "एलीशा का पता लगाओ और मैं उसे पकड़ने के लिये आदमियों को भेजूँगा।"

सेवकों ने अराम के राजा से कहा, "एलीशा दोतान में है!"

14तब अराम के राजा ने घोड़े, रथ और विशाल सेना को दोतान को भेजा। वे रात को पहुँचे और उन्होंने नगर को घेर लिया। 15एलीशा के सेवक उस सुबह को जल्दी उठे। एक सेवक बाहर गया और उसने एक सेना को घोड़ों और रथों के साथ नगर के चारों ओर देखा।

एलीशा के सेवक ने एलीशा से कहा, "ओह, मेरे स्वामी हम क्या कर सकते हैं?"

बहुत से ... लिया शाब्दिक, "एक या दो नहीं।"

16एलीशा ने कहा, "डरो नहीं! वह सेना जो हमारे
लिये युद्ध करती है, उस सेना से बड़ी है जो अराम के
लिये युद्ध करती है!"

17तब एलीशा ने प्रार्थना की और कहा, "यहोवा, मैं
तुझसे प्रार्थना करता हूँ कि तू मेरे सेवक की आँखें
खोल जिससे वह देख सके।"

यहोवा ने युवक की आँखे खोलीं और सेवक ने देखा
कि पूरा पर्वत अग्नि के घोड़ों और रथों से ढका पड़ा
था। वे सभी एलीशा के चारों ओर थे!

18ये आग के घोड़े और रथ एलीशा के पास आए।
एलीशा ने यहोवा से प्रार्थना की और कहा, "मैं प्रार्थना
करता हूँ कि तू इन लोगों को अन्धा कर दे।"

तब यहोवा ने अरामी सेना को अन्धा कर दिया, जैसे
एलीशा ने प्रार्थना की थी। 19एलीशा ने अरामी सेना से
कहा, "यह उचित मार्ग नहीं है। यह उपयुक्त नगर नहीं
है। मेरे पीछे आओ। मैं उस व्यक्ति के पास तुम्हें ले
जाऊँगा जिसकी खोज तुम कर रहे हो।" तब एलीशा
अरामी सेना को शोमरोन ले गया।

20जब वे शोमरोन पहुँचे तो एलीशा ने कहा, "यहोवा,
इन लोगों की आँखे खोल दे जिससे ये देख सकें।"

तब यहोवा ने उनकी आँखें खोल दीं और अरामी
सेना ने देखा कि वह शोमरोन नगर में थे। 21इस्राएल के
राजा ने अरामी सेना को देखा। इस्राएल के राजा ने
एलीशा से पूछा, "मेरे पिता, क्या मैं इन्हें मार डालूँ? क्या
मैं इन्हें मार डालूँ?"

22एलीशा ने उत्तर दिया, "नहीं, इन्हें मारो मत। तुम
उन लोगों को नहीं मारते जिन्हें तुम युद्ध में अपनी
तलवार और धनुष–बाण के बल से पकड़ते हो। अरामी
सेना को कुछ रोटी–पानी दो। उन्हें खाने–पीने दो। तब
इन्हें अपने स्वामी के पास लौट जाने दो।"

23इस्राएल के राजा ने अरामी सेना के लिये बहुत सा
भोजन तैयार कराया। अरामी सेना ने खाया–पीया। तब
इस्राएल के राजा ने अरामी सेना को उनके घर वापस
भेज दिया। अरामी सेना अपने स्वामी के पास घर लौट
गई। अरामी लोगों ने इसके बाद इस्राएल पर आक्रमण
करने के लिये फिर कोई सेना नहीं भेजी।

भयंकर भुखमरी शोमरोन को कष्ट देती है

24जब यह सब हो गया तो अराम के राजा बेन्हदद ने
अपनी सारी सेना इकट्ठा की और वह शोमरोन नगर
पर घेरा डालने और उस पर आक्रमण करने गया।
25सैनिकों ने लोगों को नगर में भोजन सामग्री भी नहीं
लाने दी। इसलिये शोमरोन में भयंकर भूखमरी का
समय आ गया। यह शोमरोन में इतना भयंकर था कि
एक गधे का सिर चाँदी के अस्सी सिक्कों में बिकने
लगा और कबूतर की एक पिन्ट बीट की कीमत पाँच
चाँदी के सिक्के थे।

26इस्राएल का राजा नगर की प्राचीर पर घूम रहा
था। एक स्त्री ने चिल्लाकर उसे पुकारा। उस स्त्री ने
कहा, "मेरे प्रभु और राजा, कृपया मेरी सहायता करें!"

27इस्राएल के राजा ने कहा, "यदि यहोवा तुम्हारी
सहायता नहीं करता तो मैं कैसे तुमको सहायता दे
सकता हूँ? मेरे पास तुमको देने को कुछ भी नहीं है।
खलिहानों से कोई अन्न नहीं आया, या दाखमधु के
कारखाने से कोई दाखमधु नहीं आई।" 28तब इस्राएल
के राजा ने उस स्त्री से पूछा, "तुम्हारी परेशानी क्या
है?" स्त्री ने जवाब दिया, "इस स्त्री ने मुझसे कहा,
'अपने पुत्र को मुझे दो जिससे हम उसे मार डाले और
उसे आज खा ले। तब हम अपने पुत्र को कल खायेंगे।'
29अत: हम ने अपने पुत्र को पकाया और खाया। तब
दूसरे दिन मैंने इस स्त्री से कहा, 'अपने पुत्र को दो
जिससे हम उसे मार सकें और खा सकें।' किन्तु उसने
अपने पुत्र को छिपा दिया है।"

30जब राजा ने उस स्त्री की बातें सुनीं तो उसने अपने
वस्त्रों को अपनी परेशानी व्यक्त करने के लिये फाड़
डाला। जब राजा प्राचीर से होकर चला तो लोगों ने देखा
कि वह अपने पहनावे के नीचे मोटे वस्त्र पहने था
जिससे पता चलता था कि वह बहुत दु:खी और परेशान
है। 31राजा ने कहा, "परमेश्वर मुझे दण्डित करे यदि
शापात के पुत्र एलीशा का सिर इस दिन के अन्त तक
भी उसके धड़ पर रह जाये।"

32राजा ने एलीशा के पास एक सन्देशवाहक भेजा।
एलीशा अपने घर में बैठा था और अग्रज (प्रमुख)
उसके साथ बैठे थे। सन्देशवाहक के आने के पहले
एलीशा ने प्रमुखों से कहा, "देखो, वह हत्यारे का पुत्र
(इस्राएल का राजा) लोगों को मेरा सिर काटने को भेज
रहा है। जब सन्देशवाहक आये तो दरवाजा बन्द कर
लेना। दरवाजे को बन्द रखो और उसे घुसने मत दो। मैं
उसके पीछे उसके स्वामी के आने वाले कदमों की
आवाज सुन रहाहूँ!"

33जिस समय एलीशा अग्रजों (प्रमुखों) से बातें कर ही
रहा था, सन्देशवाहक उसके पास आया। सन्देश यह
था: "यह विपत्ति यहोवा की ओर से आई है! मैं यहोवा
की प्रतीक्षा आगे और क्यों करूँ?"

7 एलीशा ने कहा, "यहोवा की ओर से सन्देश सुनो!
यहोवा कहता है: 'लगभग इसी समय कल बहुत सी
भोजन सामग्री हो जाएगी और यह फिर सस्ती भी हो
जाएगी। शोमरोन के फाटक के साथ के बाजार में लोग
एक डलिया* अच्छा आटा या दो डलिया जौ एक शेकेल
में खरीद सकेंगे।'"

2तब उस अधिकारी ने जो राजा का विश्वासपात्र था,
परमेश्वर के जन (एलीशा) से बातें कीं। अधिकारी ने

डलिया शाब्दिक, "पूली।"

कहा, "यदि यहोवा आकाश में खिड़कियाँ भी बना दे तो
भी यह नहीं होगा!"
एलीशा ने कहा, "इसे तुम अपनी आँखों से देखोगे।
किन्तु उस भोजन में से तुम कुछ भी नहीं खाओगे।"

कुष्ठ रोगी, अरामी डेरे को खाली पाते हैं

3नगर के द्वार के पास चार व्यक्ति कुष्ठरोग से
पीड़ित थे। उन्होंने आपस में बातें की, "हम यहाँ मरने
की प्रतीक्षा करते हुए क्यों बैठे हैं? 4शोमरोन में कुछ
भी खाने के लिये नहीं है। यदि हम लोग नगर के भीतर
जाएंगे तो वहाँ हम भी मर जाएंगे। इसलिये हम लोग
अरामी डेरे की ओर चलें। यदि वे हमें जीवित रहने देते
हैं तो हम जीवित रहेंगे। यदि वे हमें मार डालते हैं तो मर
जायेगें। 5इसलिये उस शाम को चारों कुष्ठ रोगी अरामी
डेरे को गए। वे अरामी डेरे की छोर तक पहुँचे। वहाँ
लोग थे ही नहीं। 6यहोवा ने अरामी सेना को, रथों,
घोड़ों और विशाल सेना का उद्घोष सुनाया था। अत:
अरामी सैनिकों ने आपस में बातें कीं, "इस्राएल के राजा
ने हित्ती राजाओं और मिस्रियों को हम लोगों के विरुद्ध
किराये पर बुलाया है!"
7अरामी सैनिक उस सन्ध्या के आरम्भ में ही भाग
गए। वे सब कुछ अपने पीछे छोड़ गए। उन्होंने अपने
डेरे, घोड़े, गधे छोड़े और अपना जीवन बचाने को भाग
खड़े हुए।

कुष्ठ रोगी अरामी डेरे में

8जब ये कुष्ठ रोगी उस स्थान पर आए जहाँ से
अरामी डेरा आरम्भ होता था, वे एक डेरे में गए।
उन्होंने खाया और मदिरा पान किया। तब चारों कुष्ठ
रोगी उस डेरे से चाँदी, सोना और वस्त्र ले गए। उन्होंने
चाँदी, सोना और वस्त्रों को छिपा दिया। तब वे लौटे और
दूसरे डेरे में गए। उस डेरे से भी वे चीजें ले आए। वे
बाहर गए और इन चीज़ों को छिपा दिया। 9तब इन
कुष्ठ रोगियों ने आपस में बातें कीं, "हम लोग बुरा कर
रहे हैं। आज हम लोगों के पास शुभ सूचना है। किन्तु
हम लोग चुप हैं। यदि हम लोग सूरज के निकलने तक
प्रतीक्षा करेंगे तो हम लोगों को दण्ड मिलेगा। अब हम
चलें और उन लोगों को शुभ सूचना दें जो राजा के
महल में रहते हैं।"

कुष्ठ रोगी शुभ सूचना देते हैं

10अत: ये कुष्ठ रोगी नगर के द्वारपाल के पास गए।
कुष्ठ रोगियों ने द्वारपालों से कहा, "हम अरामी डेरे में
गए थे। किन्तु हम लोगों ने किसी व्यक्ति को वहाँ नहीं
पाया। वहाँ कोई भी नहीं था। घोड़े और गधे तब भी बंधे
थे और डेरे वैसे के वैसे लगे थे। किन्तु सभी लोग चले
गए थे।"
11तब नगर के द्वारपाल जोर से चीखे और राजमहल
के व्यक्तियों को यह बात बताई। 12रात का समय था,
किन्तु राजा अपने पलंग से उठा। राजा ने अपने
अधिकारियों से कहा, "मैं तुम लोगों को बताऊँगा कि
अरामी सैनिक हमारे साथ क्या कर रहे हैं। वे जानते हैं
कि हम भूखे हैं। वे खेतों में छिपने के लिये, डेरों को
खाली कर गए हैं। वे यह सोच रहे हैं, 'जब इस्राएली
नगर के बाहर आएंगे, तब हम उन्हें जीवित पकड़ लेंगे
और तब हम नगर में प्रवेश करेंगे।'"
13राजा के अधिकारियों में से एक ने कहा, "कुछ
व्यक्तियों को नगर में अभी तक बचे पाँच घोड़ों को लेने
दें। निश्चय ही ये घोड़े भी शीघ्र ही ठीक वैसे ही मर
जाएंगे, जैसे इस्राएल के वे सभी लोग जो अभी तक बचे
रह गए हैं, मरेंगे। इन व्यक्तियों को यह देखने को भेजा
जाय कि क्या घटित हुआ है।"
14इसलिये लोगों ने घोड़ों के साथ दो रथ लिये। राजा
ने इन लोगों को अरामी सेना के पीछे लगाया। राजा ने
उनसे कहा, "जाओ और पता लगाओ कि क्याघटनाघटी।"
15वे व्यक्ति अरामी सेना के पीछे यरदन नदी तक
गए। पूरी सड़क पर वस्त्र और अस्त्र-शस्त्र फैले हुये
थे। अरामी लोगों ने जल्दी में भागते समय उन चीज़ों को
फेंक दिया था। सन्देशवाहक शोमरोन को लौटे और
राजा को बताया।
16तब लोग अरामी डेरे की ओर टूट पड़े, और वहाँ
से उन्होंने कीमती चीज़ें ले लीं। हर एक के लिये वहाँ
अत्याधिक था। अत: वही हुआ जो यहोवा ने कहा था।
कोई भी व्यक्ति एक डलिया अच्छा आटा या दो डलिया
जौ केवल एक शेकेल में खरीद सकता था।
17राजा ने अपने व्यक्तिगत सहायक अधिकारी को
द्वार की रक्षा के लिये चुना। किन्तु लोग शत्रु के डेरे से
भोजन पाने के लिये दौड़ पड़े। लोगों ने अधिकारी को
धक्का देकर गिरा दिया और उसे रौंदते हुए निकल गए
और वह मर गया। अत: वे सभी बातें वैसी ही ठीक
घटित हुई जैसा परमेश्वर के जन (एलीशा) ने तब कहा
था जब राजा एलीशा के घर आया था। 18एलीशा ने
कहा था, "कोई भी व्यक्ति शोमरोन के नगरद्वार के
बाजार में एक शेकेल में एक डलिया अच्छा आटा या दो
डलिया जौ खरीद सकेगा।"
19किन्तु परमेश्वर के जन को उस अधिकारी ने
उत्तर दिया था, "यदि यहोवा स्वर्ग में खिड़कियाँ भी बना
दे, तो भी वैसा नहीं हो सकेगा" और एलीशा ने उस
अधिकारी से कहा था, "तुम ऐसा अपनी आँखों से
देखोगे। किन्तु तुम उस भोजन का कुछ भी नहीं खा
पाओगे।"
20अधिकारी के साथ ठीक वैसा ही घटित हुआ।
लोगों ने नगरद्वार पर उसे धक्का दे गिरा दिया, उसे रौंद
डाला और वह मर गया।

राजा और शूनेमिन स्त्री

8 एलीशा ने उस स्त्री से बातें की जिसके पुत्र को उसने जीवित किया था। एलीशा ने कहा, "तुम्हें और तुम्हारे परिवार को किसी अन्य देश में चले जाना चाहिये। क्यों? क्योंकि यहोवा ने निश्चय किया है कि यहाँ भुखमरी का समय आएगा। इस देश में यह भूखमरी का समय सात वर्ष का होगा।"

2अत: उस स्त्री ने वही किया जो परमेश्वर के जन ने कहा। वह अपने परिवार के साथ सात वर्ष पलिश्तियों के देश में रहने चली गई। **3**जब सात वर्ष पूरे हो गए तो वह स्त्री पलिश्तियों के देश से लौट आई।

वह स्त्री राजा से बातें करने गई। वह चाहती थी कि वह उसके घर और उसकी भूमि को उसे लौटाने में उसकी सहायता करे।

4राजा परमेश्वर के जन (एलीशा) के सेवक गेहजी से बातें कर रहा था। राजा ने गेहजी से पूछा, "कृपया वे सभी महान कार्य हमें बतायें जिन्हें एलीशा ने किए हैं।"

5गेहजी राजा को एलीशा के बारे में एक मृत व्यक्ति को जीवित करने की बात बता रहा था। उसी समय वह स्त्री राजा के पास गई जिसके पुत्र को एलीशा ने जिलाया था। वह चाहती थी कि वह अपने घर और अपनी भूमि को वापस दिलाने में उससे सहायता माँगे। गेहजी ने कहा, "मेरे प्रभु राजा, यह वही स्त्री है और यह वही पुत्र है जिसे एलीशा ने जिलाया था।"

6राजा ने पूछा कि वह क्या चाहती है। उस स्त्री ने अपनी इच्छा बताई।

तब राजा ने एक अधिकारी को उस स्त्री की सहायता के लिये चुना। राजा ने कहा, "इस स्त्री को वह सब कुछ दो जो इसका है और इसकी भूमि की सारी फसलें जब से इसने देश छोड़ा तब से अब तक की, इसे दो।"

बेन्हदद हजाएल को एलीशा के पास भेजता है

7एलीशा दमिश्क गया। अराम का राजा बेन्हदद बीमार था। किसी व्यक्ति ने बेन्हदद से कहा, "परमेश्वर का जन यहाँ आया है।"

8तब राजा बेन्हदद ने हजाएल से कहा, "भेंट साथ में लो और परमेश्वर के जन से मिलने जाओ। उसको कहो कि वे यहोवा से पूछे कि क्या मैं अपनी बीमारी से स्वस्थ हो सकता हूँ।"

9इसलिये हजाएल एलीशा से मिलने गया। हजाएल अपने साथ भेंट लाया। वह दमिश्क से हर प्रकार की अच्छी चीजें लाया। इन सबको लाने के लिये चालीस ऊँटों की आवश्यकता पड़ी। हजाएल एलीशा के पास गया। हजाएल ने कहा, "तुम्हारे अनुयायी* अराम के राजा बेन्हदद ने मुझे आपके पास भेजा है। वह पूछता है कि क्या मैं अपनी बीमारी से स्वस्थ होऊँगा।"

10तब एलीशा ने हजाएल से कहा, "जाओ और बेन्हदद से कहो, 'तुम जीवित रहोगे।' किन्तु यहोवा ने सचमुच मुझसे यह कहा है, 'वह निश्चय ही मरेगा।'"

एलीशा हजाएल के बारे में भविष्यवाणी करता है

11एलीशा हजाएल को तब तक देखता रहा जब तक हजाएल संकोच का अनुभव नहीं करने लगा। तब परमेश्वर का जन चीख पड़ा।

12हजाएल ने कहा, "महोदय, आप चीख क्यों रहे हैं?"

एलीशा ने उत्तर दिया, "मैं चीख रहा हूँ क्योंकि मैं जानता हूँ कि तुम इस्राएलियों के लिये क्या कुछ बुरा करोगे। तुम उनके दृढ़ नगरों को जलाओगे। तुम उनके युवकों को तलवार के घाट उतारोगे। तुम उनके बच्चों को मार डालोगे। तुम उनकी गर्भवती स्त्रियों के गर्भ को चीर निकालोगे।"

13हजाएल ने कहा, "मैं कोई शक्तिशाली व्यक्ति नहीं हूँ! मैं इन बड़े कामों को नहीं कर सकता!"

एलीशा ने उत्तर दिया, "यहोवा ने मुझे बताया है कि तुम अराम के राजा होगे।"

14तब हजाएल एलीशा के यहाँ से चला गया और अपने राजा के पास गया। बेन्हदद ने हजाएल से पूछा, "एलीशा ने तुमसे क्या कहा?"

हजाएल ने उत्तर दिया, "एलीशा ने मुझसे कहा कि तुम जीवित रहोगे।"

हजाएल बेन्हदद की हत्या करता है

15किन्तु अगले दिन हजाएल ने एक मोटा कपड़ा लिया और इसे पानी से गीला कर लिया। तब उसने मोटे कपड़े को बेन्हदद के मुँह पर डाल कर उसकी साँस रोक दी। बेन्हदद मर गया। अत: हजाएल नया राजा बना।

यहोराम अपना शासन आरम्भ करता है

16यहोशापात का पुत्र यहोराम यहूदा का राजा था। यहोराम ने अहाब के पुत्र योराम के इस्राएल के राज्यकाल के पाँचवें वर्ष में शासन आरम्भ किया। **17**यहोराम बत्तीस वर्ष का था, जब उसने शासन करना आरम्भ किया। उसने यरूशलेम में आठ वर्ष शासन किया। **18**किन्तु यहोराम इस्राएल के राजाओं की तरह रहा और उन कामों को किया जिन्हें यहोवा ने बुरा बताया था। यहोराम अहाब के परिवार के लोगों की तरह रहता था। यहोराम इस तरह रहा क्योंकि उसकी पत्नी अहाब की पुत्री थी। **19**किन्तु यहोवा ने उसे नष्ट नहीं किया क्योंकि उसने अपने सेवक दाऊद से प्रतिज्ञा की थी कि उसके परिवार का कोई न कोई सदैव राजा होगा।

अनुयायी शाब्दिक, "पुत्र।"

20यहोराम के समय में एदोम यहूदा के शासन से स्वतन्त्र हो गया। एदोम के लोगों ने अपने लिये एक राजा चुन लिया।

21तब यहोराम और उसके सभी रथ साईर को गए। एदोमी सेना ने उन्हें घेर लिया। यहोराम और उसके अधिकारियों ने उन पर आक्रमण किया और बच निकले। यहोराम के सभी सैनिक भाग निकले और घर पहुँचे। 22इस प्रकार एदोमी यहूदा के शासन से स्वतन्त्र हो गए और वे आज तक यहूदा के शासन से स्वतन्त्र हैं।

उसी समय लिब्ना भी यहूदा के शासन से स्वतन्त्र हो गया।

23यहोराम ने जो कुछ किया वह सब "यहूदा के राजाओं के इतिहास" की पुस्तक में लिखा है।

24यहोराम मरा और अपने पूर्वजों के साथ दाऊद नगर में दफनाया गया। यहोराम का पुत्र अहज्याह नया राजा हुआ।

अहज्याह अपना शासन आरम्भ करता है

25यहोराम का पुत्र अहज्याह, अहाब के पुत्र इस्राएल के राजा योराम के राज्यकाल के बारहवें वर्ष में यहूदा का राजा हुआ। 26शासन आरम्भ करने के समय अहज्याह बाईस वर्ष का था। उसने यरूशलेम में एक वर्ष शासन किया। उसकी माँ का नाम अतल्याह था। वह इस्राएल के राजा ओम्री की पुत्री थी। 27अहज्याह ने वे काम किये जिन्हें यहोवा ने बुरा बताया था। अहज्याह ने अहाब के परिवार के लोगों की तरह बहुत से बुरे काम किये। अहज्याह उस प्रकार रहता था क्योंकि उसकी पत्नी अहाब के परिवार से थी।

योराम हजाएल के विरुद्ध युद्ध में घायल हो जाता है

28योराम अहाब के परिवार से था। अहज्याह योराम के साथ अराम के राजा हजाएल से गिलाद के रामोत में युद्ध करने गया। अरामियों नें योराम को घायल कर दिया। राजा योराम इस्राएल को वापस इसलिये लौट गया कि उस स्थान पर लगे घावों से वह स्वस्थ हो जाय। योराम यिज्रेल के क्षेत्र में गया। यहूदा के राजा यहोराम का पुत्र अहज्याह योराम को देखने यिज्रेल गया।

एलीशा एक युवा नबी को येहू का अभिषेक करने को कहता है

9 एलीशा नबी ने नबियों के समूह में से एक को बुलाया। एलीशा ने इस व्यक्ति से कहा, "तैयार हो जाओ और अपने हाथ में तेल की इस छोटी बोतल को ले लो। गिलाद के रामोत को जाओ। 2जब तुम वहाँ पहुँचो तो निमशी के पौत्र अर्थात् यहोशापात के पुत्र येहू से मिलो। तब अन्दर जाओ और उसके भाईयों में से उसे उठाओ। उसे किसी भीतरी कमरे में ले जाओ। 3तेल की छोटी बोतल ले जाओ और येहू के सिर पर उस तेल को डालो। यह कहो, 'यहोवा कहता है: मैंने तुम्हारा अभिषेक इस्राएल का नया राजा होने के लिये किया है।' तब दरवाजा खोलो और भाग चलो। वहाँ प्रतीक्षा न करो!"

4अत: यह युवा नबी गिलाद के रामोत गया। 5जब युवक पहुँचा, उसने सेना के सेनापतियों को बैठे देखा। युवक ने कहा, "सेनापति, मैं आपके लिये एक सन्देश लाया हूँ।"

येहू ने कहा, "हम सभी यहाँ है। हम लोगों में से किसके लिये सन्देश है?"

युवक ने कहा, "सेनापति, सन्देश आपके लिये है।"

6येहू उठा और घर में गया। तब युवा नबी ने उस तेल को येहू के सिर पर डाल दिया। युवा नबी ने येहू से कहा, "इस्राएल का परमेश्वर, यहोवा कहता है, 'मैं यहोवा के लोगों, इस्राएलियों पर नया राजा होने के लिये तुम्हारा अभिषेक करता हूँ। 7 तुम्हें अपने राजा अहाब के परिवार को नष्ट कर देना चाहिये। इस प्रकार मैं ईज़ेबेल को, अपने सेवकों, नबियों तथा यहोवा के उन सभी सेवकों की मृत्यु के लिये जिनकी हत्या कर दी गई है, दण्डित करूँगा। 8इस प्रकार अहाब का सारा परिवार मर जाएगा। मै अहाब के परिवार के किसी लड़के को जीवित नहीं रहने दूँगा। इसका कोई महत्व नहीं होगा कि वह लड़का दास है या इस्राएल का स्वतन्त्र व्यक्ति है। 9मैं अहाब के परिवार को, नबात के पुत्र यारोबाम या अहिय्याह के पुत्र बाशा के परिवार जैसा कर दूँगा। 10यिज्रेल के क्षेत्र में ईज़ेबेल को कुत्ते खायेंगे। ईज़ेबेल को दफनाया नहीं जाएगा।'"

तब युवक नबी ने दरवाजा खोला और भाग गया।

सेवक येहू को राजा घोषित करते हैं

11येहू अपने राजा के अधिकारियों के पास लौटा। अधिकारियों में से एक ने येहू से कहा, "क्या सब कुशल तो है? यह पागल आदमी तुम्हारे पास क्यों आया था?"

येहू ने सेवकों को उत्तर दिया, "तुम उस व्यक्ति को और जो पागलपन की बातें वह करता है, जानते हो।"

12अधिकारियों ने कहा, "नहीं! हमें सच्ची बात बताओ। वह क्या कहता है?" येहू ने अधिकारियों को वह बताया जो युवक नबी ने कहा था। येहू ने कहा, "उसने कहा 'यहोवा यह कहता है: मैंने इस्राएल का नया राजा होने के लिये तुम्हारा अभिषेक किया है।'"

13तब हर एक अधिकारी ने शीघ्रता से अपने लबादे उतारे और येहू के सामने पैड़ियों पर उन्हें रखा। तब उन्होंने तुरही बजाई और यह घोषणा की, "येहू राजा है!"

येहू यिज्रैल जाता है

14इसलिये येहू ने, जो निमशी का पौत्र और यहोशापात
का पुत्र था योराम के विरुद्ध योजनायें बनाई।
उस समय योराम और इस्राएली, अराम के राजा
हजाएल से, गिलाद के रामोत की रक्षा का प्रयत्न कर
रहे थे। 15किन्तु राजा योराम को अरामियों द्वारा किये
गये घाव से स्वस्थ होने के लिये इस्राएल आना पड़ा था।
अरामियों ने योराम को तब घायल किया था जब उसने
अराम के राजा हजाएल के विरुद्ध युद्ध किया था।
अत: येहू ने अधिकारियों से कहा, "यदि तुम लोग
स्वीकार करते हो कि मैं नया राजा हूँ तो नगर से
किसी व्यक्ति को यिज्रैल में सूचना देने के लिये बचकर
निकलने न दो।"
16योराम यिज्रैल में आराम कर रहा था। अत: येहू
रथ में सवार हुआ और यिज्रैल गया। यहूदा का राजा
अहज्याह भी योराम को देखने यिज्रैल आया था।
17एक रक्षक यिज्रैल में रक्षक स्तम्भ पर खड़ा
था। उसने येहू के विशाल दल को आते देखा। उसने
कहा, "मैं लोगों के एक विशाल दल को देख रहा
हूँ!"
योराम ने कहा, "किसी को उनसे मिलने घोड़े पर
भेजो। इस व्यक्ति से यह कहने के लिये कहो, "क्या
आप शान्ति की इच्छा से आए हैं?"
18अत: एक व्यक्ति येहू से मिलने के लिये घोड़े पर
सवार होकर गया। घुड़सवार ने कहा, "राजा योराम
पूछते हैं, 'क्या आप शान्ति की इच्छा से आए हैं?'"
येहू ने कहा, "तुम्हें शान्ति से कुछ लेना–देना नहीं।
आओ और मेरे पीछे चलो।"
रक्षक ने योराम से कहा, "उस दल के पास सन्देशवाहक
गया, किन्तु वह लौटकर अब तक नहीं आया।"
19तब योराम ने एक दूसरे व्यक्ति को घोड़े पर भेजा।
वह व्यक्ति येहू के दल के पास आया और उसने कहा,
"राजा योराम कहते हैं, 'शान्ति।'"
येहू ने उत्तर दिया, "तुम्हें शान्ति से कुछ भी लेना–देना
नहीं! आओ और मेरे पीछे चलो।"
20रक्षक ने योराम से कहा, "दूसरा व्यक्ति उस दल
के पास गया, किन्तु वह अभी तक लौटकर नहीं आया।
रथचालक रथ को निमशी के पौत्र येहू की तरह चला
रहा है। वह पागलों जैसा चला रहा है।"
21योराम ने कहा, "मेरे रथ को तैयार करो!"
इसलिये सेवक ने योराम के रथ को तैयार किया।
इस्राएल का राजा योराम तथा यहूदा का राजा अहज्याह
निकल गए। हर एक राजा अपने–अपने रथ से येहू से
मिलने गए। वे येहू से यिज्रैली नाबोत की भूमि के पास
मिले।
22योराम ने येहू को देखा और उससे पूछा, "येहू क्या
तुम शान्ति के इरादे से आए हो?"
येहू ने उत्तर दिया, "जब तक तुम्हारी माँ ईज़ेबेल
वेश्यावृत्ति और जादू टोना करती रहेगी तब तक शान्ति
नहीं हो सकेगी।"
23योराम ने भाग निकलने के लिये अपने घोड़ों की
बाग मोड़ी। योराम ने अहज्याह से कहा, "अहज्याह! यह
एक चाल है।"
24किन्तु येहू ने अपनी पूरी शक्ति से अपने धनुष को
खींचा और योराम की पीठ में* बाण चला दिया। बाण
योराम के हृदय को बेधता हुआ पार हो गया। योराम
अपने रथ में मर गया।
25येहू ने अपने सारथी बिदकर से कहा, "योराम के
शव को उठाओ और यिज्रेली नाबोत के खेत में फेंक
दो। याद करो, जब हम और तुम योराम के पिता अहाब
के साथ चले थे। तब यहोवा ने कहा था कि इसके साथ
ऐसा ही होगा। 26यहोवा ने कहा था, 'कल मैंने नाबोत
और उसके पुत्रों का खून देखा था। अत: मैं अहाब को
इसी खेत में दण्ड दूँगा।' यहोवा ने ऐसा कहा था। अत:
जैसा यहोवा ने आदेश दिया है–योराम के शव को खेत
में फेंक दो!"
27यहूदा के राजा अहज्याह ने यह देखा, अत: वह
भाग निकला। वह बारी के भवन के रास्ते से होकर
भागा। येहू ने उसका पीछा किया। येहू ने कहा, "अहज्याह
को भी उसके रथ में मार डालो।"
अत: येहू के लोगों ने यिबलाम के पास गूर को जाने
वाली सड़क पर अहज्याह पर प्रहार किया। अहज्याह
मगिद्दो तक भागा, किन्तु वहाँ वह मर गया। 28अहज्याह
के सेवक अहज्याह के शव को रथ में यरूशलेम ले
गए। उन्होंने अहज्याह को, उसकी कब्र में, उसके पूर्वजों
के साथ दाऊद नगर में दफनाया।
29अहज्याह, इस्राएल पर योराम के राज्यकाल के
ग्यारहवें वर्ष में यहूदा का राजा बना था।

ईज़ेबेल की भयंकर मृत्यु

30येहू यिज्रैल गया और ईज़ेबेल को यह सूचना मिली।
उसने अपनी सज्जा की और अपने केशों को बाँधा। तब
वह खिड़की के सहारे खड़ी हुई और बाहर को देखने
लगी। 31येहू ने नगर में प्रवेश किया। ईज़ेबेल ने कहा,
"नमस्कार ओ जिम्री! तुमने ठीक उसकी ही तरह
अपने स्वामी को मार डाला!"
32येहू ने ऊपर खिड़की की ओर देखा। उसने कहा,
"मेरी तरफ कौन है? कौन?"
दो या तीन खोजो ने खिड़की से येहू को देखा, येहू ने
उनसे कहा, "ईज़ेबेल को नीचे फेंको!"
तब खोजों ने ईज़ेबेल को नीचे फेंक दिया। ईज़ेबेल
का कुछ रक्त दीवार और घोड़ों पर छिटक गया। घोड़ों
ने ईज़ेबेल के शरीर को कुचल डाला। 34येहू महल में

पीठ में शाब्दिक, "दोनों बांहों के बीच।"

घुसा और उसने खाया और दाखमधु पिया। तब उसने कहा, "अब इस अभिशापित स्त्री के बारे में यह करो। उसे दफना दो क्योंकि वह एक राजा की पुत्री है।"

35कुछ लोग ईज़ेबेल को दफनाने गए। किन्तु वे उसके शव को न पा सके। वे केवल उसकी खोपड़ी, उसके पैर और उसके हाथों की हथेलियाँ पा सके। 36इसलिये वे लोग लौटे और उन्होंने येहू से कहा। तब येहू ने कहा, "यहोवा ने अपने सेवक तिशबी एलिय्याह से यह सन्देश देने को कहा था। एलिय्याह ने कहा था: 'यिज्रैल के क्षेत्र में ईज़ेबेल के शव को कुत्ते खायेंगे। 37ईज़ेबेल का शव यिज्रैल के क्षेत्र में खेत के गोबर की तरह होगा। लोग ईज़ेबेल के शव को पहचान नहीं पाएंगे।'"

येहू शोमरोन के प्रमुखों को लिखता है

10 अहाब के सत्तर पुत्र शोमरोन में थे। येहू ने पत्र लिखे और उन्हें शोमरोन में यिज्रैल के शासकों और प्रमुखों को भेजा। उसने उन लोगों को भी पत्र भेजे जो अहाब के पुत्रों के अभिभावक थे। पत्र में येहू ने लिखा, 2-3"ज्योंही तुम इस पत्र को पाओ तुम अपने स्वामी के पुत्रों में से सर्वाधिक योग्य और उत्तम व्यक्ति को चुनो। तुम्हारे पास रथ और घोड़े हैं और तुम एक दृढ़ नगर में रह रहे हो। तुम्हारे पास अस्त्र –शस्त्र भी हैं। जिस पुत्र को चुनो उसे उसके पिता के सिंहासन पर बिठाओ। तब अपने स्वामी के परिवार के लिये युद्ध करो।"

4किन्तु यिज्रैल के शासक और प्रमुख बहुत भयभीत थे। उन्होंने कहा, "दोनो राजा (योराम और अहज्याह) येहू को रोक नहीं सके। अत: हम भी उसे रोक नहीं सकते!"

5अहाब के महल का प्रबन्धक, नगर प्रशासक, प्रमुख वरिष्ठ–जन और अहाब के बच्चों के अभिभावकों ने येहू के पास एक सन्देश भेजा! "हम आपके सेवक हैं। हम वह सब करेंगे जो आप कहेंगे। हम किसी व्यक्ति को राजा नहीं बनाएंगे। वही करें जो आप ठीक समझते हैं।"

शोमरोन के प्रमुख अहाब के बच्चों को मार डालते हैं

6तब येहू ने एक दूसरा पत्र इन प्रमुखों को लिखा। येहू ने कहा, "यदि तुम मेरा समर्थन करते हो और मेरा आदेश मानते हो तो अहाब के पुत्रों का सिर काट डालो और लगभग इसी समय कल यिज्रैल में मेरे पास उन्हें लेआओ।"

अहाब के सत्तर पुत्र थे। वे नगर के उन प्रमुखों के पास थे जो उनकी सहायता करते थे। 7जब नगर के प्रमुखों ने पत्र प्राप्त किया तब उन्होंने राजा के पुत्रों को लिया और सभी सत्तर पुत्रों को मार डाला। तब प्रमुखों ने राजपुत्रों के सिर टोकरियों में रखे। उन्होंने टोकरियों को यिज्रैल में येहू के पास भेज दिया। 8सन्देशवाहक येहू के पास आए और उससे कहा, "वे राजपुत्रों का सिर लेकर आए हैं।"

तब येहू ने कहा, "नगर–द्वार पर, प्रात:काल तक उन सिरों की दो ढेरें बना कर रखो।"

9सुबह को येहू बाहर निकला और लोगों के सामने खड़ा हुआ। उसने लोगों से कहा, "तुम लोग निरपराध लोग हो। देखो, मैंने अपने स्वामी के विरुद्ध योजनाएं बनाई। मैंने उसे मार डाला। किन्तु अहाब के इन सब पुत्रों को किसने मारा? तुमने उन्हें मारा! 10तुम्हें समझना चाहिये कि यहोवा जो कुछ कहता है वह घटित होगा और यहोवा ने एलिय्याह का उपयोग अहाब के परिवार के लिये इन बातों को कहने के लिये किया था। अब यहोवा ने वह कर दिया जिसके लिये उसने कहा था कि "मैं करूँगा।"

11इस प्रकार येहू ने यिज्रैल में रहने वाले अहाब के पूरे परिवार को मार डाला। येहू ने सभी महत्वपूर्ण व्यक्तियों, जिगरी दोस्तों और याजकों को मार डाला। उसने अहाब के एक भी व्यक्ति को जीवित नहीं छोड़ा।

येहू अहज्याह के सम्बन्धियों को मार डालता है

12येहू यिज्रैल से चला और शोमरोन पहुँचा। रास्ते मे येहू "गड़रियों का डेरा" नामक स्थान पर रुका। जहाँ गड़रिये अपनी भेड़ों का ऊन कतरते थे। 13येहू यहूदा के राजा अहज्याह के सम्बन्धियों से मिला। येहू ने उनसे पूछा, "तुम कौन हो?"

उन्होंने उत्तर दिया, "हम लोग यहूदा के राजा अहज्याह के सम्बन्धी है। हम लोग यहाँ राजा के बच्चों और राजमाता के बच्चों से मिलने आए हैं।"

14तब येहू ने अपने लोगों से कहा, "इन्हें जीवित पकड़ लो।"

येहू के लोगों ने अहज्याह के सम्बन्धियों को जीवित पकड़ लिया। वे बयालीस लोग थे। येहू ने उन्हें बेथ–एकद के पास कुँए पर मार डाला। येहू ने किसी व्यक्ति को जीवित नहीं छोड़ा।

येहू यहोनादाब से मिलता है

15येहू जब उस स्थान से चला तो रेकाब के पुत्र यहोनादाब से मिला। येहोनादाब येहू से मिलने आ रहा था। येहू ने यहोनादाब का स्वागत किया और उससे पूछा, "क्या तुम मेरे उतने ही विश्वसनीय मित्र हो जितना मैं तुम्हारा हूँ।"

यहोनादाब ने उत्तर दिया, "हाँ, मैं तुम्हारा विश्वासपात्र मित्र हूँ।"

येहू ने कहा, "यदि तुम हो तो, तुम अपना हाथ मुझेदो।"

तब येहू बाहर झुका और उसने यहोनादाब को अपने रथ में खींच लिया।

16येहू ने कहा, "मेरे साथ आओ। तुम देखोगे कि यहोवा के लिये मेरी भावनायें कितनी प्रबल हैं।"

इस प्रकार यहोनादाब येहू के रथ में बैठा। 17येहू
शोमरोन में आया और अहाब के उस सारे परिवार को मार डाला जो अभी तक शोमरोन में जीवित था। येहू ने उन सभी को मार डाला। येहू ने वही काम किये जिन्हें यहोवा ने एलिय्याह से कहा था।

येहू बाल के उपासकों को बुलाता है

18तब येहू ने सभी लोगों को एक साथ इकट्ठा किया। येहू ने उनसे कहा, "अहाब ने बाल की सेवा नहीं के बराबर की। किन्तु येहू बाल की बहुत अधिक सेवा करेगा।
19अब बाल के सभी याजकों और नबियों को एक साथ बुलाओ और उन सभी लोगों को एक साथ बुलाओ जो बाल की उपासना करते हैं। किसी व्यक्ति को इस सभा में अनुपस्थित न रहने दो। मैं बाल को बहुत बड़ी बलि चढ़ाने जा रहा हूँ। मैं उस किसी भी व्यक्ति को मार डालूँगा जो इसमें उपस्थित नहीं होगा!"

किन्तु येहू उनके साथ चाल चल रहा था। येहू बाल के पूजकों को नष्ट कर देना चाहता था।
20येहू ने कहा, "बाल के लिये एक धर्मसभा करो" और याजकों ने धर्मसभा की घोषणा कर दी।
21तब येहू ने पूरे इस्राएल देश में सन्देश भेजा। बाल के सभी उपासक आए। कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं था जो घर पर रह गया हो। बाल के उपासक बाल के मन्दिर* में आए। मन्दिर लोगों से भर गया।

22येहू ने लबादे रखने वाले व्यक्ति से कहा, "बाल के सभी उपासकों के लिये लबादे लाओ।" अत: वह व्यक्ति बाल पूजकों के लिये लबादे लाया।

23तब येहू और रेकाब का पुत्र यहोनादाब बाल के मन्दिर के अन्दर गये। येहू ने बाल के उपासकों से कहा, "अपने चारों ओर देख लो और यह निश्चय कर लो कि तुम्हारे साथ कोई यहोवा का सेवक तो नहीं है। यह निश्चय कर लो कि केवल बालपूजक लोग ही हैं।"
24बाल-पूजक बाल के मन्दिर में बलि और होमबलि चढ़ाने गए।

किन्तु बाहर येहू ने अस्सी व्यक्तियों को प्रतीक्षा में तैयार रखा था। येहू ने कहा, "किसी व्यक्ति को बचकर निकलने न दो। यदि कोई व्यक्ति किसी व्यक्ति को बच निकलने देगा तो उसका भुगतान उसे अपने जीवन से करना होगा।"

25येहू ने ज्योंही बलि और होमबलि चढ़ाना पूरा किया त्योंही उसने रक्षकों और सेनापतियों से कहा, "अन्दर जाओ और बाल-पूजकों को मार डालो! पूजागृह से किसी जीवित व्यक्ति को बाहर न आने दो!"

अत: सेनापतियों ने पतली तलवारों का उपयोग किया और बाल पूजकों को मार डाला। रक्षकों और सेनापतियों ने बाल पूजकों के शवों को बाहर फेंक दिया। तब रक्षक और सेनापति बाल के पूजागृह के भीतरी कमरे* में गए। वे बाल के पूजागृह के स्मृति-पाषाणों को बाहर ले आए और पूजागृह को जला दिया।
27तब उन्होंने बाल के स्मृति-पाषाण को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया। उन्होंने बाल के पूजागृह को भी ध्वस्त कर दिया। उन्होंने बाल के पूजागृह को एक शौचालय में बदल दिया। आज भी उसका उपयोग शौचालय के लिये होता है।

28इस प्रकार येहू ने इस्राएल में बाल-पूजा को समाप्त कर दिया।
29किन्तु येहू, नबात के पुत्र यारोबाम के उन पापों से पूरी तरह अपने को दूर न रख सका, जिन्होंने इस्राएल से पाप कराया था। येहू ने दान और बेतेल में सोने के बछड़ों को नष्ट नहीं किया।

इस्राएल पर येहू का शासन

30यहोवा ने येहू से कहा, "तुमने बहुत अच्छा किया है। तुमने वह काम किया है जिसे मैंने अच्छा बताया है। तुमने अहाब के परिवार को उस तरह नष्ट किया है जैसा तुमसे मैं उसको नष्ट कराना चाहता था। इसलिये तुम्हारे वंशज इस्राएल पर चार पीढ़ी तक शासन करेंगे।"
31किन्तु येहू पूरे हृदय से यहोवा के नियमों का पालन करने में सावधान नहीं था। येहू ने यारोबाम के उन पापों को करना बन्द नहीं किया जिन्होंने इस्राएल से पाप कराए थे।

हजाएल इस्राएल को पराजित करता है

32उस समय यहोवा ने इस्राएल के हिस्सों को अलग करना आरम्भ किया। अराम के राजा हजाएल ने इस्राएलियों को इस्राएल की हर एक सीमा पर हराया।
33हजाएल ने यरदन नदी के पूर्व के गिलाद प्रदेश को, गाद, रूबेन और मनश्शे के परिवार समूह के प्रदेशों सहित जीत लिया। हजाएल ने अरोएर से लेकर अर्नोन घाटी के सहारे गिलाद और बाशान तक की सारी भूमि जीत ली।

येहू की मृत्यु

34वे सभी बड़े कार्य, जो येहू ने किये, "इस्राएल के राजाओं के इतिहास" की पुस्तक में लिखे गए हैं।
35येहू मरा और उसे उसके पूर्वजों के साथ दफना दिया गया। लोगों ने येहू को शोमरोन में दफनाया। उसके बाद येहू का पुत्र यहोआहाज इस्राएल का नया राजा हुआ।
36येहू ने शोमरोन में इस्राएल पर अट्ठाईस वर्ष तक शासन किया।

मन्दिर यहाँ इसका अर्थ वह इमारत है जिसमें लोग बाल की पूजा करने जाते थे।

भीतरी कमरा शाब्दिक, "बाल के मन्दिर का नगर।"

अतल्याह यहूदा के सभी राजपुत्रों को नष्ट कर देती है

11 अहज्याह की माँ अतल्याह ने देखा कि उसका
पुत्र मर गया। तब वह उठी और उसने राजा के
पूरे परिवार को मार डाला।
2यहोशेबा राजा योराम की पुत्री और अहज्याह की
बहन थी। योआश राजा के पुत्रों में से एक था। यहोशेबा
ने योआश को तब छिपा लिया जब अन्य बच्चे मारे जा
रहे थे। यहोशेबा ने योआश को छिपा दिया। उसने
योआश और उसकी धायी को अपने सोने के कमरे में
छिपा दिया। इस प्रकार यहोशेबा और धायी ने योआश
को अतल्याह से छिपा लिया। इस प्रकार योआश मारा
नहीं गया।
3तब योआश और यहोशेबा यहोवा के मन्दिर में जा
छिपे। योआश वहाँ छः वर्ष तक छिपा रहा और अतल्याह
ने यहूदा प्रदेश पर शासन किया।
4सातवें वर्ष प्रमुख याजक यहोयादा ने करीतों के
सेनापतियों और रक्षकों* को बुलाया और वे आए।
यहोयादा ने यहोवा के मन्दिर में उन्हें एक साथ बिठाया।
तब यहोयादा ने उनके साथ एक वाचा की। मन्दिर में
यहोयादा ने उन्हें प्रतिज्ञा करने को विवश किया। तब
उसने राजा के पुत्र (योआश) को उन्हें दिखाया।
5तब यहोयादा ने उनको आदेश दिया। उसने कहा,
"तुम्हें यह करना होगा। प्रत्येक सब्त-दिवस के आरम्भ
होने पर तुम लोगों केएक तिहाई को यहाँ आना चाहिये।
तुम लोगों को राजा की रक्षा उसके घर में करनी होगी।
6दूसरे एक तिहाई को सूर-द्वार पर रहना होगा और
बचे एक तिहाई को रक्षकों के पीछे, द्वार पर रहना
होगा। इस प्रकार तुम लोग योआश की रक्षा में दीवार
की तरह रहोगे 7प्रत्येक सब्त-दिवस के अन्त में तुम
लोगों के दो तिहाई यहोवा के मन्दिर की रक्षा करते हुए
राजा योआश की रक्षा करेंगे। 8जब कभी वह कहीं
जाय तुम्हें राजा योआश के साथ ही रहना चाहिये। पूरे
दल को उसे घेरे रखना चाहिये। प्रत्येक रक्षक को
अपने अस्त्र-शस्त्र अपने हाथ में रखना चाहिये और
तुम लोगों को उस किसी भी व्यक्ति को मार डालना
चाहिये जो तुम्हारे अत्याधिक करीब पहुँचे।"
9सेनापतियों ने याजक यहोयादा के दिये गए सभी
आदेशों का पालन किया। हर एक सेनापति ने अपने
सैनिकों को लिया। एक दल को राजा की रक्षा शनिवार
को करनी थी और अन्य दलों को सप्ताह के अन्य दिनों
में राजा की रक्षा करनी थी। वे सभी पुरुष याजक
यहोयादा के पास गए 10और याजक ने सेनापतियों को
भाले और ढाले दीं। ये वे भाले और ढाले थीं जिन्हें
दाऊद ने यहोवा के मन्दिर में रखा था। 11ये रक्षक
अपने हाथों में अपने शस्त्र लिये मन्दिर के दायें कोने से
लेकर बायें कोने तक खड़े थे। वे वेदी और मन्दिर के
चारों ओर और जब राजा मन्दिर में जाता तो उसके
चारों ओर खड़े होते थे। 12ये व्यक्ति योआश को बाहर
ले आए। उन्होंने योआश के सिर पर मुकुट पहनाया
और परमेश्वर तथा राजा के बीच की वाचा को उसे
दिया।* तब उन्होंने उसका अभिषेक किया और उसे
नया राजा बनाया। उन्होंने तालियाँ बजाई और उद्घोष
किया, "राजा दीर्घायु हों!"
13रानी अतल्याह ने रक्षकों और लोगों का यह उद्घोष
सुना। इसलिये वह यहोवा के मन्दिर में लोगों के पास
गई। 14अतल्याह ने उस स्तम्भ के सहारे राजा को देखा
जहाँ राजा प्रायः खड़े होते थे। उसने प्रमुखों और लोगों
को राजा के लिये तुरही बजाते हुये भी देखा। उसने देखा
कि सभी लोग बहुत प्रसन्न थे। उसने तुरही को बजते
हुए सुना और उसने अपने वस्त्र यह प्रकट करने के
लिये फाड़ डाले कि उसे बड़ी घबराहट है। तब अतल्याह
चिल्ला उठी, "षडयन्त्र! षडयन्त्र!"
15याजक यहोयादा ने सैनिकों की व्यवस्था के
अधिकारी सेनापतियों को आदेश दिया। यहोयादा ने
उनसे कहा, "अतल्याह को मन्दिर के क्षेत्र से बाहर ले
जाओ। उसके किसी भी साथ देने वाले को मार डालो।
किन्तु उन्हें यहोवा के मन्दिर में मत मारो।"
16जैसे ही वह महल के 'अश्व-द्वार' से गई सैनिकों
ने उसे पकड़ लिया और मार डाला । सैनिकों ने अतल्याह
को वहीं मार डाला।
17तब यहोयादा ने यहोवा, राजा और लोगों के बीच
एक सन्धि कराई। इस वाचा से यह पता चलता था कि
राजा और लोग यहोवा के अपने ही हैं। यहोयादा ने
राजा और लोगों के बीच भी एक वाचा कराई। इस
वाचा से यह पता चलता था कि राजा लोगों के लिये
कार्य करेगा और इससे यह पता चलता था कि लोग
राजा का आदेश मानेंगे और उसका अनुसरण करेंगे।
18तब सभी लोग असत्य देवता बाल के पूजागृह को
गए। लोगों ने बाल की मूर्ति और उसकी वेदियों को
नष्ट कर दिया। उन्होंने उनके बहुत से टुकड़े कर
डाले। लोगों ने बाल के याजक मत्तन को भी वेदी के
सामने मार डाला।
तब याजक यहोयादा ने कुछ लोगों को यहोवा के
मन्दिर की व्यवस्था के लिये रखा। 19याजकों, विशेष
रक्षकों और सेनापतियों के अनुरक्षण में राजा यहोवा
के मन्दिर से राजमहल तक गया और अन्य सभी लोग
उनके पीछे-पीछे गए। वे राजा के महल के द्वार तक
गए। तब राजा योआश राजसिंहासन पर बैठा। 20सभी

रक्षकों शाब्दिक, "दौड़ लगाने वाले" या "सन्देशवाहक।"

वाचा ... दिया संभवत: परमेश्वर की सेवा करने के लिए यह राजा की प्रतिज्ञा थीं। देखें पद 17 और 1शमू.10:25

लोग प्रसन्न थे। नगर शान्त था। रानी अतल्याह, राजा के महल के पास तलवार के घाट उतार दी गई थी।

21जब योआश राजा हुआ, वह सात वर्ष का था।

योआश अपना शासन आरम्भ करता है

12 योआश ने इस्राएल में येहू के राज्यकाल के सातवें वर्ष में शासन करना आरम्भ किया। योआश ने चालीस वर्ष तक यरूशलेम में शासन किया। योआश की माँ सिब्या बेर्शेबा की थी। 2योआश ने वे कार्य किये जिन्हें यहोवा ने अच्छा कहा था। योआश ने पूरे जीवन यहोवा की आज्ञा का पालन किया। उसने वे कार्य किये जिनकी शिक्षा याजक यहोयादा ने उसे दी थी। 3किन्तु उसने उच्च स्थानों को नष्ट नहीं किया। लोग तब तक भी उन पूजा के स्थानों पर बलि भेंट करते तथा सुगन्धि जलाते थे।

योआश ने मन्दिर की मरम्मत का आदेश दिया

4-5योआश ने याजकों से कहा, "यहोवा के मन्दिर में बहुत धन है। लोगों ने मन्दिर में चीज़ें दी हैं। लोगों ने गणना के समय मन्दिर का कर दिया है और लोगों ने धन इसलिये दिया है कि वे स्वत: ही देना चाहते थे। याजकों, आप लोग उस धन को ले लें और यहोवा के मन्दिर की मरम्मत करवा दें। हर एक याजक उस धन का इसमें उपयोग करे जो उसे उन लोगों से मिलता है जिनकी वे सेवा करते हैं। उसे उस धन का उपयोग यहोवा के मन्दिर की टूट-फूट की मरम्मत में करना चाहिये।"

6किन्तु याजकों ने मरम्मत नहीं की। योआश के राज्यकाल के तेईसवें वर्ष में भी याजकों ने तब तक मन्दिर की मरम्मत नहीं की थी। 7इसलिये योआश ने याजक यहोयादा और अन्य याजकों को बुलाया। योआश ने यहोयादा और अन्य याजकों से पूछा, "आपने मन्दिर की मरम्मत क्यों नहीं की? आप उन लोगों से धन लेना बन्द करें जिनकी आप सेवा करते हैं। उस धन को उपयोग में लाना बन्द करें। उस धन का उपयोग मन्दिर की मरम्मत में होना चाहिये।"

8याजकों ने लोगों से धन न लेना स्वीकार किया। किन्तु उन्होंने मन्दिर की मरम्मत न करने का भी निश्चय किया। 9इसलिये याजक यहोयादा ने एक सन्दूक लिया और उसके ऊपरी भाग में एक छेद कर दिया। तब यहोयादा ने सन्दूक को वेदी के दक्षिण की ओर रख दिया। यह सन्दूक उस दरवाजे के पास था जिससे लोग यहोवा के मन्दिर में आते थे। कुछ याजक मन्दिर के द्वार-पथ की रक्षा करते थे। वे याजक उस धन को, जिसे लोग यहोवा को देते थे, ले लेते थे और उस सन्दूक में डाल देते थे।

10जब लोग मन्दिर को जाते थे तब वे उस सन्दूक में सिक्केडालते थे। जब भी राजा का सचिव और महायाजक यह जानते कि सन्दूक में बहुत धन है तो वे आते और सन्दूक से धन को निकाल लेते। वे धन को थैलों में रखते और उसे गिन लेते थे। 11तब वे उन मजदूरों का भुगतान करते जो यहोवा के मन्दिर में काम करते थे। वे यहोवा के मन्दिर में काम करने वाले बढ़ईयों और अन्य कारीगरों का भुगतान करते थे। 12वे धन का उपयोग पत्थर के कामगारों और पत्थर तराशों का भुगतान करने में करते थे और वे उस धन का उपयोग लकड़ी, कटे पत्थर, और यहोवा के मन्दिर की मरम्मत के लिये अन्य चीजों को खरीदने में करते थे।

13-14लोगों ने यहोवा के मन्दिर के लिये धन दिया। किन्तु याजक उस धन का उपयोग चाँदी के बर्तन, बत्ती-झाड़नी, चिलमची, तुरही या कोई भी सोने-चाँदी के तश्तरियों को बनाने में नहीं कर सके। वह धन मजदूरों का भुगतान करने में लगा और उन मजदूरों ने यहोवा के मन्दिर की मरम्मत की। 15किसी ने सारे धन का हिसाब नहीं किया या किसी कार्यकर्ता को यह बताने के लिये विवश नहीं किया गया कि धन क्या हुआ? क्यों? क्योंकि उन कार्यकर्ताओं पर विश्वास किया जा सकता था।

16लोगों ने उस समय धन दिया जब उन्होंने दोषबलि या पापबलि चढ़ाई। किन्तु उस धन का उपयोग मजदूर के भुगतान के लिये नहीं किया गया। वह धन याजकों का था।

योआश हजाएल से यरूशलेम की रक्षा करता है

17हजाएल अराम का राजा था। हजाएल गत नगर के विरुद्ध युद्ध करने गया। हजाएल ने गत को हराया। तब उसने यरूशलेम के विरुद्ध युद्ध करने जाने की योजना बनाई।

18यहोशापात, यहोराम और अहज्याह यहूदा के राजा रह चुके थे। वे योआश के पूर्वज थे। उन्होंने यहोवा को बहुत सी चीज़ें भेंट की थीं। वे चीज़ें मन्दिर में रखी थी। योआश ने भी बहुत सी चीज़ें यहोवा को भेंट की थी। योआश ने उन सभी विशेष चीज़ों और मन्दिर और अपने महल में रखे हुये सारे सोने को लिया। तब योआश ने उन सभी कीमती चीज़ों को अराम के राजा हजाएल के पास भेजा। इसी से हजाएल ने अपनी सेना को यरूशलेम से हटा लिया।

योआश की मृत्यु

19योआश ने जो बड़े कार्य किये वे सभी "यहूदा के राजाओं के इतिहास" की पुस्तक में लिखे गए है।

20योआश के अधिकारियों ने उसके विरुद्ध योजना बनाई। उन्होंने योआश को सिल्ला तक जाने वाली

सड़क पर स्थित मिल्लो के घर पर मार डाला। 21शिमात का पुत्र योजाकार और शोमेर का पुत्र यहोजाबाद योआश के अधिकारी थे। उन व्यक्तियों ने योआश को मार डाला। लोगों ने दाऊद नगर में योआश को उसके पूर्वजों के साथ दफनाया। योआश का पुत्र अमस्याह उसके बाद नया राजा बना।

यहोआहाज अपना शासन आरम्भ करता है

13 येहू का पुत्र यहोआहाज शोमरोन में इस्राएल का राजा बना। यह अहज्याह के पुत्र योआश के यहूदा में राज्यकाल के तेईसवें वर्ष में हुआ। यहोआहाज ने सत्रह वर्ष तक राज्य किया।

2यहोआहाज ने वे कार्य किये जिन्हें यहोवा ने बुरा बताया था। यहोआहाज ने नबात के पुत्र यारोबाम के पापों का अनुसरण किया जिसने इस्राएल से पाप कराया। यहोआहाज ने उन कामों को करना बन्द नहीं किया। 3तब यहोवा इस्राएल पर बहुत क्रोधित हुआ। यहोवा ने इस्राएल को अराम के राजा हजाएल और हजाएल के पुत्र बेन्हदद के अधीन कर दिया।

यहोवा ने इस्राएल के लोगों पर कृपा की

4तब यहोआहाज ने यहोवा से सहायता के लिये प्रार्थना की और यहोवा ने उसकी प्रार्थना सुनी। यहोवा ने इस्राएल के लोगों के कष्टों और अराम के राजा के उत्पीड़न को देखा था। 5इसलिये यहोवा ने एक व्यक्ति को इस्राएल की रक्षा के लिये भेजा। इस्राएली अरामियों से स्वतन्त्र हो गए। अत: इस्राएली, पहले की तरह अपने घर लौट गए।

6किन्तु इस्राएलियों ने फिर भी, उस यारोबाम के परिवार के पापों को करना बन्द नहीं किया। यारोबाम ने इस्राएल से पाप करवाया, और इस्राएली निरन्तर पाप कर्म करते रहे। उन्होंने अशेरा के स्तम्भों को भी शोमरोन में रखा। 7अराम के राजा ने यहोआहाज की सेना को पराजित किया। अराम के राजा ने सेना के अधिकांश लोगों को नष्ट कर दिया। उसने केवल पचास घुड़सवार, दस रथ, और दस हजार पैदल सैनिक छोड़े। यहोआहाज के सैनिक दायं चलाते समय हवा से उड़ाये गए भूसे की तरह थे।

8सभी बड़े कार्य जो यहोआहज ने किये "इस्राएल के राजाओं के इतिहास" की पुस्तक में लिखे हैं। 9यहोआहाज़ मरा और अपने पूर्वजों के साथ दफनाया गया। लोगों ने यहोआहाज को शोमरोन में दफनाया। यहोआहाज का पुत्र यहोआश उसके बाद नया राजा हुआ।

इस्राएल पर यहोआश का शासन

10यहोआहाज का पुत्र यहोआश शोमरोन में इस्राएल का राजा हुआ। यह योआश के यहूदा में राज्यकाल के सैंतीसवें वर्ष में हुआ। यहोआश ने इस्राएल पर सोलह वर्ष तक राज्य किया। 11इस्राएल के राजा यहोआश ने वे कार्य किये जिन्हें यहोवा ने बुरा बताया था। उसने नबात के पुत्र यारोबाम के पापों को बन्द नहीं किया जिसने इस्राएल से पाप कराये। यहोआश उन पापों को करता रहा। 12सभी बड़े कार्य जो यहोआश ने किये और यहूदा के राजा अहज्याह के विरुद्ध उसने जो युद्ध किया वे "इस्राएल के राजाओं के इतिहास" के पुस्तक में लिखे हैं। 13यहोआश मरा और अपने पूर्वजों के साथ दफनाया गया। यारोबाम नया राजा बना और यहोआश के राज सिंहासन पर बैठा। यहोआश शोमरोन में इस्राएल के राजाओं के साथ दफनाया गया।

यहोआश एलीशा से भेंट करता है

14एलीशा बीमार पड़ा। बाद में एलीशा बीमारी से मर गया। इस्राएल का राजा यहोआश एलीशा से मिलने गया। यहोआश एलीशा के लिये रोया। यहोआश ने कहा, "मेरे पिता! मेरे पिता! क्या यह इस्राएल के रथों और घोड़ों के लिये समय है?"*

15एलीशा ने यहोआश से कहा, "एक धनुष और कुछ बाण लो।"

यहोआश ने एक धनुष और कुछ बाण लिये। 16तब एलीशा ने इस्राएल के राजा से कहा, "अपना हाथ धनुष पर रखो।" यहोआश ने अपना हाथ धनुष पर रखा। तब एलीशा ने अपने हाथ राजा के हाथ पर रखे। 17एलीशा ने कहा, "पूर्व की खिड़की खोलो।" यहोआश ने खिड़की खोली। तब एलीशा ने कहा, "बाण चलाओ।"

यहोआश ने बाण चला दिया। तब एलीशा ने कहा, "वह यहोवा के विजय का बाण है! यह अराम पर विजय का बाण है। तुम अरामियों को अपेक में हराओगे और तुम उनको नष्ट कर दोगे।"

18एलीशा ने कहा, "बाण लो।" योआश ने बाण लिये। तब एलीशा ने इस्राएल के राजा से कहा, "भूमि पर प्रहार करो।"

योआश ने भूमि पर तीन बार प्रहार किया। तब वह रुक गया। 19परमेश्वर का जन (एलीशा) योआश पर क्रोधित हुआ। एलीशा ने कहा, "तुम्हें पाँच या छ: बार धरती पर प्रहार करना चाहिये था। तब तुम अराम को उसे नष्ट करने तक हराते! किन्तु अब तुम अराम को केवल तीन बार हराओगे!"

एलीशा की कब्र पर एक अद्भुत बात होती है

20एलीशा मरा और लोगों ने उसे दफनाया। एक बार बसन्त में मोआबी सैनिकों का एक दल इस्राएल आया।

रथों ... समय है इसकी तात्पर्य यह है कि यह समय परमेश्वर के आने और तुमको ले जाने का है (मृत्यु)। देखें 1राजा 2:12

वे युद्ध में सामग्री लेने आए। 21कुछ इस्राएली एक मरे व्यक्ति को दफना रहे थे और उन्होंने सैनिकों के उस दल को देखा। इस्राएलियों ने जल्दी में शव को एलीशा की कब्र में फेंका और वे भाग खड़े हुए। ज्योंही उस मरे व्यक्ति ने एलीशा की हड्डियों का स्पर्श किया, मरा व्यक्ति जीवित हो उठा और अपने पैरों पर खड़ा हो गया।

योआश इस्राएल के नगर वापस जीतता है

22यहोआहाज के पूरे शासन काल में अराम के राजा हजाएल ने इस्राएल को परेशान किया। 23किन्तु यहोवा इस्राएलियों पर दयालु था। यहोवा को दया आई और वह इस्राएलियों की ओर हुआ। क्यों? क्योंकि इब्राहीम, इसहाक और याकूब के साथ अपनी वाचा के कारण, यहोवा इस्राएलियों को अभी नष्ट करने के लिये तैयार नहीं था। उसने अभी तक उन्हें अपने से दूर नहीं फेंका था।

24अराम का राजा हजाएल मरा और उसके बाद बेन्हदद नया राजा बना। 25मरने के पहले हजाएल ने योआश के पिता यहोआहाज से युद्ध में कुछ नगर लिये थे। किन्तु अब यहोआहाज ने हजाएल के पुत्र बेन्हदद से वे नगर वापस ले लिये। योआश ने बेन्हदद को तीन बार हराया और इस्राएल के नगरों को वापस लिया।

अमस्याह यहूदा में अपना शासन आरम्भ करता है

14 यहूदा के राजा योआश का पुत्र अमस्याह इस्राएल के राजा यहोआहाज के पुत्र योआश के शासन काल के दूसरे वर्ष में राजा हुआ। 2अमस्याह ने जब शासन करना आरम्भ किया, वह पच्चीस वर्ष का था। अमस्याह ने उनतीस वर्ष तक यरूशलेम में राज्य किया। अमस्याह की माँ यरूशलेम की निवासी यहोअद्दीन थी। 3अमस्याह ने वे कार्य किये जिन्हें यहोवा ने अच्छा बताया था। किन्तु उसने अपने पूर्वज दाऊद की तरह परमेश्वर का अनुसरण पूरी तरह से नहीं किया। अमस्याह ने वे सारे काम किये जो उसके पिता योआश ने किये थे। उसने उच्च स्थानों को नष्ट नहीं किया। लोग उन पूजा के स्थानों पर तब तक बलि देते और सुगन्धि जलाते थे।

5जिस समय अमस्याह का राज्य पर दृढ़ नियन्त्रण था, उसने उन अधिकारियों को मार डाला जिन्होंने उसके पिता को मारा था। 6किन्तु उसने हत्यारों के बच्चों को, "मूसा के व्यवस्था" की किताब में लिखे नियमों के कारण नहीं मारा। यहोवा ने अपना यह आदेश मूसा के व्यवस्था में दिया था: "माता–पिता बच्चों द्वारा कुछ किये जाने के कारण मारे नहीं जा सकते और बच्चे अपने माता–पिता द्वारा कुछ किये जाने के कारण मारे नहीं जा सकते। कोई व्यक्ति केवल अपने ही किये बुरे कार्य के लिये मारा जा सकता है।"

7अमस्याह ने नमक घाटी में दस हजार एदोमियों को मार डाला। युद्ध में अमस्याह ने सेला को जीता और उसका नाम योक्तेल रखा। वह स्थान आज भी योक्तेल कहा जाता है।

अमस्याह योआश के विरुद्ध युद्ध छेड़ना चाहता है

8अमस्याह ने इस्राएल के राजा येहू के पुत्र यहोआहाज के पुत्र योआश के पास सन्देशवाहक भेजा। अमस्याह के सन्देश में कहा गया, "आओ, हम परस्पर युद्ध करें। आमने सामने होकर एक दूसरे का मुकाबला करें।"

9इस्राएल के राजा योआश ने यहूदा के राजा अमस्याह को उत्तर भेजा। योआश ने कहा, "लबानोन की एक कटीली झाड़ी ने लबानोन के देवदारु पेड़ के पास एक सन्देश भेजा। सन्देश यह था, 'अपनी पुत्री, मेरे पुत्र के साथ विवाह के लिये दो।' किन्तु लबानोन का एक जंगली जानवर उधर से निकला और कटीली झाड़ी को कुचल गया। 10यह सत्य है कि तुमने एदोम को हराया है। किन्तु तुम एदोम पर विजय के कारण घमण्डी हो गए हो। अपनी प्रसिद्धि का आनन्द उठाओ तथा घर पर रहो। अपने लिये परेशानियाँ मत मोल लो। यदि तुम ऐसा करोगे तुम गिर जाओगे और तुम्हारे साथ यहूदा भी गिरेगा!"

11किन्तु अमस्याह ने योआश की चेतावनी अनसुनी कर दी। अत: इस्राएल का राजा योआश यहूदा के राजा अमस्याह के विरुद्ध उसके ही नगर बेतशेमेश में लड़ने गया। 12इस्राएल ने यहूदा को पराजित किया। यहूदा का हर एक आदमी घर भाग गया। 13बेतशेमेश में इस्राएल के राजा योआश ने अहज्याह के पौत्र व योआश के पुत्र यहूदा के राजा अमस्याह को बन्दी बना लिया। योआश अमस्याह को यरूशलेम ले गया। योआश ने एप्रैम द्वार से कोने के फाटक तक लगभग छ: सौ फुट यरूशलेम की दीवार को गिरवाया। 14तब योआश ने सारा सोना–चाँदी और जो भी बर्तन यहोवा के मन्दिर और राजमहल के खजाने में थे, उन सब को लूट लिया। योआश ने कुछ लोगों को बन्दी बना लिया। तब वह शोमरोन को वापस लौट गया। 15जो सभी बड़े कार्य योआश ने किये, साथ ही साथ यहूदा के राजा अमस्याह के साथ वह कैसे लड़ा, "इस्राएल के राजाओं के इतिहास" की पुस्तक में लिखे गए हैं। 16योआश मरा और अपने पूर्वजों के साथ दफनाया गया। योआश शोमरोन में इस्राएल के राजाओं के साथ दफनाया गया। योआश का पुत्र यारोबाम उसके बाद नया राजा हुआ।

अमस्याह की मृत्यु

17यहूदा के राजा योआश का पुत्र अमस्याह इस्राएल के राजा यहोआहाज के पुत्र योआश की मृत्यु के बाद पन्द्रह वर्ष तक जीवित रहा। 18अमस्याह ने जो बड़े

काम किये वे “यहूदा के राजाओं के इतिहास” की
पुस्तक में लिखे गए हैं। 19लोगों ने यरूशलेम में अमस्याह
के विरुद्ध एक योजना बनाई। अमस्याह लाकीश को
भाग निकला। किन्तु लोगों ने अमस्याह के विरुद्ध,
लाकीश को अपने आदमी भेजे और उन लोगों ने
लाकीश में अमस्याह को मार डाला। 20लोग घोड़ों पर
अमस्याह के शव को वापस ले आए। अमस्याह दाऊद
नगर में अपने पूर्वजों के साथ यरूशलेम में दफनाया
गया।

अजर्याह यहूदा पर अपना शासन आरम्भ करता है

21तब यहूदा के सभी लोगों ने अजर्याह को नया राजा
बनाया। अजर्याह सोलह वर्ष का था। 22इस प्रकार अमस्याह
मरा और अपने पूर्वजों के साथ दफनाया गया। तब
अजर्याह ने एलत को फिर बनाया और इसे यहूदा को
वापस दे दिया।

यारोबाम द्वितीय इस्राएल पर शासन आरम्भ करता है

23इस्राएल के राजा योआश के पुत्र यारोबाम ने शोमरोन
में यहूदा के राजा योआश के पुत्र अमस्याह के राज्यकाल
के पन्द्रहवें वर्ष में शासन करना आरम्भ किया। यारोबाम
ने इकतालीस वर्ष तक शासन किया। 24यारोबाम ने वे
कार्य किये जिन्हें यहोवा ने बुरा बताया था। यारोबाम ने
उस नबात के पुत्र यारोबाम के पापों को करना बन्द
नहीं किया, जिसने इस्राएल को पाप करने के लिये
विवश किया। 25यारोबाम ने इस्राएल की उस भूमि को
जो सिवाना हमात से अराबा सागर (मृत सागर) तक
जाती थी, वापस लिया। यह वैसा ही हुआ जैसा इस्राएल
के यहोवा ने अपने सेवक गथेपेर के नबी, अमित्तै के
पुत्र योना से कहा था। 26यहोवा ने देखा कि सभी
इस्राएली, चाहे वे स्वतन्त्र हों या दास, बहुत सी परेशानियों
में हैं। कोई व्यक्ति ऐसा नहीं बचा था जो इस्राएल की
सहायता कर सकता। 27यहोवा ने यह नहीं कहा था कि
वह संसार से इस्राएल का नाम उठा लेगा। इसलिये
यहोवा ने योआश के पुत्र यारोबाम का उपयोग इस्राएल
के लोगों की रक्षा के लिये किया।

28यारोबाम ने जो बड़े काम किये वे “इस्राएल के
राजाओं के इतिहास” की पुस्तक में लिखे हैं। उसमें
इस्राएल के लिये दमिश्क और हमात को यारोबाम द्वारा
वापस जीत लेने की कथा सम्मिलित है। (पहले ये नगर
यहूदा के अधिपत्य में थे।) 29यारोबाम मरा और इस्राएल
के राजाओं, अपने पूर्वजों के साथ दफनाया गया। यारोबाम
का पुत्र जकर्याह उसके बाद नया राजा हुआ।

यहूदा पर अजर्याह का शासन

15 यहूदा के राजा अमस्याह का पुत्र अजर्याह इस्राएल
के राजा यारोबाम के राज्यकाल के सत्ताईसवें,
वर्ष में राजा बना। 2शासन करना आरम्भ करने के
समय अजर्याह सोलह वर्ष का था। उसने यरूशलेम में
बावन वर्ष तक शासन किया। अजर्याह की माँ यरूशलेम
की यकोल्याह नाम की थी। 3अजर्याह ने ठीक अपने
पिता अमस्याह की तरह वे काम किये जिन्हें यहोवा ने
अच्छा बताया था। अजर्याह ने उन सभी कामों का
अनुसरण किया जिन्हें उसके पिता अमस्याह ने किये
थे। 4किन्तु उसने उच्च स्थानों को नष्ट नहीं किया। इन
पूजा के स्थानों पर लोग अब भी बलि भेंट करते तथा
सुगन्धि जलाते थे।

5यहोवा ने राजा अजर्याह को हानिकारक कुष्ठरोग
का रोगी बना दिया। वह मरने के दिन तक इसी रोग से
पीड़ित रहा। अजर्याह एक अलग महल में रहता था।
राजा का पुत्र योताम राज महल की देखभाल और
जनता का न्याय करता था।

6अजर्याह ने जो बड़े काम किये वे, “यहूदा के राजाओं
के इतिहास” की पुस्तक में लिखे हैं। 7अजर्याह मरा
और अपने पूर्वजों के साथ दाऊद के नगर में दफनाया
गया। अजर्याह का पुत्र योताम उसके बाद नया राजा
हुआ।

इस्राएल पर जकर्याह का अल्पकालीन शासन

8यारोबाम के पुत्र जकर्याह ने इस्राएल में शोमरोन पर
छः महीने तक शासन किया। यह यहूदा के राजा अजर्याह
के राज्यकाल के अड़तीसवें वर्ष में हुआ। 9जकर्याह ने
वे कार्य किये जिन्हें यहोवा ने बुरा कहा था। उसने वे ही
काम किये जो उसके पूर्वजों ने किये थे। उसने नबात
के पुत्र यारोबाम के पापों को करना बन्द नहीं किया
जिसने इस्राएल को पाप करने के लिये विवश किया।

10याबेश के पुत्र शल्लूम ने जकर्याह के विरुद्ध षड़यन्त्र
रचा। शल्लूम ने जकर्याह को इब्लैम में मार डाला।
उसके बाद शल्लूम नया राजा बना। 11जकर्याह ने जो
अन्य कार्य किये वे “इस्राएल के राजाओं के इतिहास”
की पुस्तक में लिखे हैं। 12इस प्रकार यहोवा का कथन
सत्य सिद्ध हुआ। यहोवा ने येहू से कहा था कि उसके
वंशजों की चार पीढ़ियाँ इस्राएल का राजा बनेंगी।

शल्लूम का इस्राएल पर अल्पकालीन शासन

13याबेश का पुत्र शल्लूम यहूदा के राजा उज्जिय्याह
के राज्यकाल के उनतालीसवें वर्ष में इस्राएल का राजा
बना। शल्लूम ने शोमरोन में एक महीने तक शासन
किया। 14गादी का मनहेम तिर्सा से शोमरोन आ पहुँचा।
मनहेम ने याबेश के पुत्र शल्लूम को मार डाला। तब
उसके बाद मनहेम नया राजा हुआ।

15शल्लूम ने जकर्याह के विरुद्ध षड़यन्त्र करने सहित
जो कार्य किये, वे सभी “इस्राएल के राजाओं के इतिहास”
की पुस्तक में लिखे गए हैं।

इस्राएल पर मनहेम का शासन

16शल्लूम के मरने के बाद मनहेम ने तिप्सह और
तिर्सा तक फैले हुये चारों ओर के क्षेत्रों को हरा दिया।
लोगों ने उसके लिये नगर द्वार को खोलना मना कर
दिया। इसलिये मनहेम ने उनको पराजित किया और
नगर की सभी गर्भवतियों के गर्भ को चीर गिराया।

17गादी का पुत्र मनहेम यहूदा के राजा जकर्याह के
राज्यकाल के उनतालीसवें वर्ष में इस्राएल का राजा
हुआ। मनहेम ने शोमरोन में दस वर्ष शासन किया।
18मनहेम ने वे काम किये जिन्हें यहोवा ने बुरा बताया
था। मनहेम ने नबात के पुत्र यारोबाम के पापों को
करना बन्द नहीं किया, जिसने इस्राएल को पाप करने
के लिये विवशकिया।

19अश्शूर का राजा पूल इस्राएल के विरुद्ध युद्ध करने
आया। मनहेम ने पूल को पचहत्तर हजार पौंड चाँदी दी।
उसने यह इसलिये किया कि पूल मनहेम को बल प्रदान
करेगा और जिससे राज्य पर उसका अधिकार सुदृढ़ हो
जाये। 20मनहेम ने सभी धनी और शक्तिशाली लोगों से
करों का भुगतान करवा कर धन एकत्रित किया।
मनहेम ने हर व्यक्ति पर पचास शेकेल कर लगाया।
तब मनहेम ने अश्शूर के राजा को धन दिया। अत:
अश्शूर का राजा चला गया और इस्राएल में नहीं ठहरा।

21मनहेम ने जो बड़े कार्य किये वे “इस्राएल के राजाओं
के इतिहास” की पुस्तक में लिखे हैं। 22मनहेम मरा
और अपने पूर्वजों के साथ दफनाया गया। मनहेम का
पुत्र पकह्याह उसके बाद नया राजा हुआ।

इस्राएल पर पकह्याह का शासन

23मनहेम का पुत्र पकह्याह यहूदा के राजा अजर्याह
के राज्यकाल के पचासवें वर्ष में शोमरोन में इस्राएल
का राजा हुआ। पकह्याह ने दो वर्ष तक राज्य किया।
24पकह्याह ने वे काम किये जिन्हें यहोवा ने बुरा कहा
था। पकह्याह ने नबात के पुत्र यारोबाम के पापों का
करना बन्द नहीं किया जिसने इस्राएल को पाप करने
के लिये विवश किया था।

25पकह्याह की सेना का सेनापति रमल्याह का पुत्र
पेकह था। पेकह ने पकह्याह को मार डाला। उसने उसे
शोमरोन में राजा के महल में मारा। पेकह ने जब
पकह्याह को मारा, उसके साथ गिलाद के पचास पुरुष
थे। तब पेकह उसके बाद नया राजा हुआ।

26 पकह्याह ने जो बड़े काम किये वे “इस्राएल के
राजाओं के इतिहास” की पुस्तक में लिखे हैं।

इस्राएल पर पेकह का शासन

27रमल्याह के पुत्र पेकह ने यहूदा के राजा अजर्याह
के राज्यकाल के बावनवें वर्ष में, इस्राएल पर शासन
करना आरम्भ किया। पेकह ने बीस वर्ष तक शासन
किया। 28पेकह ने वे काम किये जिन्हें यहोवा ने बुरा
कहा था। पेकह ने इस्राएल को पाप करने के लिये
विवश करने वाले नबात के पुत्र यारोबाम के पाप कर्मों
को करना बन्द नहीं किया।

29अश्शूर का राजा तिग्लत्पिलेसेर इस्राएल के विरुद्ध
लड़ने आया। यह वही समय था जब पेकह इस्राएल का
राजा था। तिग्लत्पिलेसेर ने इय्योन, अबेल्बेत्माका, यानोह,
केदेश, हासोर, गिलाद गालील और नप्ताली के सारे
क्षेत्र पर अधिकार कर लिया। तिग्लत्पिलेसेर इन स्थानों
से लोगों को बन्दी बनाकर अश्शूर ले गया।

30एला का पुत्र होशे ने रमल्याह के पुत्र पेकह के
विरुद्ध षड़यन्त्र किया। होशे ने पेकह को मार डाला।
तब होशे पेकह के बाद नया राजा बना। यह यहूदा के
राजा उजिय्याह के पुत्र योताम के राज्यकाल के बीसवें
वर्ष में हुआ।

31पेकह ने जो सारे बड़े काम किये वे “इस्राएल के
राजाओं के इतिहास” की पुस्तक में लिखें हैं।

यहूदा पर योताम शासन करता है

32उजिय्याह का पुत्र योताम यहूदा का राजा बना। यह
इस्राएल के राजा रमल्याह के पुत्र पेकह के राज्यकाल
के दूसरे वर्ष में हुआ। 33योताम जब राजा बना, वह
पच्चीस वर्ष का था। योताम ने यरूशलेम में सोलह वर्ष
तक शासन किया। योताम की माँ सादोक की पुत्री
यरुशा थी। 34योताम ने वे काम, जिन्हें यहोवा ने ठीक
बताया था, ठीक अपने पिता उजिय्याह की तरह किये।
35किन्तु उसने उच्च स्थानों को नष्ट नहीं किया। लोग
उन पूजा स्थानों पर तब भी बलि चढ़ाते और सुगन्धि
जलाते थे। योताम ने यहोवा के मन्दिर का ऊपरी द्वार
बनवाया। सभी बड़े काम जो योताम ने किये वे “यहूदा
के राजाओं के इतिहास” की पुस्तक में लिखे हैं।

37उस समय यहोवा ने अराम के राजा रसीन और
रमल्याह के पुत्र पेकह को यहूदा के विरुद्ध लड़ने
भेजा।

38योताम मरा और अपने पूर्वजों के साथ दफनाया
गया। योताम अपने पूर्वज दाऊद के नगर में दफनाया
गया। योताम का पुत्र आहाज उसके बाद नया राजा
हुआ।

आहाज यहूदा का राजा बनता है

16 योताम का पुत्र आहाज इस्राएल के राजा रमल्याह
के पुत्र पेकह के राज्यकाल के सत्रहवें वर्ष में
यहूदा का राजा बना। 2आहाज जब राजा बना वह बीस
वर्ष का था। आहाज ने यरूशलेम में सोलह वर्ष तक
राज्य किया। आहाज ने वे काम नहीं किये जिन्हें यहोवा
ने अच्छा बताया था। उसने परमेश्वर की आज्ञा का
पालन अपने पूर्वज दाऊद की तरह नहीं किया। 3आहाज

इस्राएल के राजाओं की तरह रहा। उसने अपने पुत्र तक की बलि आग में दी।* उसने उन राष्ट्रों के घोर पापों की नकल की जिन्हें यहोवा ने देश छोड़ने को विवश तब किया था जब इस्राएली आए थे। 4आहाज ने उच्च स्थानों, पहाड़ियों और हर एक हरे पेड़ के नीचे बलि चढ़ाई और सुगन्धि जलाई।

5अराम के राजा रसीन और इस्राएल के राजा रमल्याह का पुत्र पेकह, दोनों यरूशलेम के विरुद्ध लड़ने आए। रसीन और पेकह ने आहाज को घेर लिया किन्तु वे उसे हरा नहीं सके। 6उस समय अराम के राजा ने अराम के लिये एलत को वापस ले लिया। रसीन ने एलत में रहने वाले सभी यहूदा के निवासियों को जबरदस्ती निकाला। अरामी लोग एलत में बस गए और वे आज भी वहाँ रहते हैं।

7अहाज ने अश्शूर के राजा तिग्लत्पिलेसेर के पास सन्देशवाहक भेजे। सन्देश यह था: "मैं आपका सेवक हूँ। मैं आपके पुत्र समान हूँ। आएँ, और मुझे अराम के राजा और इस्राएल के राजा से बचायें। वे मुझसे युद्ध करने आए हैं!" 8आहाज ने यहोवा के मन्दिर और राजमहल के खजाने में जो सोना और चाँदी था उसे भी ले लिया। तब आहाज ने अश्शूर के राजा को भेंट भेजी। 9अश्शूर के राजा ने उसकी बात मान ली। अश्शूर का राजा दमिश्क के विरुद्ध लड़ने गया। राजा ने उस नगर पर अधिकार कर लिया और लोगों को दमिश्क से बन्दी बनाकर फिर ले गया। उसने रसीन को भी मार डाला।

10राजा आहाज अश्शूर के राजा तिग्लत्पिलेसेर से मिलने दमिश्क गया। आहाज ने दमिश्क में वेदी को देखा। राजा आहाज ने इस वेदी का एक नमूना तथा उसकी व्यापक रूपरेखा, याजक ऊरिय्याह को भेजी। 11तब याजक ऊरिय्याह ने राजा आहाज द्वारा दमिश्क से भेजे गए नमूने के समान ही एक वेदी बनाई। याजक ऊरिय्याह ने इस प्रकार की वेदी राजा आहाज के दमिश्क से लौटने के पहले बनाई।

12जब राजा दमिश्क से लौटा तो उसने वेदी को देखा। उसने वेदी पर भेंट चढ़ाई। 13वेदी पर आहाज ने होमबलि और अन्नबलि चढ़ाई। उसने अपनी पेय भेंट डाली और अपनी मेलबलि के खून को इस वेदी पर छिड़का।

14आहाज ने उस काँसे की वेदी को जो यहोवा के सामने थी मन्दिर के सामने के स्थान से हटाया। यह काँसे की वेदी आहाज की वेदी और यहोवा के मन्दिर के बीच थी। आहाज ने काँसे की वेदी को अपने वेदी के उत्तर की ओर रखा। 15आहाज ने याजक ऊरिय्याह को आदेश दिया। उसने कहा, "विशाल वेदी का उपयोग सवेरे की होमबलियों को जलाने के लिये, सन्ध्या की अन्नबलि के लिये और इस देश के सभी लोगों की पेय भेंट के लिये करो। होमबलि और बलियों का सारा खून विशाल वेदी पर छिड़को। किन्तु मैं काँसे की वेदी का उपयोग परमेश्वर से प्रश्न पूछने के लिये करूँगा।" 16याजक ऊरिय्याह ने वह सब किया जिसे करने के लिये राजा आहाज ने आदेश दिये।

17वहाँ पर काँसे के कवच वाली गाड़ियाँ और याजकों के हाथ धोने के लिये चिलमचियाँ थी। तब राजा आहाज ने मन्दिर में प्रयुक्त काँसे की गाड़ियों को काट डाला और उनसे तख्ते निकाल लिये। उसने गाड़ियों में से चिलमचियों को ले लिया। उसने विशाल टंकी को भी काँसे के उन बैलों से हटा लिया जो उसके नीचे खड़ी थीं। उसने विशाल टंकी को एक पत्थर के चबूतरे पर रखा। 18कारीगरों ने सब्त की सभा के लिये मन्दिर के अन्दर एक ढका स्थान बनाया था। आहाज ने सब्त के लिये ढके स्थान को हटा लिया। आहाज ने राजा के लिये बाहरी द्वार को भी हटा दिया। आहाज ने ये सभी चीजें यहोवा के मन्दिर से लीं। यह सब उसने अश्शूर के राजा को प्रसन्न करने के लिये किया।

19आहाज ने जो बड़े काम किये वे "यहूदा के राजाओं के इतिहास" की पुस्तक में लिखे है। 20आहाज मरा और अपने पूर्वजों के साथ दाऊद नगर में दफनाया गया। आहाज का पुत्र हिजकिय्याह उसके बाद नया राजा हुआ।

होशे इस्राएल पर शासन करना आरम्भ करता है

17 एला का पुत्र होशे ने शोमरोन में इस्राएल पर शासन करना आरम्भ किया। यह यहूदा के राजा आहाज के राज्यकाल के बारहवें वर्ष में हुआ। होशे ने नौ वर्ष तक शासन किया। 2होशे ने वे काम किये जिन्हें यहोवा ने बुरा कहा था। किन्तु होशे इस्राएल का उतना बुरा राजा नहीं था जितने वे राजा थे जिन्होंने उसके पहले शासन किया था।

3अश्शूर का राजा शल्मनेसेर होशे के विरुद्ध युद्ध करने आया। शल्मनेसेर ने होशे को हराया और होशे शल्मनेसेर का सेवक बन गया। होशे शल्मनेसेर को अधीनस्थ कर* देने लगा।

4किन्तु बाद में अश्शूर के राजा को पता चला कि होशे ने उसके विरुद्ध षडयन्त्र रचा है। होशे ने मिस्र के राजा के पास सहायता माँगने के लिये राजदूत भेजे। मिस्र के राजा का नाम "सो" था। उस वर्ष होशे ने अश्शूर के राजा को अधीनस्थ कर उसी प्रकार नहीं भेजा जैसे वह हर वर्ष भेजता था। अत: अश्शूर के राजा ने होशे को बन्दी बनाया और उसे जेल में डाल दिया।

उसने ... दी शाब्दिक, "अपने पुत्र को आग से होकर निकाला।"

अधीनस्थ कर वह धन जो विदेशी राजा या राष्ट्र को रक्षित रहने के लिये दिया जाता है।

5तब अश्शूर के राजा ने इस्राएल के विभिन्न प्रदेशों
पर आक्रमण किया। वह शोमरोन पहुँचा। वह शोमरोन
के विरुद्ध तीन वर्ष तक लड़ा। 6अश्शूर के राजा ने,
इस्राएल पर होशे के राज्यकाल के नवें वर्ष में, शोमरोन
पर अधिकार जमाया। अश्शूर का राजा इस्राएलियों को
बन्दी के रूप में अश्शूर को ले गया। उसने उन्हें हलह,
हाबोर नदी के तट पर गोजान और मादियों के नगरों में
बसाया।

7 ये घटनायें घटी क्योंकि इस्राएलियों ने अपने परमेश्वर
यहोवा के विरुद्ध पाप किये थे। यहोवा इस्राएलियों को
मिस्र से बाहर लाया। यहोवा ने उन्हें राजा फ़िरौन के
चंगुल से बाहर निकाला। किन्तु इस्राएलियों ने अन्य
देवताओं को पूजना आरम्भ किया था। 8इस्राएली वही
सब करने लगे थे जो दूसरे राष्ट्र करते थे। यहोवा ने
उन लोगों को अपना देश छोड़ने को विवश किया था
जब इस्राएली आए थे। इस्राएलियों ने भी राजाओं से
शासित होना पसन्द किया, परमेश्वर से शासित होना
नहीं। 9इस्राएलियों ने गुप्त रूप से अपने यहोवा परमेश्वर
के विरुद्ध काम किया। जिसे उन्हें नहीं करना चाहिये
था।

इस्राएलियों ने अपने सबसे छोटे नगर से लेकर सबसे
बड़े नगर तक, अपने सभी नगरों में उच्च स्थान बनाये।
10इस्राएलियों ने प्रत्येक ऊँची पहाड़ी पर हरे पेड़ के नीचे
स्मृति पत्थर तथा अशेरा स्तम्भ लगाये 11इस्राएलियों ने
पूजा के उन सभी स्थानों पर सुगन्धि जलाई। उन्होंने ये
सभी कार्य उन राष्ट्रों की तरह किया जिन्हें यहोवा ने
उनके सामने देश छोड़ने को विवश किया था। इस्राएलियों
ने वे काम किये जिन्होंने यहोवा को क्रोधित किया।
12उन्होंने देवमूर्तियों की सेवा की, और यहोवा ने
इस्राएलियों से कहा था, "तुम्हें यह नहीं करना चाहिये।"

13यहोवा ने हर एक नबी और हर एक दृष्टा का
उपयोग इस्राएल और यहूदा को चेतावनी देने के लिये
किया। यहोवा ने कहा, "तुम बुरे कामों से दूर हटो! मेरे
आदेशों और नियमों का पालन करो। उन सभी नियमों
का पालन करो जिन्हें मैंने तुम्हारे पूर्वजों को दिये हैं।
मैंने अपने सेवक नबियों का उपयोग यह नियम तुम्हें
देने के लिये किया।"

14लेकिन लोगों ने एक न सुनी। वे अपने पूर्वजों की
तरह बड़े हठी रहे। उनके पूर्वज यहोवा, अपने परमेश्वर
में विश्वास नहीं रखते थे। 15लोगों ने, अपने पूर्वजों द्वारा
यहोवा के साथ की गई वाचा और यहोवा के नियमों
को मानने से इन्कार किया। उन्होंने यहोवा की चेतावनियों
को सुनने से इन्कार किया। उन्होंने निकम्मे देवमूर्तियों
का अनुसरण किया और स्वयं निकम्में बन गये। उन्होंने
अपने चारों ओर के राष्ट्रों का अनुसरण किया। ये
राष्ट्र वह करते थे जिसे न करने की चेतावनी इस्राएल
के लोगों को यहोवा ने दी थी।

16लोगों ने यहोवा, अपने परमेश्वर के आदेशों का
पालन करना बन्द कर दिया। उन्होंने बछड़ों की दो सोने
की मूर्तियाँ बनाई। उन्होंने अशेरा स्तम्भ बनाये। उन्होंने
आकाश के सभी नक्षत्रों की पूजा की और बाल की
सेवा की। 17उन्होंने अपने पुत्र–पुत्रियों की बलि आग में
दी। उन्होंने जादू और प्रेत विद्या का उपयोग भविष्य को
जानने के लिये किया। उन्होंने वह करने के लिये
अपने को बेचा, जिसे यहोवा ने बताया था कि वह उसे
क्रोधित करने वाली बुराई है। 18इसलिये यहोवा इस्राएल
पर बहुत क्रोधित हुआ और उन्हें अपनी निगाह से दूर
ले गया। यहूदा के परिवार समूह के अतिरिक्त कोई
इस्राएली बचा न रहा!

यहूदा के लोग भी अपराधी हैं

19किन्तु यहूदा के लोगों ने भी यहोवा, अपने परमेश्वर
के आदेशों का पालन नहीं किया। यहूदा के लोग भी
इस्राएल के लोगों की तरह ही रहते थे।

20यहोवा ने इस्राएल के सभी लोगों को अस्वीकार
किया। उसने उन पर बहुत विपत्तियाँ ढाई। उसने लोगों
को उन्हें नष्ट करने दिया और अन्त में उसने उन्हें
उठा फेंका और अपनी दृष्टि से ओझल कर दिया।
21यहोवा ने दाऊद के परिवार से इस्राएल को अलग
कर डाला और इस्राएलियों ने नबात के पुत्र यारोबाम
को अपना राजा बनाया। यारोबाम ने इस्राएलियों को
यहोवा का अनुसरण करने से दूर कर दिया। यारोबाम
ने इस्राएलियों से एक भीषण पाप कराया। 22इस प्रकार
इस्राएलियों ने उन सभी पापों का अनुसरण किया जिन्हें
यारोबाम ने किया। उन्होंने इन पापों का करना तब
तक बन्द नहीं किया 23जब तक यहोवा ने इस्राएलियों
को अपनी दृष्टि से दूर नहीं हटाया और यहोवा ने कहा
कि यह होगा। लोगों को बताने के लिए कि यह होगा,
उसने अपने नबियों को भेजा। इसलिए इस्राएली अपने
देश से बाहर अश्शूर पहुँचाये गए और वे आज तक
वहीं हैं।

शोमरोनी लोगों का आरम्भ

24अश्शूर का राजा इस्राएलियों को शोमरोन से ले
गया। अश्शूर का राजा बाबेल, कूता, अब्वाहमात और
सपवैम से लोगों को लाया। उसने उन लोगों को शोमरोन
में बसा दिया। उन लोगो ने शोमरोन पर अधिकार
किया और उसके चारों ओर के नगरों में रहने लगे।
25जब ये लोग शोमरोन में रहने लगे तो इन्होंने यहोवा
का सम्मान नहीं किया। इसलिये यहोवा ने सिंहों को इन
पर आक्रमण के लिये भेजा। इन सिंहों ने उनके कुछ
लोगों को मार डाला। 26कुछ लोगों ने यह बात अश्शूर
के राजा से कही। "वे लोग जिन्हें आप ले गए और
शोमरोन के नगरों में बसाया, उस देश के देवता के

नियमों को नहीं जानते। इसलिये उस देवता ने उन लोगों पर आक्रमण करने के लिये सिंह भेजे। सिहों ने उन लोगों को मार डाला क्योंकि वे लोग उस देश के देवता के नियमों को नहीं जानते थे।"

27इसलिए अश्शूर के राजा ने यह आदेश दिया: "तुमने कुछ याजकों को शोमरोन से लिया था। मैंने जिन याजकों को बन्दी बनाया था उनमें से एक को शोमरोन को वापस भेज दो। उस याजक को जाने और वहाँ रहने दो। तब वह याजक लोगों को उस देश के देवता के नियम सिखा सकता है।"

28इसलिये अश्शूरियों द्वारा शोमरोन से लाये हुए याजकों में से एक बेतेल में रहने आया। उस याजक ने लोगों को सिखाया कि उन्हें यहोवा का सम्मान कैसे करना चाहिये।

29किन्तु उन सभी राष्ट्रों ने अपने निजी देवता बनाए और उन्हें शोमरोन के लोगों द्वारा बनाए गए उच्च स्थानों पर पूजास्थलों में रखा। उन राष्ट्रों ने यही किया, जहाँ कहीं भी वे बसे। 30बाबेल के लोगो ने असत्य देवता सुक्कोतबनोत को बनाया। कूत के लोगों ने असत्य देवता नेर्गल को बनाया। हमात के लोगों ने असत्य देवता अशीमा को बनाया। 31अव्वी लोगों ने असत्य देवता निभज और तर्त्ताक बनाए और सपवमी लोगों ने झूठे देवताओं अद्रम्मेलेक और अनम्मेलेक के सम्मान के लिये अपने बच्चों को आग में जलाया।

32किन्तु उन लोगों ने यहोवा की भी उपासना की। उन्होंने अपने लोगों में से उच्च स्थानों के लिये याजक चुने। ये याजक उन पूजा के स्थानों पर लोगों के लिये बलि चढ़ाते थे। 33वे यहोवा का सम्मान करते थे, किन्तु वे अपने देवताओं की भी सेवा करते थे। वे लोग अपने देवता की वैसी ही सेवा करते थे जैसी वे उन देशों में करते थे जहाँ से वे लाए गए थे।

34आज भी वे लोग वैसे ही रहते हैं जैसे वे भूतकाल में रहते थे। वे यहोवा का सम्मान नहीं करते थे। वे इस्राएलियों के आदेशों और नियमों का पालन नहीं करते थे। वे उन नियमों या आदेशों का पालन नहीं करते थे जिन्हें यहोवा ने याकूब (इस्राएल) की सन्तानों को दिया था। 35यहोवा ने इस्राएल के लोगों के साथ एक वाचा की थी। यहोवा ने उन्हें आदेश दिया, "तुम्हें अन्य देवताओं का सम्मान नहीं करना चाहिये। तुम्हें उनकी पूजा या सेवा नहीं करनी चाहिये या उन्हें बलि भेंट नहीं करनी चाहिये। 36किन्तु तुम्हें यहोवा का अनुसरण करना चाहिये। यहोवा वही परमेश्वर है जो तुम्हें मिस्र से बाहर ले आया। यहोवा ने अपनी महान शक्ति का उपयोग तुम्हें बचाने के लिये किया। तुम्हें यहोवा की ही उपासना करनी चाहिये और उसी को बलि भेंट करनी चाहिये। 37तुम्हें उसके उन नियमों, विधियों, उपदेशों और आदेशों का पालन करना चाहिये जिन्हें उसने तुम्हारे लिये लिखा। तुम्हें इनका पालन सदैव करना चाहिये। तुम्हें अन्य देवताओं का सम्मान नहीं करना चाहिये। 38तुम्हें उस वाचा को नहीं भूलना चाहिये, जो मैंने तुम्हारे साथ किया। तुम्हें अन्य देवताओं का आदर नहीं करना चाहिये। 39नहीं! तुम्हें केवल यहोवा, अपने परमेश्वर का ही सम्मान करना चाहिये। तब वह तुम्हें तुम्हारे सभी शत्रुओं से बचाएगा।"

40किन्तु इस्राएलियों ने इसे नहीं सुना। वे वही करते रहे जो पहले करते चले आ रहे थे। 41इसलिये अब तो वे अन्य राष्ट्र यहोवा का सम्मान करते हैं, किन्तु वे अपनी देवमूर्तियों की भी सेवा करते हैं। उनके पुत्र–पौत्र वही करते हैं, जो उनके पूर्वज करते थे। वे आज तक वही काम करते हैं।

हिजकिय्याह यहूदा पर अपना शासन करना आरम्भ करता है

18 आहाज का पुत्र हिजकिय्याह यहूदा का राजा था। हिजकिय्याह ने इस्राएल के राजा एला के पुत्र होशे के राज्यकाल के तीसरे वर्ष में शासन करना आरम्भ किया। 2हिजकिय्याह ने जब शासन करना आरम्भ किया, वह पच्चीस वर्ष का था। हिजकिय्याह ने यरूशलेम में उनतीस वर्ष तक शासन किया। उसकी माँ जकर्याह की पुत्री अबी थी।

3हिजकिय्याह ने ठीक अपने पूर्वज दाऊद की तरह वे कार्य किये जिन्हें यहोवा ने अच्छा बताया था। 4हिजकिय्याह ने उच्चस्थानों को नष्ट किया। उसने स्मृति पत्थरों और अशेरा स्तम्भों को खंडित कर दिया। उन दिनों इस्राएल के लोग मूसा द्वारा बनाए गए काँसे के साँप के लिये सुगन्धि जलाते थे। इस काँसे के साँप का नाम "नहुशतान" था।

हिजकिय्याह ने इस काँसे के साँप के टुकड़े कर डाले क्योंकि लोग उस साँप की पूजा कर रहे थे।

5हिजकिय्याह यहोवा, इस्राएल के परमेश्वर में विश्वास रखता था। यहूदा के राजाओं में से उसके पहले या उसके बाद हिजकिय्याह के समान कोई व्यक्ति नहीं था। 6हिजकिय्याह यहोवा का बहुत भक्त था। उसने यहोवा का अनुसरण करना नहीं छोड़ा। उसने उन आदेशों का पालन किया जिन्हें यहोवा ने मूसा को दिये थे। 7यहोवा हिजकिय्याह के साथ था। हिजकिय्याह ने जो कुछ किया, उसमें वह सफल रहा।

हिजकिय्याह ने अश्शूर के राजा से अपने को स्वतन्त्र कर लिया। हिजकिय्याह ने अश्शूर के राजा की सेवा करना बन्द कर दिया। 8हिजकिय्याह ने लगातार गाज़ा तक और उसके चारों ओर के पलिश्तियों को पराजित किया। उसने सभी छोटे से लेकर बड़े पलिश्ती नगरों को पराजित किया।

अश्शूरी शोमरोन पर अधिकार करते हैं

9अश्शूर का राजा शल्मनेसेर शोमरोन के विरुद्ध
युद्ध करने गया। उसकी सेना ने नगर को घेर लिया।
यह हिजकिय्याह के यहूदा पर राज्यकाल के चौथे वर्ष
में हुआ। (यह इस्राएल के राजा एला के पुत्र होशे का भी
सातवाँ वर्ष था।) 10तीन वर्ष बाद शल्मनेसेर ने शोमरोन
पर अधिकार कर लिया। उसने शोमरोन को यहूदा के
राजा हिजकिय्याह के राज्यकाल के छठे वर्ष में शोमरोन
को ले लिया। (यह इस्राएल के राजा होशे के राज्यकाल
का नवाँ वर्ष भी था।) 11अश्शूर का राजा इस्राएलियों
को बन्दी के रूप में अश्शूर ले गया। उसने उन्हें हलह
हाबोर पर (गोजान नदी) और मादियों के नगरों में
बसाया। 12यह हुआ, क्योंकि इस्राएलियों ने यहोवा, अपने
परमेश्वर की आज्ञा का पालन नहीं किया। उन्होंने
यहोवा की वाचा को तोड़ा। उन्होंने उन सभी नियमों को
नहीं माना जिनके लिये यहोवा के सेवक मूसा ने आदेश
दिये थे। इस्राएल के लोगों ने यहोवा की वाचा की
अनसुनी की या उन कामों को नहीं किया जिन्हें करने
की शिक्षा उसमें दी गई थी।

अश्शूर यहूदा को लेने को तैयार होता है

13हिजकिय्याह के राज्यकाल के चौदहवें वर्ष अश्शूर
का राजा सन्हेरीब यहूदा के सभी सुदृढ़ नगरों के विरुद्ध
युद्ध छेड़ने गया। सन्हेरीब ने उन सभी नगरों को पराजित
किया। 14तब यहूदा के राजा हिजकिय्याह ने अश्शूर के
राजा को लाकीश में एक सन्देश भेजा। हिजकिय्याह ने
कहा, "मैंने बुरा किया है। मुझे शान्ति से रहने दो। तब
मैं तुम्हें वह भुगतान करूँगा जो कुछ तुम चाहोगे।"

तब अश्शूर के राजा ने यहूदा के राजा हिजकिय्याह
से ग्यारह टन चाँदी और एक टन सोना से अधिक
मांगा। 15हिजकिय्याह ने सारी चाँदी जो यहोवा के मन्दिर
और राजा के खजानों में थी, वह सब दे दी। 16उस
समय हिजकिय्याह ने उस सोने को उतार लिया जो
यहोवा के मन्दिर के दरवाजों और चौखटों पर मढ़ा
गया था। राजा हिजकिय्याह ने इन दरवाजों और चौखटों
पर सोना मढ़वाया था। हिजकिय्याह ने यह सोना अश्शूर
के राजा को दिया।

अश्शूर का राजा अपने लोगों को यरूशलेम भेजता है

17अश्शूर के राजा ने अपने तीन अत्यन्त महत्वपूर्ण
सेनापतियों को एक विशाल सेना के साथ यरूशलेम में
राजा हिजकिय्याह के पास भेजा। वे लोग लाकीश से
चले और यरूशलेम को गये। वे ऊपरी स्रोत के पास
छोटी नहर के निकट खड़े हुए। (ऊपरी स्रोत धोबी क्षेत्र
तक ले जाने वाली सड़क पर है।) 18इन लोगों ने राजा
को बुलाया। हिलकिय्याह का पुत्र एल्याकीम (एल्याकीम
राजमहल का अधीक्षक था।) शेब्ना (शास्त्री) और
आसाप का पुत्र योआह (अभिलेखपाल) उनसे मिलने
आए।

19सेनापतियों में से एक ने उनसे कहा, "हिजकिय्याह
से कहो कि महान सम्राट अश्शूर का सम्राट यह कहता
है: किस पर तुम भरोसा करते हो? 20तुमने केवल
अर्थहीन शब्द कहे है। तुम कहते हो, "मेरे पास उपयुक्त
सलाह और शक्ति युद्ध में मदद के लिये है।" किन्तु तुम
किस पर विश्वास करते हो जो तुम मेरे शासन से
स्वतन्त्र हो गए हो? 21तुम टूटे बेंत की छड़ी का सहारा ले
रहे हो। यह छड़ी मिस्र है। यदि कोई व्यक्ति इस छड़ी का
सहारा लेगा तो यह टूटेगी और उसके हाथ को बेधती
हुई उसे घायल करेगी! मिस्र का राजा उन सभी लोगों
के लिये वैसा ही है, जो उस पर भरोसा करते हैं। 22हो
सकता है, तुम कहो, "हम यहोवा, अपने परमेश्वर पर
विश्वास करते हैं।" किन्तु मैं जानता हूँ कि हिजकिय्याह
ने यहोवा के उच्च स्थानों और वेदियों को हटा दिया
और यहूदा और यरूशलेम से कहा, "तुम्हें केवल
यरूशलेम में वेदी के सामने उपासना करनी चाहिये।"

23अब अश्शूर के राजा, हमारे स्वामी से यह वाचा
करो। मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैं दो हजार घोड़े दूँगा,
यदि आप उन पर चढ़ने वाले घुड़सवारों को प्राप्त कर
सकेंगे। 24मेरे स्वामी के अधिकारियों में से सबसे निचले
स्तर के अधिकारी को भी तुम हरा नहीं सकते! तुमने
रथ और घुड़सवार सैनिक पाने के लिये मिस्र पर
विश्वास किया है। 25मैं यहोवा के बिना यरूशलेम को
नष्ट करने नहीं आया हूँ। यहोवा ने मुझसे कहा है, "इस
देश के विरुद्ध जाओ और इसे नष्ट करो!"

26तब हिलकिय्याह का पुत्र एल्याकीम, शेब्ना और
योआह ने सेनापति से कहा, "कृपया हमसे अरामी में
बातें करें। हम उस भाषा को समझते हैं। यहूदा की
भाषा में हम लोगों से बातें न करें क्योंकि दीवार पर के
लोग हम लोगों की बातें सुन सकते हैं!"

27 किन्तु रबशाके ने उनसे कहा, "मेरे स्वामी ने
मुझे केवल तुमसे और तुम्हारे राजा से बातें करने के
लिये नहीं भेजा है। मैं उन अन्य लोगों के लिये भी कह
रहा हूँ जो दीवार पर बैठते हैं। वे अपना मल और मूत्र
तुम्हारे साथ खायेंगे-पीयेंगे"*

28तब सेनापति हिब्रू भाषा में जोर से चिल्लाया, "महान
सम्राट, अश्शूर के सम्राट का यह सन्देश सुनो। 29सम्राट
कहता है, 'हिजकिय्याह को, अपने को मूर्ख मत बनाने
दो! वह तुम्हें मेरी शक्ति से बचा नहीं सकता।'
30हिजकिय्याह के यहोवा के प्रति तुम आस्थावान न
होना, हिजकिय्याह कहता है, 'हमें यहोवा बचा लेगा!

वे ... पीयेंगे अश्शूर की सेना ने यरूशलेम का घेरा डालने और नगर में अन्न-पानी न आने देने की योजना बनाई थी। वह समझ रहा था कि लोग इतने भूखे होंगे कि अपना मल मूत्र खायेंगे-पीयेंगे।

अश्शूर का सम्राट इस नगर को पराजित नहीं कर
सकता है' 31किन्तु हिजकिय्याह की एक न सुनो।

"अश्शूर का सम्राट यह कहता है: 'मेरे साथ सन्धि करो और मुझसे मिलो। तब तुम हर एक अपनी अंगूर की बेलों और अपने अंजीर के पेड़ों से खा सकते हो तथा अपने कुँए से पानी पी सकते हो।
32यह तुम तब तक कर सकते हो जब तक मैं न आऊँ और तुम्हारे देश जैसे देश में तुम्हें ले न जाऊँ। यह अन्न और नयी दाखमधु, यह रोटी और अंगूर भरे खेत और जैतून एवं मधु का देश है। तब तुम जीवित रहोगे, मरोगे नहीं। किन्तु हिजकिय्याह की एक न सुनो! वह तुम्हारे इरादों को बदलना चाहता है। वह कह रहा है, 'यहोवा हमें
बचा लेगा।' 33क्या अन्य राष्ट्रों के देवताओं ने अश्शूर
के सम्राट से अपने देश को बचाया? नहीं। 34हमात और
अर्पाद के देवता कहाँ हैं? सपवैम, हेना और इव्वा के देवता कहाँ है? क्या वे मुझसे शोमरोन को बचा सके?
नहीं! 35क्या किसी अन्य देश में कोई देवता अपनी भूमि को मुझसे बचा सका? नहीं! क्या यहोवा मुझसे यरूशलेम को बचा लेगा? नहीं!"

36 किन्तु लोग चुप रहे। उन्होंने एक शब्द भी सेनापति को नहीं कहा क्योंकि राजा हिजकिय्याह ने उन्हें ऐसा आदेश दे रखा था। उसने कहा था, "उससे कुछ न कहो।"

37हिलकिय्याह का पुत्र एल्याकीम (एल्याकीम राजमहल का अधीक्षक था।) शेब्ना (शास्त्री) और आसाप का पुत्र योआह (अभिलेखपाल) हिजकिय्याह के पास लौटे। उन्होंने हिजकिय्याह से वह सब कहा जो अश्शूर के सेनापति ने कहा था।

हिजकिय्याह यशायाह नबी के पास अपने अधिकारियों को भेजता है

19 राजा हिजकिय्याह ने वह सब सुना और यह दिखाने के लिये कि वह बहुत दु:खी है और घबराया हुआ है, अपने वस्त्रों को फाड़ डाला और मोटे वस्त्र पहन लिये। तब वह यहोवा के मन्दिर में गया।

2हिजकिय्याह ने एल्याकीम (एल्याकीम राजमहल का अधीक्षक था।) शेब्ना (शास्त्री) और याजकों के अग्रजों को आमोस के पुत्र यशायाह नबी के पास भेजा। उन्होंने मोटे वस्त्र पहने जिससे पता चलता था कि वे परेशान और दु:खी हैं।
3उन्होंने यशायाह से कहा, "हिजकिय्याह यह कहता है, 'यह हमारे लिये संकट, दण्ड और अपमान का दिन है। यह बच्चों को जन्म देने जैसा समय है, किन्तु उन्हें जन्म देने के लिये कोई शक्ति
नहीं है। 4सेनापति के स्वामी अश्शूर के राजा ने जीवित परमेश्वर के विषय में निन्दा करने के लिये उसे भेजा है। यह हो सकता है कि यहोवा, आपका परमेश्वर उन सभी बातों को सुन ले। यह हो सकता है कि यहोवा यह प्रमाणित कर दे कि शत्रु गलती पर है! इसलिये उन लोगों के लिये प्रार्थना करें जो अभी तक जीवित बचे हैं।'"

5राजा हिजकिय्याह के अधिकारी यशायाह के पास
गए। 6 यशायाह ने उनसे कहा, "अपने स्वामी हिजकिय्याह को यह सन्देश दो: 'यहोवा कहता है: उन बातों से डरो नहीं जिन्हें अश्शूर के राजा के अधिकारियों ने मेरी मजाक उड़ाते हुए कही है। 7मैं शीघ्र ही उसके मन में ऐसी भावना पैदा करूँगा जिससे वह एक अफवाह सुनकर अपने देश वापस जाने को विवश होगा और मैं उसे उसके देश में एक तलवार के घाट उतरवा दूँगा।'"

हिजकिय्याह को अश्शूर के राजा की पुन: चेतावनी

8सेनापति ने सुना कि अश्शूर का राजा लाकीश से चल पड़ा है। अत: सेनापति गया और यह पाया कि उसका सम्राट लिब्ना के विरुद्ध युद्ध कर रहा है।

9अश्शूर के राजा ने एक अफवाह कूश के राजा तिर्हाका के बारे में सुनी। अफवाह यह थी: "तिर्हाका तुम्हारे विरुद्ध लड़ने आया है।"

अत: अश्शूर के राजा ने हिजकिय्याह के पास फिर सन्देशवाहक भेजे। अश्शूर के राजा ने इन सन्देशवाहकों को यह सन्देश दिया। उसने इसमें यह कहा:

10"यहूदा के राजा हिजकिय्याह से यह कहो: "जिस परमेश्वर में तुम विश्वास रखते हो उसे तुम अपने को मूर्ख बनाने मत दो। वह कहता है, 'अश्शूर का राजा
यरूशलेम को पराजित नहीं करेगा।' 11तुमने उन घटनाओं को सुना है जो अश्शूर के राजाओं ने अन्य सभी देशों में घटित की है। हमने उन्हें पूरी तरह से नष्ट
किया। क्या तुम बच पाओगे? नहीं। 12उन राष्ट्रों के देवता अपने लोगों की रक्षा नहीं कर सके। मेरे पूर्वजों ने उन सभी को नष्ट किया। उन्होंने गोजान, हारान, रेसेप और तलस्सार में एदेन के लोगों को नष्ट किया।
13हमात का राजा कहाँ है? अर्पाद का राजा? सपवैम नगर का राजा? हेना और इव्वा का राजा? ये सभी समाप्त हो गये हैं!"

हिजकिय्याह यहोवा से प्रार्थना करता है

14हिजकिय्याह ने सन्देशवाहकों से पत्र प्राप्त किये और उन्हें पढ़ा। तब हिजकिय्याह यहोवा के मन्दिर तक गया और यहोवा के सामने पत्रों को रखा।
15हिजकिय्याह ने यहोवा के सामने प्रार्थना की और कहा, "यहोवा इस्राएल का परमेश्वर! तू करूब (स्वर्गदूतों) पर सम्राट की तरह बैठता है। तू ही केवल सारी पृथ्वी के राज्यों का परमेश्वर है। तूने पृथ्वी और आकाश को बनाया।
16यहोवा मेरी प्रार्थना सुन। यहोवा अपनी आँखे खोल और इस पत्र को देख। उन शब्दों को सुन जिन्हें सन्हेरीब ने शाश्वत परमेश्वर का अपमान करने को भेजा है।

17यहोवा, यह सत्य है। अश्शूर के राजाओं ने इन सभी
राष्ट्रों को नष्ट किया। 18उन्होंने राष्ट्रों के देवताओं को
आग में फेंक दिया। किन्तु वे सच्चे देवता नहीं थे। वे
केवल लकड़ी और पत्थर की मूर्ति थे जिन्हें मनुष्यों ने
बना रखा था। यही कारण था कि

अश्शूर के राजा उन्हें नष्ट कर सके। 19अत: यहोवा,
हमारा परमेश्वर, अब तो अश्शूर के राजा से बचा। तब
पृथ्वी के सारे राज्य समझेंगे कि यहोवा, तू ही केवल
परमेश्वर है।"

20आमोस के पुत्र यशायाह ने हिजकिय्याह को यह
सन्देश भेजा। उसने कहा, "यहोवा, इस्राएल का परमेश्वर
यह कहता है, 'तुमने मुझसे अश्शूर के राजा सन्हेरीब
के विरुद्ध प्रार्थना की है। मैंने तुम्हारी प्रार्थना सुन ली
है।'

21"सन्हेरीब के बारे में यहोवा का सन्देश यह है:

'सिय्योन की कुमारी पुत्री (यरूशलेम) तुम्हें तुच्छ
समझती है, वह तुम्हारा मजाक उड़ाती है! यरूशलेम
की पुत्री तुम्हारे पीठ के पीछे सिर झटकती है।

22तुमने किसका अपमान किया? किसका मजाक
उड़ाया? किसके विरुद्ध तुमने बातें की? तुमने ऐसे काम
किये मानों तुम उससे बढ़कर हो। तुम इस्राएल के परम
पावन के विरुद्ध रहे!

23तुमने अपने सन्देशवाहकों को यहोवा का अपमान
करने को भेजा। तुमने कहा, "मैं अपने अनेक रथों
सहित ऊँचे पर्वतों तक आया। मैं लबानोन में भीतर
तक आया। मैंने लबानोन के उच्चतम देवदारु के पेड़ों,
और लबानोन के उत्तम चीड़ के पेड़ों को काटा। मैं
लबानोन के उच्चतम और सघनतम वन में घुसा।

24मैंने कुएँ और नये स्थानों का पानी पीया। मैंने मिस्र
की नदियों को सुखाया और उस देश को रौंदा।"

25किन्तु क्या तुमने नहीं सुना? 'मैंने (परमेश्वर) बहुत
पहले यह योजना बनाई थी, प्राचीनकाल से ही मैंने ये
योजना बना दी थी, और अब मैं उसे ही पूरी होने दे रहा
हूँ। मैंने तुम्हें दृढ़ नगरों को चट्टानों की ढेर बनाने
दिया।

26नगर में रहने वाले व्यक्ति कोई शक्ति नहीं रखते।
ये लोग भयभीत और अस्त–व्यस्त कर दिये गए। लोग
खेतों के जंगली पौधों की तरह हो गए, वे जो बढ़ने के
पहले ही मर जाती है, घर के मुंडेर की घास बन गए।

27तुम उठो और मेरे सामने बैठो, मैं जानता हूँ कि
तुम कब युद्ध करने जाते हो और कब घर आते हो, मैं
जानता हूँ कि तुम अपने को कब मेरे विरुद्ध करते हो।

28तुम मेरे विरुद्ध गए मैंने तुम्हारे गर्वीले अपमान के
शब्द सुने। इसलिये मैं अपना अंकुश तुम्हारी नाक में
डालूँगा। और मैं अपनी लगाम तुम्हारे मुँह में डालूँगा।
तब मैं तुम्हें पीछे लौटाऊँगा और उस मार्ग लौटाऊँगा
जिससे तुम आए थे।

हिजकिय्याह को यहोवा का सन्देश

29"'मैं तुम्हारी सहायता करूँगा, इसका संकेत यह
होगा: इस वर्ष तुम वही अन्न खाओगे जो अपने आप
उगेगा। अगले वर्ष तुम वह अन्न खाओगे जो उस बीज
से उत्पन्न होगा। किन्तु तीसरे वर्ष तुम बीज बोओगे और
अपनी बोयी फसल काटोगे। तुम अंगूर की बेले खेतों में
लगाओगे और उनसे अंगूर खाओगे 30और यहूदा के
परिवार के जो लोग बच गए हैं वे फिर फूले फलेगें
ठीक वैसे ही जैसे पौधा अपनी जड़े मजबूत कर लेने पर
ही फल देता है 31क्यों? क्योंकि कुछ लोग जीवित बचे
रहेंगे। वे यरूशलेम के बाहर चले जायेंगे। जो लोग बच
गये हैं वे सिय्योन पर्वत से बाहर जाएंगे। यहोवा की तीव्र
भावना यह करेगी।'

32"अश्शूर के सम्राट के विषय में यहोवा ऐसा कहता
है:

वह इस नगर में नहीं आएगा। वह इस नगर में एक
भी बाण नहीं चलाएगा। वह इस नगर के विरुद्ध ढाल के
साथ नहीं आएगा। वह इस नगर पर आक्रमण के
मिट्टी के टीले नहीं बनाएगा।

33वह उसी रास्ते लौटेगा जिससे आया। वह इस नगर
में नहीं आएगा। यह यहोवा कहता है!

34मैं इस नगर की रक्षा करूँगा और बचा लूँगा। मैं
इस नगर को बचाऊँगा। मैं यह अपने लिये और अपने
सेवक दाऊद के लिये करूँगा।'"

अश्शूरी सेना नष्ट हो गई

35उस रात यहोवा का दूत अश्शूरी डेरे में गया और
एक लाख पचासी हजार लोगों को मार डाला। सुबह को
जब लोग उठे तो उन्होंने सारे शव देखे।

36 अत: अश्शूर का राजा सन्हेरीब पीछे हटा और
नीनवे वापस पहुँचा, तथा वहीं रूक गया। 37एक दिन
सन्हेरीब निस्रोक के मन्दिर में अपने देवता की पूजा
कर रहा था। उसके पुत्रों अद्रेम्मेलेक और सरेसेर ने
उसे तलवार से मार डाला। तब अद्रेम्मेलेक और सरेसेर
अरारात प्रदेश में भाग निकले और सन्हेरीब का पुत्र
एसर्हद्दोन उसके बाद नया राजा हुआ।

हिजकिय्याह बीमार पड़ा और मरने को हुआ

20 उस समय हिजकिय्याह बीमार पड़ा और लगभग
मर ही गया। आमोस का पुत्र यशायाह (नबी)
हिजकिय्याह से मिला। यशायाह ने हिजकिय्याह से कहा,
"यहोवा कहता है, 'अपने परिवार के लोगों को तुम
अपना अन्तिम निर्देश दो। तुम जीवित नहीं रहोगे।'"

2हिजकिय्याह ने अपना मुँह दीवार* की ओर कर
लिया। उसने यहोवा से प्रार्थना की और कहा, 3"यहोवा

दीवार सम्भवत: यह दीवार मन्दिर के सामने थी।

याद रख कि मैंने पूरे हृदय के साथ सच्चाई से तेरी सेवा
की है। मैंने वह किया है जिसे तूने अच्छा बताया है।"
तब हिजकिय्याह फूट फूट कर रो पड़ा।
4बीच के आँगन को यशायाह के छोड़ने के पहले
यहोवा का सन्देश उसे मिला। यहोवा ने कहा, 5"लौटो
और मेरे लोगों के अगुवा हिजकिय्याह से कहो, 'यहोवा
तुम्हारे पूर्वज दाऊद का परमेश्वर यह कहता है, "मैंने
तुम्हारी प्रार्थना सुन ली है और मैंने तुम्हारे आँसू देखे
हैं। इसलिये मैं तुम्हें स्वस्थ करूँगा। तीसरे दिन तुम
यहोवा के मन्दिर में जाओगे 6और मैं तुम्हारे जीवन के
पन्द्रह वर्ष बढ़ा दूँगा। मैं अश्शूर के सम्राट की शक्ति से
तुम्हें और इस नगर को बचाऊँगा। मैं इस नगर की
रक्षा करूँगा। मैं अपने लिये और अपने सेवक दाऊद
को जो वचन दिया था, उसके लिये यह करूँगा।"'
7तब यशायाह ने कहा, "अंजीर का एक मिश्रण*
बनाओ और इसे घाव के स्थान पर लगाओ।"
इसलिये उन्होंने अंजीर का मिश्रण लिया और
हिजकिय्याह के घाव के स्थान पर लगाया। तब
हिजकिय्याह स्वस्थ हो गया।

हिजकिय्याह के स्वस्थ होने के संकेत

8हिजकिय्याह ने यशायाह से कहा, "इसका संकेत
क्या होगा कि यहोवा मुझे स्वस्थ करेगा और मैं यहोवा
के मन्दिर में तीसरे दिन जाऊँगा?"
9यशायाह ने कहा, "तुम क्या चाहते हो? क्या छाया
दस पैड़ी आगे जाये या दस पैड़ी पीछे जाये?* यही यहोवा
का तुम्हारे लिये संकेत है जो यह प्रकट करेगा कि जो
यहोवा ने कहा है, उसे वह करेगा।"
10हिजकिय्याह ने उत्तर दिया, "छाया के लिये दस
पैड़ियाँ उतर जाना सरल है। नहीं, छाया को दस पैड़ी
पीछे हटने दो।"
11तब यशायाह ने यहोवा से प्रार्थना की और यहोवा
ने छाया को दस पैड़ियाँ पीछे चलाया। वह उन पैड़ियों पर
लौटी जिन पर यह पहले थी।

हिजकिय्याह और बाबेल के व्यक्ति

12उन दिनों बलदान का पुत्र बरोदक बलदान बाबेल
का राजा था। उसने पत्रों के साथ एक भेंट हिजकिय्याह
को भेजी। बरोदक–बलदान ने यह इसलिये किया क्योंकि
उसने सुना कि हिजकिय्याह बीमार हो गया है।
13हिजकिय्याह ने बाबेल के लोगों का स्वागत किया
और अपने महल की सभी कीमती चीज़ों को उन्हें
दिखाया। उसने उन्हें चाँदी, सोना, मसाले, कीमती इत्र,
अस्त्र–शस्त्र और अपने खजाने की हर एक चीज
दिखायी। हिजकिय्याह के पूरे महल और राज्य में ऐसा
कुछ नहीं था जिसे उसने उन्हें न दिखाया हो।
14तब यशायाह नबी राजा हिजकिय्याह के पास आया
और उससे पूछा, "ये लोग क्या कहते थे? वे कहाँ से
आये थे?"
हिजकिय्याह ने कहा, "वे बहुत दूर के देश बाबेल से
आए थे।"
15यशायाह ने पूछा, "उन्होंने तुम्हारे महल में क्या
देखा है?"
हिजकिय्याह ने उत्तर दिया, "उन्होंने मेरे महल की
सभी चीजें देखी हैं। मेरे खजानों में ऐसा कुछ नहीं है
जिसे मैंने उन्हें न दिखाया हो।"
16तब यशायाह ने हिजकिय्याह से कहा, "यहोवा के
यहाँ से इस सन्देश को सुनो। 17वह समय आ रहा है जब
तुम्हारे महल की सभी चीज़ें और वे सभी चीज़ें जिन्हें
तुम्हारे पूर्वजों ने आज तक सुरक्षित रखा है, बाबेल ले
जाई जाएंगी। कुछ भी नहीं बचेगा। यहोवा यह कहता है।
18बाबेल तुम्हारे पुत्रों को ले लेंगे और तुम्हारे पुत्र बाबेल
के राजा के महल में खोजे बनेंगे।"
19तब हिजकिय्याह ने यशायाह से कहा, "यहोवा के
यहाँ से यह सन्देश अच्छा है।"
हिजकिय्याह ने यह भी कहा, "यह बहुत अच्छा है
यदि मेरे जीवनकाल में सच्ची शान्ति रहे।"
20हिजकिय्याह ने जो बड़े काम किये, जिनमें जलकुण्ड
पर किये गये काम और नगर में पानी लाने के लिये
नहर बनाने के काम सम्मिलित हैं "यहूदा के राजाओं
के इतिहास" की पुस्तक में लिखे गये हैं। 21हिजकिय्याह
मरा और अपने पूर्वजों के साथ दफनाया गया और
हिजकिय्याह का पुत्र मनश्शे उसके बाद नया राजा
हुआ।

मनश्शे अपना कुशासन यहूदा पर आरम्भ करता है

21 मनश्शे जब शासन करने लगा तब वह बारह
वर्ष का था। उसने पचपन वर्ष तक यरूशलेम
में शासन किया। उसकी माँ का नाम हेप्सीबा था।
2मनश्शे ने वे काम किये जिन्हें यहोवा ने बुरा बताया
था। मनश्शे वे भयंकर काम करता था जो अन्य राष्ट्र
करते थे। (और यहोवा ने उन राष्ट्रों को अपना देश
छोड़ने पर विवश किया था जब इस्राएली आए थे।)
3मनश्शे ने फिर उन उच्च स्थानों को बनाया जिन्हें
उसके पिता हिजकिय्याह ने नष्ट किया था। मनश्शे ने
भी ठीक इस्राएल के राजा अहाब की तरह बाल की
वेदी बनाई और अशेरा स्तम्भ बनाया। मनश्शे ने आकाश
में तारों की सेवा और पूजा आरम्भ की। 4मनश्शे ने

अंजीर का एक मिश्रण इसका उपयोग दवा की तरह होता था।

क्या ... जाये इसका तात्पर्य एक बाहर की विषेश इमारत की पौड़ियाँ हो सकती हैं जिन्हें हिजकिय्याह धूपघड़ी की तरह इस्तेमाल करता था। जब धूप पैड़ियों पर पड़ती थी तो उससे पता चलता था कि समय क्या हुआ है।

यहोवा के मन्दिर में असत्य देवताओं की पूजा की
वेदियाँ बनाई। (यह वही स्थान है जिसके बारे में यहोवा
बातें कर रहा था जब उसने कहा था, "मैं अपना नाम
यरूशलेम में रखूँगा।)" 5मनश्शे ने यहोवा के मन्दिर
के दो आँगनों में आकाश के नक्षत्रों के लिये वेदियाँ
बनाई। 6मनश्शे ने अपने पुत्र की बलि दी और उसे वेदी
पर जलाया। मनश्शे ने भविष्य जानने के प्रयत्न में कई
तरीकों का उपयोग किया। वह ओझाओं और भूत
सिद्धियों से मिला।

मनश्शे अधिक से अधिक वह करता गया जिसे
यहोवा ने बुरा कहा था। इसने यहोवा को क्रोधित
किया। 7मनश्शे ने अशेरा की एक खुदी हुई मूर्ति
बनाई। उसने इस मूर्ति को मन्दिर में रखा। यहोवा ने
दाऊद और दाऊद के पुत्र सुलैमान से इस मन्दिर के
बारे में कहा था: "मैंने यरूशलेम को पूरे इस्राएल के
नगरों में से चुना है। मैं अपना नाम यरूशलेम के
मन्दिर में सदैव के लिये रखूँगा। 8मैं इस्राएल के लोगों से
वह भूमि जिसे मैंने उनके पूर्वजों को दी थी, छोड़ने के
लिये नहीं कहूँगा। मैं लोगों को उनके देश में रहने दूँगा,
यदि वे उन सब चीज़ों का पालन करेंगे जिनका आदेश
मैंने दिया है और जो उपदेश मेरे सेवक मूसा ने उनको
दिये हैं।" 9किन्तु लोगों ने परमेश्वर की एक न सुनी।
इस्राएलियों के आने के पहले कनान में रहने वाले सभी
राष्ट्र जितना बुरा करते थे मनश्शे ने उससे भी अधिक
बुरा किया और यहोवा ने उन राष्ट्रों को नष्ट कर दिया
था जब इस्राएल के लोग अपनी भूमि लेने आए थे।

10यहोवा ने अपने सेवक, नबियों का उपयोग यह
कहने के लिये किया: 11"यहूदा के राजा मनश्शे ने इन
घृणित कामों को किया है और अपने से पहले की गई
एमोरियों की बुराई से भी बड़ी बुराई की है। मनश्शे ने
अपने देवमूर्तियों के कारण यहूदा से भी पाप कराया है।
12इसलिये इस्राएल का परमेश्वर यहोवा कहता है, 'देखो!
मैं यरूशलेम और यहूदा पर इतनी विपत्तियाँ ढाऊँगा कि
यदि कोई व्यक्ति इनके बारे में सुनेगा तो उसका हृदय
बैठ जायेगा। 13मैं यरूशलेम तक शोमरोन की माप
पंक्ति और अहाब के परिवार की साहुल को फैलाऊँगा।
कोई व्यक्ति तश्तरी को पोछता है और तब वह उसे
उलट कर रख देता है। मैं यरूशलेम के ऊपर भी ऐसा
ही करूँगा। 14वहाँ मेरे कुछ व्यक्ति फिर भी बचे रह
जायेंगे। किन्तु मैं उन व्यक्तियों को छोड़ दूँगा। मैं उन्हें
उनके शत्रुओं को दे दूँगा। उनके शत्रु उन्हें बन्दी बनायेंगे,
वे उन कीमती चीज़ों की तरह होंगे जिन्हें सैनिक युद्ध में
प्राप्त करते हैं। 15क्यों? क्योंकि हमारे लोगों ने वे काम
किये जिन्हें मैंने बुरा बताया। उन्होंने मुझे उस दिन से
क्रोधित किया है जिस दिन से उनके पूर्वज मिस्र से
बाहर आए 16और मनश्शे ने अनेक निरपराध लोगों
को मारा। उसने यरूशलेम को एक सिरे से दूसरे सिरे
तक खून से भर दिया और वे सारे पाप उन पापों के
अतिरिक्त है जिसे उसने यहूदा से कराया। मनश्शे ने
यहूदा से वह कराया जिसे यहोवा ने बुरा बताया था।'"

17उन पापों सहित और भी जो कार्य मनश्शे ने किये,
वह सभी "यहूदा के राजाओं के इतिहास" की पुस्तक में
लिखे है। 18मनश्शे मरा और अपने पूर्वजों के साथ
दफनाया गया। मनश्शे अपने घर के बाग में दफनाया
गया। इस बाग का नाम उज्जर का बाग था। मनश्शे का
पुत्र आमोन उसके बाद नया राजा हुआ।

आमोन का अल्पकालीन शासन

19आमोन ने जब शासन करना आरम्भ किया तो
वह बाईस वर्ष का था। उसने यरूशलेम में दो वर्ष तक
शासन किया। उसकी माँ का नाम मशुल्लेमेत था, जो
योत्बा के हारूस की पुत्री थी।

20आमोन ने ठीक अपने पिता मनश्शे की तरह के
काम किये, जिन्हें यहोवा ने बुरा बताया था। 21आमोन
ठीक अपने पिता की तरह रहता था। आमोन उन्हीं
देवमूर्तियों की पूजा और सेवा करता था जिनकी उसका
पिता करता था। 22आमोन ने अपने पूर्वजों के परमेश्वर
यहोवा को त्याग दिया और उस तरह नहीं रहा जैसा
यहोवा चाहता था।

23आमोन के सेवकों ने उसके विरुद्ध षड़यन्त्र रचा
और उसे उसके महल में मार डाला। 24साधारण जनता
ने उन सभी अधिकारियों को मार डाला जिन्होंने आमोन
के विरुद्ध षडयन्त्र रचा था। तब लोगों ने आमोन के पुत्र
योशिय्याह को उसके बाद नया राजा बनाया।

25जो अन्य काम आमोन ने किये वे "यहूदा के राजाओं
के इतिहास" की पुस्तक में लिखे हैं। 26आमोन उज्जर
के बाग में अपनी कब्र में दफनाया गया। आमोन का
पुत्र योशिय्याह नया राजा बना।

योशिय्याह यहूदा पर अपना शासन आरम्भ करता है

22 योशिय्याह ने जब शासन आरम्भ किया तो
वह आठ वर्ष का था। उसने इकतीस वर्ष तक
यरूशलेम में शासन किया। उसकी माँ बोस्कत के
अदाया की पुत्री यदीदा थी। 2योशिय्याह ने वे काम किये
जिन्हें यहोवा ने अच्छा बताया था। योशिय्याह ने परमेश्वर
का अनुसरण अपने पूर्वज दाऊद की तरह किया।
योशिय्याह ने परमेश्वर की शिक्षाओं को माना, और
उसने ठीक वैसा ही किया जैसा परमेश्वर चाहता था।

योशिय्याह मन्दिर की मरम्मत के लिये आदेश देता है

3योशिय्याह ने अपने राज्यकाल के अट्ठारहवें वर्ष
में अपने मन्त्री, मशुल्लाम के पौत्र व असल्याह के पुत्र
शापान को यहोवा के मन्दिर में भेजा। 4योशिय्याह ने
कहा, "महयाजक हिलकिय्याह के पास जाओ। उससे

कहो कि उसे वह धन लेना चाहिये जिसे लोग यहोवा के
मन्दिर में लाये हैं। द्वारपालों ने उस धन को लोगों से
इकट्ठा किया था। 5याजकों को यह धन उन कारीगरों
को देने में उपयोग करनी चाहिये जो यहोवा के मन्दिर
की मरम्मत करते हैं। याजकों को इस धन को उन
लोगों को देना चाहिये जो यहोवा के मन्दिर की देखभाल
करते हैं। 6बढ़ई, पत्थर की दीवार बनाने वाले मिस्त्री
और पत्थर तराश के लिये धन का उपयोग करो।
मन्दिर में लगाने के लिये इमारती लकड़ी और कटे
पत्थर के खरीदने में धन का उपयोग करो। 7उस धन
को न गिनों जिसे तुम मजदूरों को दो। उन मजदूरों पर
विश्वास किया जा सकता है।"

व्यवस्था की पुस्तक मन्दिर में मिली

8महायाजक हिलकिय्याह ने शास्त्री शापान से कहा,
"देखो! मुझे व्यवस्था की पुस्तक यहोवा के मन्दिर में
मिली है।" हिलकिय्याह ने इस पुस्तक को शापान को
दिया और शापान ने इसे पढ़ा।

9शास्त्री शापान, राजा योशिय्याह के पास आया और
उसे बताया जो हुआ था। शापान ने कहा, "तुम्हारे
सेवकों ने मन्दिर से मिले धन को लिया और उसे उन
कारीगरों को दिया जो यहोवा के मन्दिर की देख–रेख
कर रहे थे।" 10तब शास्त्री शापान ने राजा से कहा,
"याजक हिलकिय्याह ने मुझे यह पुस्तक भी दी है।" तब
शापान ने राजा को पुस्तक पढ़ कर सुनाई।

11जब राजा ने व्यवस्था की पुस्तक के शब्दों को
सुना, उसने अपना दुःख और परेशानी प्रकट करने के
लिये अपने वस्त्रों को फाड़ डाला। 12तब राजा ने याजक
हिलकिय्याह, शापान के पुत्र अहीकाम, मीकायाह के
पुत्र अकबोर,शास्त्री शापान और राजसेवक असाया को
आदेश दिया। 13राजा योशिय्याह ने कहा,"जाओ, और
यहोवा से पूछो कि हमें क्या करना चाहिये। यहोवा से
मेरे लिये, लोगों के लिये और पूरे यहूदा के लिये याचना
करो। इस मिली हुई पुस्तक के शब्दों के बारे में पूछो।
यहोवा हम लोगों पर क्रोधित है। क्यों? क्योंकि हमारे
पूर्वजों ने इस पुस्तक की शिक्षा को नहीं माना। उन्होंने
हम लोगों के लिये लिखी सब बातों को नहीं किया।"

योशिय्याह और नबिया हुल्दा

14अत: याजक हिलकिय्याह, अहीकाम, अकबोर,
शापान और असाया, नबिया हुल्दा के पास गए। हुल्दा
हर्हस के पौत्र व तिकवा के पुत्र शल्लूम की पत्नी थी।
वह याजक के वस्त्रों की देखभाल करता था। हुल्दा
यरूशलेम में द्वितीय खण्ड में रह रही थी। वे गए और
उन्होंने हुल्दा से बातें कीं।

15तब हुल्दा ने उनसे कहा, "यहोवा इस्राएल का
परमेश्वर कहता है: उस व्यक्ति से कहो जिसने तुम्हें
मेरे पास भेजा है: 16'यहोवा यह कहता है: मैं इस स्थान
पर विपत्ति ला रहा हूँ और उन मनुष्यों पर भी जो यहाँ
रहते हैं। ये वे विपत्तियाँ हैं जिन्हें उस पुस्तक में लिखा
गया है जिसे यहूदा के राजा ने पढ़ी है। 17यहूदा के लोगों
ने मुझे त्याग दिया है और अन्य देवताओं के लिये
सुगन्धि जलाई है। उन्होंने मुझे बहुत क्रोधित किया है।
उन्होंने बहुत सी देवमूर्तियाँ बनाई। यही कारण है कि मैं
इस स्थान के विरुद्ध अपना क्रोध प्रकट करूँगा। मेरा
क्रोध उस अग्नि की तरह होगा जो बुझाई न जा
सकेगी।'

18-19"यहूदा के राजा योशिय्याह ने तुम्हें यहोवा से
सलाह लेने को भेजा है। योशिय्याह से यह कहो: 'यहोवा,
इस्राएल के परमेश्वर ने जो कहा उसे तुमने सुना। तुमने
वह सुना जो मैंने इस स्थान और इस स्थान पर रहने
वाले लोगों के बारे में कहा। तुम्हारा हृदय कोमल है
और जब तुमने यह सुना तो तुम्हें दुःख हुआ। मैंने कहा
कि भयंकर घटनायें इस स्थान (यरूशलेम) के साथ
घटित होंगी। और तुमने अपने दुःख को प्रकट करने
के लिये अपने वस्त्रों को फाड़ डाला और तुम रोने लगे।
यही कारण है कि मैंने तुम्हारी बात सुनी।' यहोवा यह
कहता है,

20'मैं तुम्हें तुम्हारे पूर्वजों के साथ ले आऊँगा। तुम
मरोगे और अपनी कब्र में शान्तिपूर्वक जाओगे। अत:
तुम्हारी आँखे उन विपत्तियों को नहीं देखेंगी जिन्हें मैं इस
स्थान (यरूशलेम) पर ढाने जा रहा हूँ।'"

तब याजक हिलकिय्याह, अहीकाम, अकबोर, शापान
और असाया ने राजा से यह सब कहा।

लोग नियम को सुनते हैं

23 राजा योशिय्याह ने यहूदा और इस्राएल के सभी
प्रमुखों से आने और उससे मिलने के लिये
कहा। 2तब राजा यहोवा के मन्दिर गया। सभी यहूदा के
लोग और यरूशलेम में रहने वाले लोग उसके साथ
गए। याजक, नबी, और सभी व्यक्ति, सबसे अधिक
महत्वपूर्ण से सबसे कम महत्व के सभी उसके साथ
गए। तब उसने "साक्षीपत्र की पुस्तक" पढ़ी। यह वही
"नियम की पुस्तक" थी जो यहोवा के मन्दिर में मिली
थी। योशिय्याह ने उस पुस्तक को इस प्रकार पढ़ा कि
सभी लोग उसे सुन सकें।

3राजा स्तम्भ के पास खड़ा हुआ और उसने यहोवा
के साथ वाचा की। उसने यहोवा का अनुसरण करना,
उसकी आज्ञा, वाचा और नियमों का पालन करना
स्वीकार किया। उसने पूरी आत्मा और हृदय से यह
करना स्वीकार किया। उसने उस पुस्तक में लिखी
वाचा को मानना स्वीकार किया। सभी लोग यह प्रकट
करने के लिये खड़े हुए कि वे राजा की वाचा का
समर्थन करते हैं।

4तब राजा ने महायाजक हिलकिय्याह, अन्य याजकों
और द्वारपालों को बाल, अशेरा और आकाश के नक्षत्रों
के सम्मान के लिये बनी सभी चीज़ों को यहोवा के
मन्दिर के बाहर लाने का आदेश दिया। तब योशिय्याह
ने उन सभी को यरूशलेम के बाहर किद्रोन के खेतों में
जला दिया। तब राख को वे बेतेल ले गए।

5यहूदा के राजाओं ने कुछ सामान्य व्यक्तियों को
याजकों के रूप में सेवा के लिये चुना था। ये लोग
हारून के परिवार से नहीं थे! वे बनावटी याजक यहूदा
के सभी नगरों और यरूशलेम के चारों ओर के नगरों
में उच्च स्थानों पर सुगन्धि जला रहे थे। वे बाल, सूर्य,
चन्द्र, राशियों (नक्षत्रों के समूह) और आकाश के सभी
नक्षत्रों के सम्मान में सुगन्धि जला रहे थे। किन्तु योशिय्याह
ने उन बनावटी याजकों को रोक दिया।

6योशिय्याह ने अशेरा स्तम्भ को यहोवा के मन्दिर से
हटाया। वह अशेरा स्तम्भ को नगर के बाहर किद्रोन
घाटी को ले गया और उसे वहीं जला दिया। तब उसने
जले खण्डों को कूटा तथा उस राख को साधारण लोगों
की कब्रों पर बिखेरा।*

7तब राजा योशिय्याह ने यहोवा के मन्दिर में बने
पुरुषगामियों के कोठों को गिरवा दिया। स्त्रियाँ भी उन
घरों का उपयोग करती थीं और असत्य देवी अशेरा के
सम्मान के लिये डेरे के आच्छादन बनाती थीं।

8-9उस समय याजक बलि यरूशलेम को नहीं लाते थे
और उसे मन्दिर की वेदी पर नहीं चढ़ाते थे। याजक
सारे यहूदा के नगरों में रहते थे और वे उन नगरों में
उच्च स्थानों पर सुगन्धि जलाते तथा बलि भेंट करते थे।
वे उच्च स्थान गेबा से लेकर बेर्शेबा तक हर जगह थे।
याजक अपनी अखमीरी रोटी उन नगरों में साधारण
लोगों के साथ खाते थे, किन्तु यरूशलेम के मन्दिर में
बने याजकों के लिये विशेष स्थान पर नहीं। परन्तु राजा
योशिय्याह ने उन उच्च स्थानों को भ्रष्ट (नष्ट) कर
डाला और याजकों को यरूशलेम ले गया। योशिय्याह ने
उन उच्च स्थानों को भी नष्ट किया था जो यहोशू–द्वार
के पास बायीं ओर थे। (यहोशू नगर का प्रशासक था।)

10तोपेत "हिन्नोम के पुत्र की घाटी" में एक स्थान था
जहाँ लोग अपने बच्चों को मारते थे और असत्य देवता
मोलेक के सम्मान में उन्हें वेदी पर जलाते थे।* योशिय्याह
ने उस स्थान को इतना भ्रष्ट (नष्ट) कर डाला कि
लोग उस स्थान का फिर प्रयोग न कर सकें। 11बीते
समय में यहूदा के राजाओं ने यहोवा के मन्दिर के द्वार
के पास कुछ घोड़े और रथ रख छोड़े थे। यह नतन्मेलेख
नामक महत्वपूर्ण अधिकारी के कमरे के पास था।
घोड़े और रथ सूर्य देव के सम्मान के लिये थे। योशिय्याह
ने घोड़ों को हटाया और रथ को जला दिया।

12बीते समय में यहूदा के राजाओं ने अहाब की
इमारत की छत पर वेदियाँ बना रखी थी। राजा मनश्शे
ने भी यहोवा के मन्दिर के दो आँगनों मे वेदियाँ बना
रखी थीं। योशिय्याह ने उन वेदियों को तोड़ डाला और
उनके टूटे टुकड़ों को किद्रोन की घाटी में फेंक दिया।

13बीते समय में राजा सुलैमान ने यरूशलेम के निकट
विध्वंसक पहाड़ी पर कुछ उच्च स्थान बनाए थे। उच्च
स्थान उस पहाड़ी की दक्षिण की ओर थे। राजा सुलैमान
ने पूजा के उन स्थानों में से एक को, सीदोन के लोग
जिस भयंकर चीज अश्तोरेत की पूजा करते थे, उसके
सम्मान के लिये बनाया था। सुलैमान ने मोआब लोगों
द्वारा पूजित भयंकर चीज़ कमोश के सम्मान के लिये
भी एक वेदी बनाई थी और राजा सुलैमान ने अम्मोन
लोगों द्वारा पूजित भयंकर चीज मिल्कोम के सम्मान के
लिये एक उच्च स्थान बनाया था। किन्तु राजा योशिय्याह
ने उन सभी पूजा स्थानों को भ्रष्ट (नष्ट) कर दिया।
14राजा योशिय्याह ने सभी स्मृति पत्थरों और अशेरा
स्तम्भों को तोड़ डाला। तब उसने उस स्थानों के ऊपर
मृतकों की हड्डियाँ बिखेरीं।*

15योशिय्याह ने बेतेल की वेदी और उच्च स्थानों को
भी तोड़ डाला। नबात के पुत्र यारोबाम ने इस वेदी को
बनाया था। यारोबाम ने इस्राएल से पाप कराया था।*
योशिय्याह ने उच्च स्थानों और वेदी दोनों को तोड़
डाला। योशिय्याह ने वेदी के पत्थर के टुकड़े कर दिये।
तब उसने उन्हें कूट कर धूलि बना दिया और उसने
अशेरा स्तम्भ को जला दिया। 16योशिय्याह ने चारों
ओर नजर दौड़ाई और पहाड़ पर कब्रों को देखा। उसने
व्यक्तियों को भेजा और वे उन कब्रों से हड्डियाँ ले
आए। तब उसने वेदी पर उन हड्डियों को जलाया। इस
प्रकार योशिय्याह ने वेदी को भ्रष्ट (नष्ट) कर दिया।
यह उसी प्रकार हुआ जैसा यहोवा के सन्देश को परमेश्वर
के जन ने घोषित किया था।* परमेश्वर के जन ने
इसकी घोषणा तब की थी जब यारोबाम वेदी की बगल
में खड़ा था।

तब योशिय्याह ने चारों ओर निगाह दौड़ाई और
परमेश्वर के जन की कब्र देखी।

17योशिय्याह ने कहा, "जिस स्मारक को मैं देख रहा
हूँ, वह क्या है?"

तब ... बिखेरा यह इस बात को प्रकट करने की प्रबल पद्धति थी कि अशेरा–स्तम्भ का उपयोग फिर नहीं हो सकता।

मोलेक ... जलाते थे शाब्दिक, "लोग अपने पुत्र या पुत्री को आग से होकर मोलेक तक पहुँचाते थे।"

तब ... बिखेरीं यही तरीका था कि उसने उन स्थानों को इस प्रकार भ्रष्ट (नष्ट) कर दिया जिससे वे पूजा के स्थान के रूप में प्रयोग में न आ सके।

यारोबाम ... कराया था देखें 1राजा 12:26–30

घोषित किया था देखें 1राजा 13:1–3

नगर केलोगों ने उससे कहा, "यह परमेश्वर के उस
जन की कब्र है जो यहूदा से आया था। इस परमेश्वर
के जन ने वह सब बताया था जो आपने बेतेल में वेदी
के साथ किया। उसने ये बातें बहुत पहले बताई थीं।"
18योशिय्याह ने कहा, "परमेश्वर के जन को अकेला
छोड़ दो। उसकी हड्डियों को मत हटाओ।" अत: उन्होंने
हडि्डयाँ छोड़ दी, और साथ ही शोमरोन से आये परमेश्वर
के जन की हड्डियाँ भी छोड़ दी।
19योशिय्याह ने शोमरोन नगर के सभी उच्च स्थानों
के पूजागृह को भी नष्ट कर दिया। इस्राएल के राजाओं
ने उन पूजागृहों को बनाया था और उसने यहोवा को
बहुत क्रोधित किया था। योशिय्याह ने उन पूजागृहों को
वैसे ही नष्ट किया जैसे उसने बेतेल के पूजा के स्थानों
को नष्ट किया।
20योशिय्याह ने शोमरोन में रहने वाले उच्च स्थानों
के सभी पुरोहितों को मार डाला। उसने उन्हीं वेदियों पर
पुरोहितों का वध किया। उसने मनुष्यों की हड्डियाँ
वेदियों पर जलाई। इस प्रकार उसने पूजा के उन स्थानों
को भ्रष्ट किया। तब वह यरूशलेम लौट गया।

यहूदा के लोग फसह पर्व मनाते हैं

21तब राजा योशिय्याह ने सभी लोगों को आदेश दिया।
उसने कहा, "यहोवा, अपने परमेश्वर का फसह पर्व
मनाओ। इसे उसी प्रकार मनाओ जैसा "साक्षीपत्र की
पुस्तक" में लिखा है।"
22लोगों ने इस प्रकार फसह पर्व तब से नहीं मनाया
था जब से इस्राएल पर न्यायाधीश शासन करते थे।
इस्राएल के किसी राजा या यहूदा के किसी भी राजा ने
कभी फसह पर्व का इतना बड़ा उत्सव नहीं मनाया था।
23उन लोगों ने यहोवा के लिये यह फसह पर्व योशिय्याह
के राज्यकाल के अट्ठारहवें वर्ष में यरूशलेम में मनाया।
24योशिय्याह ने ओझाओं, भूतसिद्धकों, गृह–देवताओं,
देवमूर्तियों और यहूदा तथा इस्राएल में जिन डरावनी
चीजों की पूजा होती थी, सबको नष्ट कर दिया। योशिय्याह
ने यह यहोवा के मन्दिर में याजक हिलकिय्याह को
मिली पुस्तक में लिखे नियमों का पालन करने के लिये
किया।
25इसके पहले योशिय्याह के समान कभी कोई राजा
नहीं हुआ था। योशिय्याह यहोवा की ओर अपने पूरे
हृदय, अपनी पूरी आत्मा और अपनी पूरी शक्ति से
गया। योशिय्याह की तरह किसी राजा ने मूसा के सभी
नियमों का अनुसरण नहीं किया था और उस समय से
योशिय्याह की तरह का कोई अन्य राजा कभी नहीं
हुआ।
26किन्तु यहोवा ने यहूदा के लोगों पर क्रोध करना
छोड़ा नहीं। यहोवा अब भी उन पर सारे कामों के लिये
क्रोधित था जिन्हें मनश्शे ने किया था। 27यहोवा ने
कहा, "मैंने इस्राएलियों को उनका देश छोड़ने को विवश
किया। मैं यहूदा के साथ वैसा ही करूँगा मैं यहूदा को
अपनी आँखों से ओझल करूँगा। मैं यरूशलेम को
अस्वीकार करूँगा। हाँ, मैंने उस नगर को चुना, और
यह वही स्थान है जिसके बारे में मैं (यरूशलेम के बारे
में) बातें कर रहा था जब मैंने यह कहा था, 'मेरा नाम
वहाँ रहेगा।' किन्तु मैं वहाँ के मन्दिर को नष्ट करूँगा।"
28योशिय्याह ने जो अन्य काम किये वे "यहूदा के
राजाओं के इतिहास" की पुस्तक में लिखे हैं।

योशिय्याह की मृत्यु

29योशिय्याह के समय मिस्र का राजा फिरौन नको
अश्शूर के राजा के विरुद्ध युद्ध करने परात नदी को
गया। राजा योशिय्याह नको से मिलने मगिद्दो गया।
फ़िरौन नको ने योशिय्याह को देख लिया और तब उसे
मार डाला। 30योशिय्याह के अधिकारियों ने उसके शरीर
को एक रथ में रखा और उसे मगिद्दो से यरूशलेम ले
गये। उन्होंने योशिय्याह को उसकी अपनी कब्र में
दफनाया।
तब साधारण लोगों ने योशिय्याह के पुत्र यहोआहाज
को लिया और उसका राज्याभिषेक कर दिया। उन्होंने
यहोआहाज को नया राजा बनाया।

यहोआहाज यहूदा का नया राजा बनता है

31यहोआहाज तेईस वर्ष का था, जब वह राजा बना।
उसने यरूशलेम में तीन महीने शासन किया। उसकी
माँ लिब्ना के यिर्मयाह की पुत्री हमूतल थी। 32यहोआहाज
ने वे काम किये जिन्हें यहोवा ने बुरा बताया था। यहोआहाज
ने वे ही सब काम किये जिन्हें उसके पूर्वजों ने किये थे।
33फ़िरौन नको ने यहोआहाज को हमात प्रदेश में
रिबला में कैद में रखा। अत: यहोआहाज यरूशलेम में
शासन नहीं कर सका। फ़िरौन नको ने यहूदा को सात
हजार पाँच सौ पौंड चाँदी और पचहत्तर पौंड सोना देने
को विवश किया।
34फ़िरौन नको ने योशिय्याह के पुत्र एल्याकीम को
नया राजा बनाया। एल्याकीम ने अपने पिता योशिय्याह
का स्थान लिया। फ़िरौन–नको ने एल्याकीम का नाम
बदलकर यहोयाकीम कर दिया और फ़िरौन–नको
यहोआहाज को मिस्र ले गया। यहोआहाज मिस्र में मरा।
35यहोयाकीम ने फ़िरौन को सोना और चाँदी दिया।
किन्तु यहोयाकीम ने साधारण जनता से कर वसूले और
उस धन का उपयोग फ़िरौन–नको को देने में किया।
अत: हर व्यक्ति ने चाँदी और सोने का अपने हिस्से का
भुगतान किया और राजा यहोयाकीम ने फिरौन को
वह धन दिया।
36यहोयाकीम जब राजा हुआ तो वह पच्चीस वर्ष का
था। उसने ग्यारह वर्ष तक यरूशलेम में राज्य किया।

उसकी माँ रुमा के अदायाह की पुत्री जबीदा थी। 37यहोयाकीम ने वे काम किये जिन्हें यहोवा ने बुरा बताया था। यहोयाकीम ने वे ही सब काम किये जो उसके पूर्वजों ने किये थे।

राजा नबूकदनेस्सर यहूदा आता है

24 यहोयाकीम के समय में बाबेल का राजा नबूकदनेस्सर यहूदा देश में आया। यहोयाकीम ने नबूकदनेस्सर की सेवा तीन वर्ष तक की। तब यहोयाकीम नबूकदनेस्सर के विरुद्ध हो गया और उसके शासन से स्वतन्त्र हो गया। 2यहोवा ने कसदियों, अरामियों, मोआबियों और अम्मोनियों के दलों को यहोयाकीम के विरुद्ध लड़ने के लिये भेजा। यहोवा ने उन दलों को यहूदा को नष्ट करने के लिये भेजा। यह वैसा ही हुआ जैसा यहोवा ने कहा था। यहोवा ने अपने सेवक नबियों का उपयोग वह कहने के लिये किया था।

3यहोवा ने उन घटनाओं को यहूदा के साथ घटित होने का आदेश दिया। इस प्रकार वह उन्हें अपनी दृष्टि से दूर करेगा। उसने यह उन पापों के कारण किया जो मनश्शे ने किये। 4यहोवा ने यह इसलिये किया कि मनश्शे ने बहुत से निरपराध व्यक्तियों को मार डाला। मनश्शे ने उनके खून से यरूशलेम को भर दिया था और यहोवा उन पापों को क्षमा नहीं कर सकता था।

5यहोयाकीम ने जो अन्य काम किये वे "यहूदा के राजाओं के इतिहास" की पुस्तक में लिखे हैं। यहोयाकीम मरा और अपने पूर्वजों के साथ दफनाया गया। यहोयाकीम का पुत्र यहोयाकीन उसके बाद नया राजा हुआ।

7 मिस्र का राजा मिस्र से और अधिक बाहर नहीं निकल सका, क्योंकि बाबेल के राजा ने मिस्र के नाले से परात नदी तक सारे देश पर जिस पर मिस्र के राजा का आधिपत्य था, अधिकार कर लिया था।

नबूकदनेस्सर यरूशलेम पर अधिकार करता है

8यहोयाकीन जब शासन करने लगा तब वह अट्ठारह वर्ष का था। उसने यरूशलेम में तीन महीने तक शासन किया। उसकी माँ यरूशलेम के एलनातान की पुत्री नहुश्ता थी। 9यहोयाकीन ने उन कामों को किया जिन्हें यहोवा ने बुरा बताया था। उसने वे ही सब काम किये जो उसके पिता ने किये थे।

10उस समय बाबेल के राजा नबूकदनेस्सर के अधिकारी यरूशलेम आए और उसे घेर लिया। 11तब बाबेल का राजा नबूकदनेस्सर नगर में आया। 12यहूदा का राजा यहोयाकीन बाबेल के राजा से मिलने बाहर आया। यहोयाकीन की माँ, उसके अधिकारी, प्रमुख और अन्य अधिकारी भी उसके साथ गये। तब बाबेल के राजा ने यहोयाकीन को बन्दी बना लिया। यह नबूकदनेस्सर के शासनकाल का आठवाँ वर्ष था।

13नबूकदनेस्सर ने यरूशलेम से यहोवा के मन्दिर का सारा खजाना और राजमहल का सारा खजाना ले लिया। नबूकदनेस्सर ने उन सभी स्वर्ण–पात्रों को टुकड़ों में काट डाला जिन्हें इस्राएल के राजा सुलैमान ने यहोवा के मन्दिर में रखा था। यह वैसा ही हुआ जैसा यहोवा ने कहा था।

14नबूकदनेस्सर ने यरूशलेम के सभी लोगों को बन्दी बनाया। उसने सभी प्रमुखों और अन्य धनी लोगों को बन्दी बना लिया। उसने दस हजार लोगों को पकड़ा और उन्हें बन्दी बनाया। नबूकदनेस्सर ने सभी कुशल मजदूरों और कारीगरों को ले लिया। कोई व्यक्ति, साधारण लोगों में सबसे गरीब के अतिरिक्त, नहीं छोड़ा गया। 15नबूकदनेस्सर, यहोयाकीन को बन्दी के रूप में बाबेल ले गया। नबूकदनेस्सर राजा की माँ, उसकी पत्नियों, अधिकारी और देश के प्रमुख लोगों को भी ले गया। नबूकदनेस्सर उन्हें यरूशलेम से बाबेल बन्दी के रुप में ले गया। 16बाबेल का राजा सारे सात हजार सैनिक और एक हजार कुशल मजदूर और कारीगर भी ले गया। ये सभी व्यक्ति प्रशिक्षित सैनिक थे और युद्ध में लड़ सकते थे। बाबेल का राजा उन्हें बन्दी के रूप में बाबेल ले गया।

राजा सिदकिय्याह

17बाबेल के राजा ने मत्तन्याह को नया राजा बनाया। मत्तन्याह यहोयाकीन का चाचा था। बाबेल के राजा ने मत्तन्याह का नाम बदलकर सिदकिय्याह रख दिया। 18सिदकिय्याह ने जब शासन करना आरम्भ किया तो वह इक्कीस वर्ष का था। उसने ग्यारह वर्ष यरूशलेम में शासन किया। उसकी माँ लिब्ना के यिर्मयाह की पुत्री हमूतल थी। सिदकिय्याह ने वे काम किये जिन्हें यहोवा ने बुरा बताया था। सिदकिय्याह ने वे ही सारे काम किये जो यहोयाकीम ने किये थे। 20यहोवा यरूशलेम और यहूदा पर इतना क्रोधित हुआ कि उसने उन्हें दूर फेंक दिया।

नबूकदनेस्सर, द्वारा सिदकिय्याह के शासन की समाप्ति

सिदकिय्याह ने बाबेल के राजा के विरुद्ध विद्रोह कर दिया और उसकी आज्ञा मानने से इन्कार कर दिया।

25 अत: बाबेल का राजा नबूकदनेस्सर अपनी सारी सेना के साथ यरूशलेम के विरुद्ध युद्ध करने आया। सिदकिय्याह के राज्य के नौवें वर्ष के दसवें महीने के दसवें दिन यह घटित हुआ। नबूकदनेस्सर ने यरूशलेम के चारों ओर डेरा डाला। उसने यह कार्य यरूशलेम के लोगों को बाहर से भीतर, और भीतर से बाहर आने जाने से रोकने के लिये किया। तब उन्होंने यरूशलेम के चारों ओर मिट्टी की दीवार खड़ी की।

2नबूकदनेस्सर की सेना यरूशलेम के चारों ओर
सिदकिय्याह के यहूदा में शासनकाल के ग्यारहवें वर्ष
तक बनी रही। 3नगर में भुखमरी की स्थिति बद से
बदतर होती जा रही थी। चौथे महीने के नौवें दिन
साधारण लोगों के लिये कुछ भी भोजन नहीं रह गया
था।

4नबूकदनेस्सर की सेना ने नगर प्राचीर में एक छेद
बनाया। उस रात को राजा सिदकिय्याह और उसके
सारे सैनिक भाग गए। वे राजा के बाग के सहारे दो
दीवारों के द्वार से बच निकले। बाबेल की सेना नगर के
चारों ओर थी। किन्तु सिदकिय्याह और उसकी सेना
मरुभूमि की ओर की सड़क पर भाग निकले। 5बाबेल
की सेना ने सिदकिय्याह का पीछा किया और उसे
यरीहो के पास पकड़ लिया। सिदकिय्याह की सारी सेना
भाग गई और उसे अकेला छोड़ दिया।

6बाबेल सिदकिय्याह को रिबला में बाबेल के राजा
के पास ले गये। बाबेल के राजा ने सिदकिय्याह को
दण्ड देने का निर्णय किया। 7उन्होंने सिदकिय्याह के
सामने उसके पुत्रों को मार डाला। तब उन्होंने सिदकिय्याह
की आँखे निकाल लीं। उन्होंने उसे जंजीर में जकड़ा
और उसे बाबेल ले गए।

यरूशलेम नष्ट कर दिया गया

8नबूकदनेस्सर के बाबेल के शासनकाल के उन्नीसवें
वर्ष के पाँचवें महीने के सातवें दिन नबूजरदान यरूशलेम
आया। नबूकदनेस्सर के अंगरक्षकों का नायक
नबूजरदान था। 9नबूजरदान ने यहोवा का मन्दिर और
राजमहल जला डाला। नबूजरदान ने यरूशलेम के सभी
घरों को भी जला डाला। उसने बड़ी से बड़ी इमारतों को
भी नष्ट किया।

10तब नबूजरदान के साथ जो बाबेल की सेना थी
उसने यरूशलेम के चारों ओर की दीवारों को गिरा
दिया 11और नबूजरदान ने उन सभी लोगों को पकड़ा
जो तब तक नगर में बचे रह गए थे। नबूजरदान ने सभी
लोगों को बन्दी बना लिया और उन्हें भी जिन्होंने
आत्मसमपर्ण करने की कोशिश की। 12नबूजरदान ने
केवल साधारण व्यक्तियों में सबसे गरीब लोगों को वहाँ
रहने दिया। उसने उन गरीब लोगों को वहाँ अंगूर और
अन्य फसलों की देखभाल के लिये रहने दिया।

13बाबेल के सैनिकों ने यहोवा के मन्दिर के काँसे
की वस्तुओं के टुकड़े कर डाले। उन्होंने काँसे के
स्तम्भों, काँसे की गाड़ी को और काँसे के विशाल
सरोवर के भी टुकड़े कर डाले, तब बाबेल के सैनिक
उन काँसे के टुकड़ों को बाबेल ले गए। 14कसदियों ने
बर्तन, बेलचे, दीप–झारु चम्मच और काँसे के बर्तन जो
यहोवा के मन्दिर में काम आती थी, को भी ले लिया।
15नबूजरदान ने सभी कढ़ाहियों और प्यालों को ले
लिया। उसने जो सोने के बने थे उन्हें सोने केलिये और
जो चाँदी के बने थे उन्हें चाँदी के लिये लिया। 16-17जो
चीज़ें उसने लीं उनकी सूची यह है:

दो काँसे के स्तम्भ, एक हौज और वह गाड़ी जिसे
सुलैमान ने यहोवा के मन्दिर के लिये बनाया था।
इन चीजों में लगा काँसा इतना भारी था कि उसे
तोला नहीं जा सकता था। हर एक स्तम्भ लगभग
सत्ताईस फुट ऊँचा था। स्तम्भों के शीर्ष काँसे के
बने थे। हर एक शीर्ष साढ़े चार फुट ऊँचा था। हर
एक शीर्ष पर जाल और अनार का नमूना बना था।
इसका सब कुछ काँसे का बना था। दोनों स्तम्भों
पर एक ही प्रकार की आकृतियाँ थीं।

बन्दी बनाए गए यहूदा के लोग

18तब नबूजरदान ने मन्दिर से महायाजक सरायाह,
द्वितीय याजक सपन्याह और तीन द्वार रक्षकों को लिया।
19नगर में नबूजरदान ने

एक अधिकारी को लिया। वह सेना का सेनापति
था।

नबूजरदान ने राजा के पाँच सलाहकारों को भी
लिया जो नगर में पाए गए और उसने सेनापति के
सचिव को लिया।

सेनापति का सचिव वह व्यक्ति था जो साधारण लोगों
की गणना करता था और उनमें से कुछ को सैनिक
के रूप में चुनता था।

नबूजरदान ने साठ अन्य लोगों को भी लिया जो
नगर में पाए गए।

20-21तब नबूजरदान इन सभी लोगों को रिबला में
बाबेल के राजा के पास ले गया। बाबेल के राजा ने
हमात देश के रिबला में इन्हें मार डाला। इस प्रकार
यहूदा के लोगों को कैदी बनाकर उन्हें, उनके देश से
निर्वासित किया गया।

नबूकदनेस्सर गदल्याह को यहूदा का शासक बनाता है

22बाबेल के राजा नबूकदनेस्सर ने यहूदा देश में कुछ
लोगों को छोड़ा। उसने अहीकाम के पुत्र गदल्याह को
यहूदा के उन लोगों का शासक बनाया। अहीकाम
शापान का पुत्र था।

23जब सेना के सभी सेनापतियों और आदमियों ने
सुना कि बाबेल के राजा ने गदल्याह को शासक बनाया
है तो वे गदल्याह के पास मिस्पा में आए। ये सेना के
सेनापति नतन्याह का पुत्र इश्माएल, कारेहू का पुत्र
योहानान, नतोपाई तन्हूमेत का पुत्र सरायाह तथा माकाई
का पुत्र याजन्याह थे। 24तब गदल्याह ने इन सेना के
सेनापतियों और उनके आदमियों को वचन दिया।

गदल्याह ने उनसे कहा, “बाबेल के अधिकारियों से डरो नहीं। इस देश में रहो और बाबेल के राजा की सेवा करो। तब तुम्हारे साथ सब कुछ ठीक रहेगा।”

25किन्तु सातवें महीने राजा के परिवार का एलीशामा का पौत्र व नतन्याह का पुत्र इश्माएल दस पुरुषों के साथ आया और गदल्याह को मार डाला। इश्माएल और उसके दस आदमियों ने मिस्पा में गदल्याह के साथ जो यहूदी और कसदी थे, उन्हें भी मार डाला।
26तब सभी लोग सबसे कम महत्वपूर्ण और सबसे अधिक महत्वपूर्ण तथा सेना के नायक मिस्र को भाग गए। वे इसलिये भागे कि वे कसदियों से भयभीत थे।

27बाद में राजा एवील्मरोदक यहूदा का राजा बना। उसने यहोयाकीन को बन्दीगृह से निकलने दिया। यह यहूदा के राजा यहोयाकीन के बन्दी बनाये जाने के सैंतीसवें वर्ष में हुआ। यह एवील्मरोदक के शासन आरम्भ करने के बारहवें महीने के सत्ताईसवें दिन हुआ।
28एवीलमेरादक ने यहोयाकीन से दयापूर्वक बातें कीं। एवील्मरोदक ने यहोयाकीन को बाबेल में रहने वाले उसके सभी साथी राजाओं से अधिक उच्च स्थान प्रदान किया।
29एवील्मरोदक ने यहोयाकीन के बन्दीगृह के वस्त्रों को पहनना बन्द करवाया। यहोयाकीन ने एवील्मरोदक के साथ एक ही मेज पर खाना खाया। उसने अपने शेष जीवन में हर एक दिन ऐसा ही किया।
30इस प्रकार राजा एवील्मरोदक ने यहोयाकीन को जीवन पर्यन्त नियमित रूप से प्रतिदिन का भोजन प्रदान किया।